भोजपुरी कथा–कहानी

वार्षिकांक – 1999

सम्पादक

प्रो० बजकिशोर

●

चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह

क

हा

नी

विशेषांक

भोजपुरी साहित्य संस्थान

महेन्द्रू, पटना - 800006

भोजपुरी कथा-कहानी

वार्षिकांक - 1999

चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह कहानी विशेषांक

संपादकः
प्रो० ब्रजकिशोर

●

सह-संपादक :
डॉ० अनिल कुमार 'आंजनेय'
कृष्णानन्द कृष्ण
राजवल्लभ सिंह
दीप्ति, एम० ए०
ई० रंजन कुमार

●

प्रबन्ध-संपादक
रूपश्री
सुप्रिया तृप्ति, एम०ए०
रूचिका रंजन, एम०ए०

●

अक्षर संयोजन
जे० एम० कम्प्यूटर्स
प० लोहानीपुर, पटना-3

भोजपुरी कथा-कहानी 1978 से निकलल शुरू भइल बाकिर-1984 का बाद ई नियमित रूप से मासिक रूप में ना निकल सकल । जब-तब कुछेक अंक छपल बाकिर 1995 से ई कवनो एगो कहानीकार पर केन्द्रित होके विशेषांक का रूप में निकल रहल बा । एह में ओह कथाकार के कथा-साहित्य पर कुछ आलेख रहेला, आ शेष भाग में चुनल-बीछल दस-बारह गो कहानी । बाद में ऊ सामग्री पुस्तक रूप में भी प्रकाशित कइल जाला । एह तरह से कृष्णानन्द कृष्ण आ सूर्यदेव पाठक 'पराग' पर केन्द्रित विशेषांक निकल चुकल बा जवना के सामग्री 'गाँव बहुते गरम बा' आ 'प्रश्न चिन्ह' का रूप में सोझा आइल । ई तीसरका विशेषांक चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह पर केन्द्रित बा । इनका एह कहानियन के पुस्तकाकार रूप 'बेगुनाह' नाँव से जल्दिए निकालल जाई । 2000 ई० में 'भोजपुरी कथा कहानी' के अइसन दूगो विशेषांक निकाले के योजना बा । एह में शामिल होखे खातिर नेंवता बा ।

प्रकाशकः
भोजपुरी साहित्य संस्थान
श्रीभवन, महम्मदपुर लेन, महेन्द्रू पटना-800006

www.bhojpurisahityangan.com

सांसद लोग आ भोजपुरी

तेरहवीं लोकसभा के कुल 528 सदस्य लोग 17 भाषा में शपथ लीहल। सातगो सांसद अबहीं शपथ लेवे खातिर बाकी रहले । विभिन्न भाषा में शपथ लेवे वाला लोगन के संख्या बा - हिन्दी 221, अँग्रजी 79, तेलगू 24, कन्नड़ 19, पंजाबी 14, मलयालम 10, उर्दू 10, गुजराती 9, उड़िया 8, असमिया 5, मैथिली 2, मणिपुरी 1, नेपाली 1 । मैथिली में शपथ लेवेवाला कीर्ति आजाद आ हुकुमदेव नारायण यादव के बिहार के जनता किओर से हार्दिक बधाई दिहल जरुरी बुझात बा । एह लोग में अपना माटी आ भाषा का प्रति जे अनुराग बा, ओकर सहराहना होखें के चाहीं । अपना क्षेत्र के जनता से जुड़े खातिर, ओकर सेवा करे खातिर, ओकरा समस्या के गहिराई से समुझे-बूझे खातिर ओह क्षेत्र के भाषा के जानल, समुझल आ ओकर आदर कइल जरूरी बा । अचरज एह बात के बा कि संसद में पूरा भोजपुरी क्षेत्र से चुन के गइल कई दर्जन सांसद लोग में से केहू माई के लाल अइसन ना निकलल जे भोजपुरी में शपथ लित। अपना के दबंग बूझे वाला, संसद में जोरदार भाषण झाड़े वाला, नवहा से लेके पूर्व प्रधानमंत्री तक सभे बहरा में भोजपुरिहा समाज में भोजपुरी बोल के वाहवाही लूटेला , एकरा विकास खातिर कुछ करे के वादा करेला बाकिर संसद का भीतर ढुकते सब भूला जाला । कहे खातिर संकीर्णता से ऊपर उठके आपन राष्ट्रीय छवि बनावे खातिर ई सभ लोग अपना मातृभाषा, अपना माटी, अपना क्षेत्र के जनता के भावना के जवन घोर उपेक्षा आ अनादर कर रहल बा- ओकरे नतीजा ह पूरा भोजपुरी क्षेत्र में फइलल घोर दरिद्रता, अशिक्षा आ रूढ़िवादिता । अपना माई से मिलल बोली के जे अनादर करी ऊ भला अपना माई के कइसे मान कर सकत बा चाहे ऊ जनम देवे वाली महतारी होखस भा भारत माता होखस, धरती माता होखस ।

बहाना आ तर्क केहू दे सकत बा बाकिर ई सवाल भावना के बा । अस्मिता के उपेक्षा के फल सउँसे क्षेत्र के जनता का भोगे के पड़त बा । कुछऊ अइसन नइखे भइल एह क्षेत्र में जवना के हुलस के गनावल जा सके । सड़क, बिजली, पीये के पानी, स्वास्थ्य, शिक्षा, उद्योग कवनो क्षेत्र में कुछऊ उल्लेखनीय नइखे हो सकल । संसद आ विधानसभा तक पहुँचे वाला लोग पटना, लखनऊ, दिल्ली पहुँचते सब कुछ भुला जाला । खाली इयाद रह जाला आपन परिवार, आपन रिश्ता-नाता के लोग, आ बहुत उदार भइला पर मुट्ठी भर अपना जाति-बिरादरी के ऊ नवही लोग जे चुनाव में वोट के व्यवस्था करेला । कुल जनसंख्या के आधा मतदाता होलन, जवना के आधा लोग वोट डालेला । एकर 30 से 50 प्रतिशत पावे वाला जीत के सेहरा पहिनेला । मतलब कि क्षेत्र के कुल जनसंख्यां के 5 से 10 प्रतिशत के प्रतिनिधित्व ई लोग करेला आ एहू 5 से 10 प्रतिशत के भावना के अनादर लगातार होत रहेला । एही के कहल जाता कि देश में लोकतंत्र के जड़ पोखता हो रहल बा । एह प्रतिशत में फर्जी आ बूथ-लूट के वोटो शामिल बा । धनबल आ बाहुबल के कतना जोर आज का चुनाव में बा, ई केहू से छिपल नइखे । कहे के मतलब साफ बा

www.bhojpurisahityangan.com

चुनाव-प्रक्रिया के खामियन के लाभ उठा के जनप्रतिनिधि का रूप में संसद आ विधानसभा तक पहुँचे वाला लोग का लोकतंत्र के लोक के अस्मिता के कबहीं ना गुदानी? लोक के अस्मिता ओकरा रहन-सहन, रीति-रिवाज, भाषा आ जीवन-स्तर का रूप में उजागर होला। तब फेर एह सभ के घोर उपेक्षा करे वाला सांसद आ विधानसभासद लोग कवना मुँह से अपना के लोकसेवक कहेला !

भोजपुरी भाषा, साहित्य आ संस्कृति के विकास आ संरक्षण में लागल बुद्धिजीवियन का संसद में एकहू सांसद के भोजपुरी में शपथ ना लिहला से बहुत ठेस पहुँचल बा, मानसिक क्लेश आ निराशा भइल बा। अपना भावना के सांसद लोग आ राजनीतिक दल के महंथ लोगन तक पहुँचावल जरूरी बूझ के अतना कहे के पड़ल। मातृभाषा के लुलुआवत रहे वाला के आवे वाला इतिहास कबो क्षमा ना करी।

– दीप्ति

भोजपुरी साहित्य के प्रचार-प्रसार

भोजपुरी के रचनाकार लोग अपना गाढ़ कमाई से धन लगा के किताब छपवावत बा बाकिर रचना आम लोग तक पहुँच नइखे पावत। कवनो संस्था या संगठन एह दिसाईं कवनो प्रयास करे के उतजोगो नइखे करत। एकर नतीजा बा कि आम लोगन का एकर कवनो जानकारी नइखे हो पावत कि भोजपुरी साहित्य के दशा-दिशा का बा। ओकर रूचि एह तरफ नइखे जाग सकल। पढ़लो-लिखल समाज का एकर कवनो जानकारी नइखे हो पावत। साल-दू-साल पर एक अधिवेशन कर लेवे का अलावा कवनो संगठन आ सम्मेलन जन-जागरण का तरफ कदम नइखे बढ़ावत। आपुसे में वर्चस्व आ व्यक्तित्व के टकराहट रचनाकारो लोग के सोच के पंगु बना के रख देले बा। एह तरफ सबका मिल-बइठ के विचार करे के चाहीं आ परस्पर सहयोग का आधार पर भोजपुरी किताबन आ पत्रिकन के बिक्री आ प्रचार के काम हाथ में लेवे के चाहीं। जिला मुख्यालय में कवनो एगो दूकान या स्थान त बने जहवाँ से लोग भोजपुरी साहित्य खरीद सके। बिहार में त पुस्तकालय आन्दोलन मरले बराबर बा। प्रमुख नगरन में अइसन पुस्तकालय होखे के चाहीं। शुरूआती दौर में एह पुस्तकालयन के कुछ किताबन के सेट भेंट का रूप में उपलब्ध करावल जा सकत बा। एह से भोजपुरी साहित्य पर शोध का बढ़ावा मिली। आन्दोलन चला के हजार-डेढ़ हजार समर्थ लोगन के तइयार कइल जा सकता बा जे साल में किताबन के खरीद के पढ़ सके। एह खातिर किताब के दामों हिसाब से राखे के पड़ी। सरकारो पर ई दबाव बनावल जरूरी बा कि ऊ पुस्तकालयन खातिर भोजपुरी किताबन के खरीद करो। कविता-कहानी का अलावा भी अइसन साहित्य आइल जरूरी बा जवन गाँव के लोगन के पेशा आ हालत में सुधार लावे खातिर उपयोगी साबित होखे। भोजपुरी क्षेत्र आ संस्कृति में पढ़े के काम, आपन ज्ञान बढ़ावे के काम अबहीं आदत नइखे बन पावल। ई आदत डाले आ डलवावे के काम भोजपुरी के लेखके लोग का हाथ में लेवे के पड़ी। ना त अइसहीं पत्र-पत्रि न के दू-चार अंक निकल के रह जाई आ किताबन के दीमक चाटिहें या मुफुते में बाँट के लोग के आदत बिगाड़त रहे के पड़ी।

– रंजन कुमार

www.bhojpurisahityangan.com

संस्मरण

"जब हमार जीवन सार्थक हो गइल"

❑ *फतेह बहादुर सिंह*

ई एक संयोग हव या पिछले जनम क पुण्य बाय कि हमें धरती-पुत्र विवेकी राय क एक रचना पढ़य के मिल गइल जेकर नाँव "बबूल" बाय । उकरा पढ़त ही हमें गाँव क हमरे बचपन क पूरा चित्र समने आई गयल । तब से हम उनकर लगभग ज्यादातर रचना पढ़ी नवलीं । जब उनकर भोजपुरी रचना "गंगा यमुना सरस्वती", "राम झरोखा बइठि के" और "अमंगलहारी" पढ़ली तब त हमार आँखे खुलल रहि गइल । ई जानिके कि भोजपुरी में औरू पत्रिका एवं किताब निकलत बाटिन हमें बड़ी खुशी भईल । अब हम अपने गाँव-जवार क बोली जरूर पढ़ब जवना के सुनय व देखय बदे कान औरु आँख तरसि गयल रहनन । यह अवसर पर तुलसी जी क उ लाइन याद आवत बाय कि "अबलो नसानी अब न नसैंहो",।

> साहित्य-मनीषि, गाँव के दुख-दर्द के उद्‌गाता, हिन्दी-भोजपुरी के महायशस्वी रचनाकार, कथा-सम्राट डॉ॰ विवेकी राय जी के सृजन-यज्ञ पचास साल से निरन्तर जारी बा । 19 नवम्बर के उहाँ के जन्म-दिवस का अवसर पर भोजपुरी-जगत का तरफ से समस्त मंगलकामना का साथ आजमगढ़ के भोजपुरी में ई संस्मरण प्रस्तुत बा ।
>
> *— सम्पादक*

त हम बात करत रहली ह धरती-पुत्र क । एक दिन मन हुलसय लगल कि ऊ धरती-पुत्र क दर्शन करय के चाही । कहल गयल बाय कि "जहाँ चाह उहाँ राह" । हम मुबई रहिला । इहाँ आदमी मशीन से भी तेज बाय । केहू के फुरसत ना बाय कि अपने गाँव के बारे में सोंचय । सात बरिस बाद वहीं धरती-पुत्र क दर्शन करय बदे गाँव गइली ।

गाँव में लगन के दिन में जवन दुर्गत होले उ हमार पूरा भईल । देवगाँव से चन्दवक पहुँचे में दुई घंटा त चन्दवक से औड़िहार पहुँचे में अढ़ाई घंटा। "सावन से भादों काहे दूबर" । ग्यारह बजे के करीब औड़िहार में गंगा मइया क दरसन कइली । फिर औड़िहार से सैदपुर रिक्शा से गइली । वहाँ पहुँचले पर एक भूसा जैसन भरल बस गाजीपुर के लिए मिलल । १२ मई ९९ बे क लगन बहुत जोरदार रहल । सब गाडी बिआह-बरात में लगल रहल । सैदपुर से गाजीपुर के बीच में धरती-पुत्र क कुल रचनावन क पात्र हम रस्ते में देखइनैं। ठीक दुपहरी में बड़ी बाग की तरफ चलली । गरम हवा क आँच लगत रहल, गोड़ जरत रहल और बचपन क ऊ गीत याद अवत रहल कि

"ठीक दुपहरिया में गोड़वा जरेला राम............"

जब सड़क पर विवेकी राय मार्ग पढ़ली तब आँख जुड़ाय गईल और आधा गर्मी खतम होय गइल । पाँच मिनट में "गँवई गन्ध गुलाब" के समने पहुँचाले त मिलय क समय लिखल रहल चार से छः । अब का करीं । मरत का न करत । दरवाजा दुई बार खटखटउली । दरवाजा धरती-पुत्र विवेकी राय खोलनय । वही समय सरस्वती-पुत्र क दर्शन हम वैसे कइली जैसे हनुमान राम क दर्शन पहली बार कइले रहल होइहैं । हमरे मुख से कुछ निकलबय ना कयल । तुलसी बाबा क चौपाई होय गईल "गिरा अनयन नयन बिनु बानीं"।

पाँव छुअली, आशीर्वाद पवली, जहाँ "आधुनिक प्रेमचंद" लिखत रहनय वहाँ

www.bhojpurisahityangan.com

बटठय के कहनय । हमार गर्मी से बेहाल-हाल एक घटा बाद हरियर भईल । लिखब त बद कइके तत्काले ऊ हमरे सत्कार मे लाग गइनय । ऊ सत्कार कइनय कि ओकरा लिखब असभव बाय ।

जब हम सरस्वती-पुत्र क काम व पुरस्कार देखली तब त हमै कहै और पूछै बदे कुछ बचबय न कयल । सहज स्वभाव, निश्छल हँसी, हम भुलाय ना पावत बाटी । हम उनके समने बइठि के आज अइसन महसूस करत बाटी कि हमरे समने भगवान बइठल रहनन । तीन-चार घटा अराम कइके साँझ क कुछ उनकर छपल समीक्षा क जेराक्स करवली, तब तक कुछ पुस्तक व लेख छाँट के हमरे बदे रखले रहनन ऊ देहनय । कुछ हमरे गुरुदेव त्रिभुवन राय बदे दिहनय । कुछ पत्रिका और भोजपुरी पत्रिका पढ़ली । कहाँ-कहाँ से उनकर किताब मिली पता पूछली ! उ० प्र० क शिक्षा काहे ईतना गिरल बाय ? का यहि कुछ सालन मे सुधार भयल बाय ऊ पूछली । हम अपने केन्द्रीय विद्यालय मुबई क बात बतउली । हमरे विद्यालय क स्तर का बाय ? केतना रेजल्ट खातिर मेहनत करय के पडाला ? का कारण बाय कि हमने अपने काम से खुश बाटी ?

सरस्वती-पुत्र विवेकी राय अपने लेख में एक जगह लिखले बाटन कि हमार पूरा जीवन विधाता क व्यंग्य बाय । हम उनसे बडे विनम्रता से पूछली कि इतना काम, इतना पुरस्कार आपके भगवान के कृपा से मिलल बाय, तबो आप कहल जाला..........सुनतय तत्काले बड़े आत्मीयता एवं नम्रता से कहनय कि सही कहन बाटा ई सब उनही क कृपा बाय नहीं त हमसे इतना काम कैसे होत ? हमे खुद ही अचरज होला कि ई सब काम कैसे होय गईल ?

जीवन क सहारा बेटवा व माई क मरब विवेकी राय जी के ''नीलकठ'' बनाय देहले बाय । नीलकंठ यह बदे कहत बाटी कि ऊ पूर्वी उ० प्र० क हर गाँवन क विष अपने रचनावन में पियले और पचवले बाटन । अपने वज्रघात के परे राखिके ऊ जवन समाज-सेवा करत बाटन ऊ कहूँ देखै के ना मिली।

हमनें क बात चलत रहल तबय बिजली कट गईल । ऊ हमरे खातिर बेचैन होई उठने । हमसे कहनय कि बिजली कटले पर गाजीपुर नरक होय जाला । तबय हमैं उनकर ''बल्वाय नम:'' वाली रचना याद आईल । कहले पर खुब खुलल हँसी हसनय और कहनय कि जउने में बट्टी कुक्कर उठाय ले गइनय ।

उनकर एक प्रसिद्ध रचना ''मगल भवन'' पर जब पूछली कि ऊ रचना मे जवन मास्टर जी बाटै ऊ त हमैं आपय नजर आवेला । त कहनय कि कुछ वास्तविकता बाय कुछ कल्पना बाय फिर ओकरे आगे क रचना ''अमगलहारी'' देहनय जवन भोजपुरी में लिखल बाय । बिजली तब तक आय गईल । हमैं खियाअ के हमरे जइसन तुच्छ क मसहरी लगवनय । पानी पिये बदे रखनय । सुबह उठि के जब हम कहली कि गुरुदेव अब जाये क आज्ञा चाहब त कहनय कि बिना कुछ खइले कैसे जाबा ? खाना खियाअ के हमय बहुत हिदायत के साथ दूर तक छोड़य अइनय । पाँव छूवली, दूर तक आय गइली तब तक वहीं खड़ा रहनय ।

ऊ चेहरा, वेश, सादगी क दर्शन हमरे जीवन में सबसे बड़ा तीरथ रहल। उनकर दर्शन पाय के हम मोक्ष जियतय पाय गइली । हम त चाहब कि भगवान अइसन महापुरुष के सौ बरस से ज्यादा क उमर दे । हम हमार परिवार उन्है यह पत्र के माध्यम से लाख बार प्रणाम कइके उनकर आर्शीवाद चाहत बाटी ।

केन्द्रीय विद्यालय, कोल्वाडा, सी० जी० एस० कॉलोनी,
एँटा हिल, मुम्बई - 400037

www.bhojpurisahityangan.com

चौधरीजी के कहानियन पर

बात - विचार

1. चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह के कहानी : एगो विश्लेषण
— प्रो॰ ब्रजकिशोर ...5

2. 'सही मँजिल' : हमरा नजर में
— कृष्णानन्द कृष्ण ...12

3. लोक जीवन के कहानीकार
— भुवनेश्वर सिंह ...12

4. सही मँजिल — रूपश्री ...13

5. 'सही मँजिल : भोजपुरी कथा के कोहनूर तलाशे के एगो प्रयास
— अरूण अलबेला ...14

6. सही मँजिल : एगो सफल कहानी संग्रह — अशेष ...18

7. मत-सम्मत — नागेन्द्र प्रसाद सिंह, प्रो॰ ब्रजकिशोर, बरमेश्वर सिंह स्व॰ गणेश चौबे, श्रीकान्त सिंह, डॉ॰ लक्ष्मीशंकर [illegible], भुवनेश्वर सिंह, रवि, विजयशंकर चौबे रामनाथ पाण्डेय, हरिश्चन्द्र विद्यालंकार, लाखो देवी श्रीराम सिंह 'उदय', कृष्णानन्द कृष्ण, रामलखन विद्यार्थी, भोला प्रसाद 'आग्नेय', डॉ॰ लक्ष्मीशंकर त्रिवेदी, रघुनाथ प्रसाद, जनार्दन पाडे 'विप्र', स्वामी फन्दोतीर्णानन्द पुरी। ...20

8. चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह के प्रकाशित कहानियन के सूची :
— रूचिका रंजन ...23

●

www.bhojpurisahityangan.com

अनुक्रम

क्रम संख्या	कहानी	पृष्ठ
1.	पागल	29
2.	दईत	32
3.	सवाल	35
4.	दहशत भरल सन्नाटा	41
5.	बेगुनाह	44
6.	पहचान	50
7.	एक बार फेर	53
8.	चुनाव	56
9.	हम ना मानब	60
10.	मंथरा	64
11.	सोना के कंगना	69
12.	खेल्ला खतम	74
13.	अंदर से बाहर	77
14.	ठेस	88
15.	उत्प्रेरक	96
16.	कहत ना रहीं	105
17.	चुगली	110
18.	मुखौटा वाला	116

www.bhojpurisahityangan.com

चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह के कहानी : एगो विश्लेषण

–प्रो० ब्रजकिशोर

आज से लगभग एकावन बरिस पहिले 1948 ई० (जेठ सुदी 2005 वि० सं०) में अवध बिहारी सुमन (अब दण्डिस्वामी विमलानन्द सरस्वती) जी के लिखल दस गो कहानियन के संग्रह 'जेहल कऽ सनदि' प्रकाशित भइल जवना के दूसरका संस्करण सावन सुदी पुरनवासी 2055 वि. स. में छपल ह। एह से जे भोजपुरी कहानी के यात्रा शुरू भइल, ऊ लगातार चलत रहल बा । पहिलके डेग से गाँव के यथार्थ के अपना कथ्य के जमीन बना के भोजपुरी कहानी चलल शुरू कइलस आ अपना माटी के आदर्शरस ग्रहण करत आज ओकरा लगे ढाई-तीन सौ कहानीकारन के चार हजार से अधिका प्रकाशित कहानियन के भंडार बा । भोजपुरी कहानी के विषय-वस्तु खाली गाँवे नइखे बलुक कस्बा, शहर आ महानगर के जिनगी भी एकरा में समेटा रहल बा । भोजपुरी क्षेत्र के लोग जीविका कमाए खातिर देश का कोना-कोना में पसर गइल बा आ ओजवाँ हर तरह के जहालत से जूझत जिनगी आ परिवार के जुआ कान्ह पर धइले खींचे के कोसिस कर रहल बा । देश-विदेश के कवनो घटना आ समस्या भोजपुरी मन के लगातार झकोर रहल बा, एह से भोजपुरी कहानियो पंजाब-कश्मीर-असम के आतंकवाद आ अपना भीतरो उपजल उग्रवाद के सहेजे-बटोरे में पीछे नइखे रह गइल । अपना अकूत गरीबी, दरिद्रता, अशिक्षा आ पारिवारिक बिखराव के पीड़ा भोजपुरी समाज झेल रहल बा । गाँव ओतना सहज-सरल नइखे रह गहल जतना पचास-साठ साल पहिले रहे । इहवों राजनीति आ अर्थतंत्र के मार पड़ रहल बा । एह सभी जटिलता के अपना में सहेज-बटोर के भोजपुरी कहानी आगा बढ़ रहल बा आ आज समय आ गइल बा कि एकरा दशा-दिशा पर खुलल दिमाग से विचार कइल जाय ।

भोजपुरी कहानी के बढ़न्ती में लगातार लागल रहे वाला लोगन में चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह एगो अइसन नाँव बा जे 'भोजपुरी कहानियाँ' के शुरुआती दौर से छपल शुरु भइल आ आज ले ओही तेज गति से कहानी के भंडार भर रहल बा । आज कहानी के कवनो भोजपुरी पत्रिका निकले ओकरा भीतर चौधरी जी बिरजले लउक जइहें । अब तक इनकर 88-90 गो कहानी पत्र-पत्रिकन में भा किताबन में छप चुकल बा, भा आकाशवाणी (पटना) से प्रसारित हो चुकल बा । चौधरी जी के दूगो कहानी संग्रह पहिले आ चुकल बा-'बड़प्पन' आ 'सही मंजिल' । तीसरका संग्रह 'बेगुनाह' में कुल अठारह गो कहानी बा , जे 'भोजपुरी कथा कहानी' के विशेषांक में छपला का बाद पुस्तकाकार प्रकाशित हो रहल बा । अनेक कहानीकारन के समिलात कहानी संग्रहनो के संख्या अब एक दर्जन से ढेर बा । अधिकांश में चौधरी जी के कहानी शामिल बा । गीत-गजल का बाद कहानी चौधरी के प्रिय विधा रहल बा । पैंतीस-छत्तीस साल से लगातार लिखत रहला से एह बीच में भोजपुरी कहानी के विकास में जे अलग-अलग मोड़ आइल, ओकनी के चिन्हासी हो सकेला कि चौधरी जी के कहानियन में मिल जाय ।

भोजपुरी कहानी के शिल्प, शैली, कथा के कवनो सैद्धान्तिक विवेचन कइल या कवनो निर्धारित कसौटी पर कस-परख के चौधरी जी के कहानियन पर विस्तार से विचार कइल एह आलेख के उद्देश्य नइखे आ ना समकालीन भोजपुरी कहानी के

www.bhojpurisahityangan.com

प्रवृत्तियन से चौधरी जी के लेखन कहाँ ले मेल खात बा, इहो हिगरावल हमार मकसद बा । एजवाँ हम चौधरी के कुछ खासियत भर रेखांकित करे के चाहत बानी जवन उनका अधिकांश कहानियन में लउकेला आ 'बेगुनाह' के कहानियन पर थोड़की-सा चर्चा भर करे के रउवा से इजाजत चाहत बानीं ।

चौधरी जी के सबसे बड़ खासियत बा कहानियन में आइल-कथनोपकथन भा बतकही ।

कहानी के प्रमुख तत्त्वन में कथावस्तु, चरित्रचित्रण, कथनोपकथन, देश काल आ परिवेश, भाषा, शैली, भा कथ्य आ उद्देश्य गनल जाला । कथनोपकथन कहानी में जान डालेला आ कथानक के गति देला । आमतौर पर मानल गइल बा कि कहानी में दू पात्रन का बीच बातचीत पात्रोचित भाषा आ तेवर में होखे के चाहीं । बहुत लमहर कथन से बँचे के चाहीं । चौधरी जी के कहानियन के 'बतकही' कहल जा सकेला काहें कि हरेक कहानी के विकास एही का जरिये होत बा । भोजपुरिहा जब बतियाला त ओकर तेवर अजीब तेज से दप-दप करेला । ओह में हर तरह के चाल, भाव आ अर्थ छिपल रहेला । ऊ बहुत कम शब्द में बहुत ढेर बात कह देला। ओकर जवाब-सवाल तिलमिला देवे वाला होला । जब ऊ मूड में होला त ओकरा बात के जवाब देवे में केहू का पसेना छूट जाई । ई कुल्हि विशेषता चौधरी जी के पात्रन का बतकही में बा । छोट-से छोट सवाल, आ ओकर ओइसनके मुँहतोड़ सटीक जवाब । जवना कहानी में कवनो पात्र कवनो घटना के या आपबीती सुना रहल बा, उहाँ कहीं-कहीं कथनोपकथन काफी लमहरो हो गइल बा । कई जगहा त ओकर बात दू या तीन पाराग्राफ ले चल जात बा । बतकही के भाषा ठेठ आ बोलचाल के बा आ ओह में मुहावरन के प्रयोग छुट के भइल बा । ई बतकही के शैली चौधरी जी का कहानियन के खास पहिचान हो गइल बा । एकरे बल पर कथानक के बहाव आ फइलाव होत बा । कहल जा सकेला कि बतकही के इहे खास अन्दाज चौधरी जी के कहानियन के जान बा आ एही अर्थ में एह कहानियन के 'बतकही' कहे में कवनो हरज नइखे बुझात ।

चौधरी जी के कहानियन के दोसर बड़ खासियत बा कहानीकार के खुदे कहानी आ ओकरा कथानक में लिप्त भइल । कुछेक कहानियन के छोड़के अधिकांश में कहानीकार अपनहूँ पात्र बन गइल बा । कुछ जगह त ऊ खुदे प्रमुख पात्र बा । 'बड़प्पन' आ 'सही मंजिल' में संकलित कहानियनों में कहानीकार के संलग्नता भरपूर बा । कहानी का शिल्प के दृष्टि से नीमन ई मानल गइल बा कि कहानीकार बिल्कुल तटस्थ रहे । इहाँ तक कि ऊ अपना के ना त कवनो पात्र पर आरोपित करे आ ना ई बुझाय कि ऊ अपना बात के कवनो पात्र का मुँह में अँगुरी डाल के बोलवा रहल बा । एह तरह से चौधरी जी कहानी के ओह ढाँचा के तूड़ देले बाड़े जवना में कहानीकार के तटस्थता के आदर्श मानल गइल बा । चौधरी जी जे आपन साँचा बनवले बाड़न ओह में कहानीकार अपनहूँ पात्रन का जवरे उठत-बइठत, बोलत-बतिआवत आ कथा-घटना के जीअत-भोगत बा । राह-पेड़ा चलत, बस भा रेल से आवत-जात, अपना गाँव-जवार के लोग से लागत-बाझत चौधरी जी का जे घटनापरक कथासूत्र भेंटात बा ओकरा के ऊ सहज ढंग से कहानी का रूप में पाठक का सोझा राख देले बाड़न । एह से कथानक के विश्वसनीयता त जरूर बढ़ जात बा बाकिर शिल्प आ तकनीक का दृष्टि से कहानी संस्मरणात्मक रिपोर्ताज का नगीचा पहुँच जाति बा । जहवाँ कहानीकार के आपन संलग्नता नइखे उहवाँ शिल्पगत कसावट अलग बा जइसे 'चुनाव' में ।

एह कहानीकार के तीसर खासियत बा कि अधिकांश कहानियन में कथ्य, संदेश, उद्देश्य भा निष्कर्ष जे कहीं, ओकरा के कहानीकार कहानी का अन्त में बिना

www.bhojpurisahityangan.com

लाग-लपेट के सोझे रख देत बा । एकरा के रउआ सपाटबयानी कह सकीले बाकिर बिना शिल्पगत तकनीक के कवनो घुरचिआह तरीका अपनवले सन्देश देवे के कहानीकार के आपन बेबाक ढंग बा । जब कहानीकार खुद कहानी में शामिल बा त ओकरा आपन बयान करे के आजादी मिल जात बा जवना के उपयोग करे से ऊ कतहीं चुकत नइखे ।

कहानीकार के कथानक में शरीक हो गइला से ई घाटा जरूर भइल बा कि कहानियन में कबो-कबो पात्र के चरित्र के बारीकी से मुकम्मल तस्बीर नइखे उभर पावत । चौधरी जी के कहानयिन के शैली में सहजता बा आ भाषा में प्रवाह बा । खाँटी शब्दन के प्रयोग ढेर बा जवन गाँव -जवार में आम लोग प्रयोग करेला । कतहीं-कतहीं मोमेन्टम, केन्द्रापसारी बल आ केन्द्राभिसारी बल जइसन बैज्ञानिक शब्दन के प्रयोग बा बाकिर उहवें बा जहवाँ कहानीकार खुदे कवनो स्थिति भा परिवेश के बरनन करत बा । कहानीकार खुद सरकारी पदाधिकारी रहल बा, एह से कार्यालयीय विवरण देवे में, उहाँ के हालत के बरनन करें में ओकरा कवनो दिक्कत नइखे भइल ।

चौधरी सहजता से कहानी के मसाला अपना गाँव, पड़ोसी, परिवार, जवार आ कार्यालय के साथी-संघतिअन का बीच से उठवले बाड़न आ बिना कवनो मीन-मेख कइले अपने गढ़ल कहानी का ढाँचा में ढाल के पाठकन का सोझा परोस देले बाड़न । कुछ परिवेशन के चित्रण त बहुते सटीक आ अल्प शब्दन का माध्यम से कइले बाड़न । झटका देके चौंकावे के प्रवृति नइखे-ना कहानी का शुरु में आ ना अन्त में । तबो कहानियन में आकर्षन बा आ अधिकांश के पढ़ जाये में पाठक का मन में ऊब आ झुंझलाहट पैदा नइखे होत । चौधरी जी के कहानियन के कथावस्तु गाँव के समाज का विभिन्न वर्ग से उठावल बा आ अपना जनवादी सोच का संगे बेझिझक रखल गइल बा । कथावस्तु में विविधता बा ।

एह सभ खासियत आ प्रवृतियन के चर्चा का बाद 'बेगुनाह' के कहानियन पर संक्षेप में विचार कइल उचित होई ।

देश जब आजाद भइल त मजहब का आधार पर बँट गइल । बहुत मुसलमान लोग पाकिस्तान चल गइल । जे गइल ओकरा मन में एगो बेहतरी के सपना झलमलात रहे । सपना पूरा ना भइल । एगो गाँव से गइल उसमान भाग के फेरु वापस अपना गाँव में आ गइलन बाकिर एहुजा मस्जिद में अजान का बाद कुछ अनजान लोग उनका मिलल जे देश के बरबाद करे खातिर मुसलमान भाइयन के भावना भड़कावत रहे । जब उसमान विरोध कइले त उनका के पागल करार दिहल गइल । कांके तक इलाज खातिर लोग ले गइल । अब ऊ अपना बकरियन के चरावेलन, समय पर अपना घरे में रह के अजान देलन बाकिर गाँव भर के लोग उनका के पगला कहेला । **पागल** कहानी के इहे कथा-वस्तु बा । देश में आई. एस. आई. के बढ़त साजिश के पृष्ठभूमि के खतरा किओर ई कहानी इशारा करत बिया ।

'दईत' कहानी में बंगला देश से आइल शरणार्थी लोगन के हालत के बरनन बा, जे बंगला देश बने का पहिले पाकिस्तानी हुक्मरान लोग के जुलूम से बँचे खातिर प्राण बचावे खातिर भारत के सीमा में घुस के आ गइल रहे लोग । जहाँ ओह लोगन के अस्थायी तौर पर बसावल रहे, ओह जगहा का आस-पास में तरह-तरह के दिक्कत होखे लागल रहे । शरणार्थी लोग अपना खेत-खरिहान से उखड़ल ओह पौधा खानी रहे जे बूँद-बूँद पानी खाती तरसत होखे । ओह लोगन का मन में अनेसा रहे कि भारत के लोग ओह लोग के अलग पहिचान बना के राखे के चाहत बा । एही द्वन्द्व के एह कहानी में देखावल बा । मनोविज्ञान के सहारा लेके कुछ विश्लेषण पात्रन का माध्यम से भइल रहित त कहानी के शिल्प में निखार आ जाइत । एह में

www.bhojpurisahityangan.com

समस्या के सोझा राख के एगो निष्कर्ष निकाले के कोसिए कइल बा । उलझन साफ नइखे हो सकल आ निष्कर्ष के जोड़ अलगे से चिन्हा जात बा । बुनावट ठीक से कर दिहला से कथानक आ कथ्य सँवर जाइत ।

'सवाल' कहानी में दबंग पिछड़ा वर्ग के लोग के दलित वर्ग का लोगन पर जोर-जबरदस्ती करे के बढ़ रहल प्रवृति के विषय बनावल बा । दलित के भईंस के छलबल से आ पुलिस का मदद से हथिया लीहल जाता आ न्यायालय का निर्णय का बादो लवटावल नइखे जात । ऊ एह कचहरी से ओह कचहरी दउरे खातिर मजबूर हो जात बा । देश में न्याय महंगा हो गइल बा आ गरीब न्याय पावे के खरचा नइखे उठा पावत । भाषण आ आश्वासन त बहुत दिहल जा रहल बा बाकिर केहू मन से न्याय के सस्ता आ सरल बनावे के उपाय नइखे करत । यदि केहू अगुता के कानून अपना हाथ में ले लेत बा त ओकरा के डाकू भा नकसलाइट करार देके घृणा के पात्र बनावे के कोसिस कइल जाता । एह कहानी के दलित सवाल पूछत बा कि रउवे कहीं कि ऊ लोग घृणा के पात्र बा कि पूजा के ? अनेक सामाजिक-आर्थिक समस्यन का कोख से उग्रवाद के जनम होला जवना से समूचा मध्य बिहार तबाह हो रहल बा । एक कहानी में ई सवाल उठावल त बा बाकिर तेवर नइखे आ सकल कि पाठक के मन चोट से तिलमिला के सवाल पर गहिराई से सोचे खातिर मजबूर हो सके ।

'दहसत भरल सन्नाटा' में गाँवन में कवनो बहाना बनाके गरीब के जर-जायदाद हथिया लेवे के जे तिकड़म बड़ लोग करेला, ओकरे खुलासा कइल बा। जुलुम हो रहल बा, ई सभे देखत बा, महसूसतो बा बाकिर विरोध के स्वर उठत नइखे। समाज प्रतिक्रिया के नाँव पर चुप्पी साध के ओजवाँ से घसक लेवे में ही आपन भलाई बुझत बा । कबले तमाशबीन होके लोग अत्याचार देखत रही, दुरगति सहत रही। जबले सभे अपने नफाघटी में अझुराइल रही, आदमीयत अइसहीं लाचार बनल रही। एही दहशत भरल चुप्पी के तोड़े के प्रेरणा दे रहल बिआ ई कहानी ।

'बेगुनाह' कहानी में भगत के जिनगी के तस्बीर उरेहल बा, जवना में एगो सीधा-सरल गँवई मनई के अधिकारी वर्ग के संवेदनहीनता के शिकार होके झूठ मामला में जेल जाये के पड़त बा जहवाँ चोरो डाकू से खराब व्यवहार उनका संगे कइल जात रहे । भगत के पुलिस महीनवारी पहुंचावे पर मजबूर कर देतिया । आजिज होके गाँव-घर छोड़ के अनजान जगहा जाके बस जाये के मजबूर हो जात बा भगत । गरीबी आ भूख के मारल परिवार अपना छोट बेटा सोमरा के पढ़-लिख के आदमी बन जाये खातिर मास्टर का जवरे भेज देत बा । गरीब में अबहीं आदमियत बाँचल बा जवना के सबूत बा चिरकुट जवना के दिहल माँड़ में पानी फेट के भगत आ एतवरिया अपना भूख पर काबू पावे के कोसिस करत बा लोग आ इहो उमेद करत बा लोग कि भोर के सूरज उगे से केहू रोक ना सके । एही उमेद आ आशा पर त गरीब के समय कटेला आ कट जाले ओकर जिनगी । ऊ अपना मन के तोस देला कि 'धार में बहत रहीं, किनारा त लउकल !' स्वार्थी आ भ्रष्ट पुलिस के हथकंडा से आ अपने लोग के मारल भगत जइसन हजारन मनई अपराधी बना दिहल जा ताड़न। समाज के एह विकृति के भयानक तस्बीर उभरत बा पाठक का मन में । 'बेगुनाह' एगो सफल कहानी बिआ, जवना के असर मन पर पड़त बा ।

'पहिचान' में सुखदा गाँव के एगो पढ़ल-लिखल मध्यवर्गीय औरत के जिनगी के तस्बीर लउकत बा जे पति का मरला का बाद गाँव में कवनो काम ना मिलला का ओजे से शहर आ जात बाड़ी आ एगो जज साहब किहाँ दाई के काम करे खातिर तइयार हो जात बाड़ी । लरिकाईं में जज साहब के महतारी अपना नइहर गइला पर अपना लइका खातिर सुखदा के चुनली बाकिर सयान भइला पर दूनू

www.bhojpurisahityangan.com

आदमी के विवाह अलग-अलग लोग से हो गइल । जज साहब उनका के कुन्ती का नाँव से जानत रहस । सुखदा के कहानी जनला का बाद जज साहब उनका के शिक्षिका के नोंकरी दिलवा देत बाड़न बाकिर ऊ उनहीं का डेरा पर रह के अपना बेटा के एम० ए० तक पढ़ावत बाड़ी । ओह पुरान बात के 'पहिचान' के रहस्य जब खुलत बा तब अवचके जज साहब का दिल के दौड़ा पड़त बा आ अस्पताल जात में कार-दुर्घटना में दूनू आदमी के मउवत हो जाति बा । ई एगो साधारण प्रेमकहानी बा ।

'**एक बार फेर**' में सुखदा यानी कुन्ती के बेटा राधाकान्त का मन के द्वन्द्व चित्रित कइल बा -दोसरा प्रसंग में ।

'**चुनाव**' एगो प्रतीक कहानी बा जवना में 'जंगल में प्रजातंत्र' लावे खातिर चुनाव होत बा -शेर आ हाथी का दल के बीच । शोषक आ तिकड़मी लोग प्रजातंत्र के कइसे मखौल बना के समूचा चुनाव-प्रणाली के बेमानी बना देले बा-एही पर केन्द्रित बा चुनाव के कथानक । अगड़ा-पिछड़ा के चाल, बूथ लूट आ मतदान के नाटक का जरिए कइसे दबंग आ अपराधी लोग आपन स्वार्थ सिद्ध कर रहल बा एकरे खुलासा कइल बा 'चुनाव' में । शोषित आ दलित आम जनता के लगातार छलल जा रहल बा । 'चुनाव' एगो नीमन व्यंग्यकथा बन पड़ल बा । प्रजातंत्र में जंगल के राज बखूबी चल रहल बा ।

'**हम ना मानब**' के कथा-वस्तु समाज में फइलल अन्धविश्वास बा, जवना के जड़ शिक्षा के अभाव में अबहियो गाँवन में ढेर गहिरा ले पइठल बा । ओझा गुनी का फेरा में पड़के समय पर लोग डाक्टर तक ना पहुँचे आ एकर कुफल भोगे के पड़ेला । जब चेत आवेला तबले नुकसान हो चुकल रहेला ।

'**मंथरा**' में हर गाँव में पावल जाये वाला अइसन लोग के चरित्र उरेहल बा जे अफवाह फइला के दोसरा के अछरंग लगावे आ बदनाम करे से ना चूके । कबहीं अइसन लोग आपन कवनो कमी भा चूक छुपावे खातिर पत्थर दोसरा के मत्था पर फोड़े के चाहेला भा कबहीं कवनो बदला चुकावे का मनसा से अइसन हरकत करेला। एने के बात ओने करे में, ओकरा में नमक-मिरीच लगा के चटकार बना के पसरावे में एह टाइप का लोगन का सुख मिलेला । अइसने एक हाली कहानीकार पर गाँवे के कवनो लइकी के बिआह काटे के अछरंग लागल जवना के द्वन्द्व 'मंथरा' में दिहल बा ।

'**सोना के कंगना**' में दहेज के समस्या उठावल बा जवना में अर्थ-लोलुप आदमी के चरित्र दिहल बा जे हीरझरिया का बाप पर जोर डाल के सोना के कंगना नेग में देवे के कबूल कइला का बादे भाई के बिआह में जाये के अनुमति देत बाड़न । बिना सोना के कंगना बिदाई हो गइला पर ऊ हीरझरिया के ना केवल अपमानित करत बाड़न बलुक ओकरा के घर से निकाल के अकसरूये बस पर चढ़ा के नइहर भेज दे ताड़न । गोद में के नन्हका के छीन के अपना लगे राख ले ताड़न । इहो चिन्ता नइखन करत कि दूधपीअत लइका के हालत महतारी बिना का होई । हीरझरिया आ ओकरा सखी-सलेहर के अनुनय-विनय के कवनो असर हीरझरिया का पतियो पर नइखे पड़त । अन्त में कवनो तरह से गाँव के एगो दोसर दामाद का मदद से उधारी लेके कंगना का सँगे जब हीरझरिया ससुरार पहुँचति बिआ त कंगना सोनार से जँचवा लेवे का बहाने हथिया लेत बाड़न । बात सही बा कि पइसा के चसक जब लाग जाला त आदमियत मर जाले आ आदमी जानवरो से बदतर बन जाला । धन-दौलत बटोरे के नशा सभ नाता के डोर तूड़ के फेंक देला । दहेज आसानी से धन पावे के एगो जरिया बन गइल बा जवना का चलते सास-ससुर बहू का जवरे

www.bhojpurisahityangan.com

जानवर खानी व्यवहार करे से नइखे चुकत ! 'सोना के कंगना' एगो काफी बढ़िया कहानी बा जवन कथ्य के केन्द्र में राखि के बुनल गइल बा । अन्त में कहानीकार यदि निष्कर्ष के सपाट सन्देश में ना बदल के हीरझरिया के हाव-भाव भा प्रतिक्रियात्मक कवनो क्रिया से समापन कइले रहित त कहानी के शिल्प शिथिल ना पड़ित ।

'खेला खतम' में दू-तीन गो घटनन के जिकिर करत जिनगी आ मउवत को बीच के दूरी नापे पर विचार कइल बा । एकरो अन्त में एगो सपाट निष्कर्ष कहानीकार का तरफ से दिहल गइल बा । ई कहानी के ढाँचा के डोला के रख देत बा । जब कबो कहानी में रचनाकार एह लोभ के काबू में ना राख पावे त कहानी सपाटबयानी के शिकार हो... ...ले[illegible] का पंजरा सरक के बइठि जाले।

...न्दर से बाहर' एगो लम... कहानी बा जवना में सरकारी अधिकारियन के [illegible] ही आ पूर्वाग्रह से काम करे के बरनन कइल गइल बा । छोट-से [illegible] बा[illegible] ...ठ बान्ह के लोग अपना से नीचे के कर्मचारियन के सतावे खातिर अपनी सी[illegible] ...ड़ के मनमाना करे से नइखे हिचकत । अइसन आफीसर लोग केहू के नो[illegible] ...न के ओकरा बाल-बच्चन का मुँह में जाब लगावे में तनिको हिचक ना देखा[illegible] आफिस के आ सरकारी सेवा के कवनो कायदा-कानून एह लोग के भीतर लुका[illegible] के रोक ना पावे । बाकिर एहू संवेदनाहीन माहौल में कुछ अधिकारी बाड़न जेकरा भीतर के आदमी मरल नइखे आ उचित लगला पर अपना ऊँच पद के अभिमान ना देखा के जरूरतमन्द छोट कर्मचारियन के [illegible] खिलवावेला आ मदद करेला । एह कहानी के ढाँचा जटिल [illegible] ...ल बा आ [illegible] ...ट विकास में बाधा पड़त बा । कहानी के नायक अपना [illegible] भाग के नो[illegible] ...में आ [illegible] कइसे [illegible] भइला के पूरा बयान [illegible] एक टुकड़न [illegible] ...ा । आ[illegible] कहत-सुनावत जइसे कहानी के नायक [illegible]-पीत से अ[illegible] गइल बा, [illegible] अउँजियाह[illegible] पाठको महसूस करत बा । घटना-क्रम के [illegible] ...ट [illegible] अझुरा[illegible] ...ाला त कहानी में एगो लड़खड़ाहट आ जाले । तेवर के अभाव [illegible] ...के आक्रोश बहुते शिथिल हो गइल बा आ जइसन हहास कथानक का बान्हें के चाहित रहे, ऊ नइखे हो पावल ।

'ठेस' कहानी में गाँव में आज काल्हि पसरत ओह मनोवृत्ति के चित्रण कइल गइल बा जवना में केहू से आपन गरज निकाल लेला का बाद कवनो ना कवनो बहाने ओकरा के धोखा देवे आ छले के चलन आम भइल जात बा । गाँवन में एक-दोसरा के मदद करे के भाव घटल जात बा । केहू के भावना के समुझ के आपन काम निकाल लिहला का बाद ओकरा भावना के चोट पहुँचावे में लोगन का तनिको हिचक नइखे होत । कहानीकार अपना बचपन के साथी लगन के गरज पड़ला पर रूपया देके मदद करत बा, बाकिर लगन उनकर खेती-गृहस्थी के काम सम्हारे के गच्छ लेला का बादो ठीक मधान्ह में काम छोड़ देत बाड़न । केहू के समुझावल नइखन मानत । गाँव में ऊँच-नीच बतिया के मामिला कूटे-पीसे वाला लोग कम नइखन । लगन का व्यवहार से कहानीकार के मन का ठेस पहुँचत बा आ ओकर जनवादी सोच टुका-टुका होके बिखर जात बा । एही जमीन पर चौधरी जी के लिखल आउर कहानी बाड़ी सन जइसे 'सही मंजिल' में संग्रहित 'अउर इहो' । ओहू में लगने बाड़न, जे कहानीकार के मदद त लेत बाड़न बाकिर काम करे के तइयार नइखन होत । गाँव में बहुत परिवार बा जेकर लोग बाहर काम करत बा आ ओकर खेती-बारी सम्हारे वाला केहू गाँव-घर पर रह नइखे पावत । अइसन लोग केहू ना केहू के काम सउँपेला आ ओकर गरज रूपया-पइसा देके चलावेला । ई प्रथा अबहियों चल रहल बा बाकिर एह में खोट आ गइल बा । बहरावासु लोग के मजबूरी से लाभ उठा के ओकरा के छले के प्रवृत्ति अब बढ़ गइल बा । एही प्रवृत्ति के 'ठेस'

www.bhojpurisahityangan.com

में उजागर कइल गइल बा ।

'उत्प्रेरक' में गाँव के लोगन में से ओह लोग के कहानी के पात्र बनावल गइल बा, जे बिना कवनो ठोस कारन के दहिने-बाँवे होत रहेला ।

गाँव सचहूँ आज परेशान बा । परेशानी एह से ढेर बा कि ओकर पढ़ल-लिखल आ सोचे-समुझे वाला लोग त नौकरी आ जीविका का तलाश में गाँव से बहरा चल जात बा आ अपना रोजी-रोटी आ छोट परिवार के हित सोचे-करे में लाग जात बा। काम करे वाला मजदूरो गाँव छोड़ रहल बा । जे लोग बाँच जात बा ओह लो के सोचे के दायरा अतना बड़ नइखे कि ओह में पूरा गाँव अँट सके । मुँह पर कुछ बोले आ पीठ-पीछे कुछ आउर कहे-सुने के प्रवृति बढ़ रहल बा जवना से गाँवन के विकास बाधित होत बा । छल-कपट आ तिकड़म का राह मिल रहल बा । **'कहत ना रही'** कहानी में एही दर्द के उठावल बा । मोहन के चरित्र, इनर के दोसरा के बदनाम करे में कनफूसकी करे के चाव एही दर्द किओर इशारा करत बा । हाँलाकि एह दर्द के टीस कहानी में उभर नइखे पावल । इनर हत्यार अस मूड़ी झुका त लेत बाड़न बाकिर कहानीकार का अपना कथ्य भा सन्देश के व्याख्या अन्त में करे खातिर एगो सपाट बयान के सहारा लेवे के पड़त बा ।

'चुगली' करे में बहुत लोग का मजा मिलेला । एकर नतीजा कतना लोग का भोगे के पड़ेला, दुरगति सहे के पड़ेला, ई कुल्ही चुगलखोर ना समुझे । अधिकारी वर्ग कान के कतना काँच होला आ कबो-कबो बिना [illegible] वजह आ आधार के अधीनस्थ कर्मचारी के तंग करेला, एकर खुलासा 'चुगली' कहानी में करे के कोसिस कइल गइल बा । बेवजह तंग करे के प्रवृत्ति या त [illegible] के चक्कर में या अपना इगो का चलते पैदा [illegible] आ आर्थिक कमाई करे के स्वार्थ का चलते पनपेले ।

'मुखौटा वाला' [illegible] कर्मचारी लोग खातिर कके प्रखण्ड आ जिला स्तर के अधिकारी लोग के [illegible] के विषयवस्तु बनावल गइल बा । बदली के आदेश हो गइलो पर प्रभार [illegible] का पीछे भी शातिर मन के साजिश होला। आदेशपालन खातिर सरकार एक स्तर पर सख्त रूख अपनावेले त ओकरे कुछ पदाधिकारी लोग अपना पसन्द-नापसन्द का वजह से ओह आदेश के धज्जी उड़ावे में संकोच ना करे । ई प्रवृति खाली बदली आ प्रभार लेवे-देवे तक सीमित नइखे बलुक जनहित के कवनो योजना के अपना जकड़ में लेके ओकरा के नाकाम कर रहलि बा । लापरवाही, लालफीताशाही, चाल आ तिकड़म, छोट-मोट स्वार्थ खातिर भी साजिश आ मनमानापन-इहे प्रशासनिक वर्ग के चरित्र बन गइल बा । एही चरित्र के पृष्ठभूमि में रचाइल बा 'मुखौटावाला' ।

एह तरह चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह का कहानियन के कथा-वस्तु में विविधता बा । एकर दायरा गाँव-जवार से लेके शहर तक फइलल बा । गँवई समाज के चरित्र एह में उभारल बा त सरकारी कार्यालय, कर्मचारी वर्ग आ अधिकारी वर्ग के मनोवृत्ति आ कार्य-पद्धति भी उजागर कइल बा । कथानक आ चरित्र के विकास के शिल्प आ तकनीक के बिना परवाह कइले चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह अपना कहानियन के साँचा खुद गढ़ले बाड़न । ठेठ टकशाली भाषा सम्प्रेषण में सक्षम बिआ आ पाठक बिना ऊब आ खीझ के हर कहानी पढ़े खातिर विवश लागत बा । भोजपुरी-कहानी के भंडार भरे में चौधरी जी के अवदान निश्चित रूप से सराहनीय बा ।

●

www.bhojpurisahityangan.com

'सही मंजिल' : हमरा नजर में

–कृष्णानन्द कृष्ण

'सही मंजिल': में चौधरी जी के विभिन्न पत्रपत्रिकन में प्रकाशित कुल सतरह गो कहानी संकलित बाड़ी स । संकलन के कुल्ह कहानी पढ़ला प ई अहसास हो जाता कि चौधरी जी अपना कहानियन के कथ्य, गाँवन के भीतरे चलत-गुटबंदी-पार्टीबंदी, जातीयता आ आजादी के बाद प्रखंड कार्यालय के माध्यम से गाँवन के राजनीति में भ्रष्टाचार के फैलाव के आधार, बनवले बाड़न। जवना में छोट-छोट घटनन के ले के कथा- कहानी के बुनावट कइल गइल बा । इनका अधिकतर कहानियन में गाँव, मुखिया, प्रखंड के सी० ओ०, बी० डी० ओ०, तहसीलदार आदि चरित्र के रूप में उभर के आइल बाड़न जे सही बाड़न । काहे कि चौधरी जी के आपन परिवेश उहे बा ।

अब कुछ कहानियन पर बात कइल जाव । पहिलकी कहानी 'नदी के किनारा' बा । एह में लेखक भूत चर्चा कके हमरा खियाल से गँवई लोगन के बीच फैलल-बइठल अंधविश्वास के बढ़ावा देत बा । अगर एह कहानी में ओमा पाँडे के चरित्र के उभारल गइल रहित आ अंधविश्वास के विरोध कइल गइल रहित त ई कहानी लोकमंगल कामना से प्रेरित होइत आ चर्चा के विषय बनित । कार्यालयी भ्रष्टाचार के आधार बनाके लिखल गइल कहानियन में , 'कटहर', को बड़ छोट, 'ई काह', धूर' आदि के देखल जा सकेला । कटहर कहानी में प्रखंड कार्यालय से आम गैरमजरूआ जमीन के बंदोबस्ती में हेरफेर आ पदाधिकारियन के जरिए गरीब के शोषण के पर्दाफाश करे के कोशिश कइल गइल बा, उँहवे 'को बड़ छोट' में हाकिम-हुक्काम, पेशकार आ ओकरा कार्यालय में होत भ्रष्टाचार के नंगा नाच के उजागर कइल गइल बा। 'ई का ह' में गाँवन में बाढ़ के बाद शुरू होखे वाला राहत कार्य आ ओकरा कुव्यवस्था के चित्र बा त 'धूर' में फर्जी तकाबी रिन से गाँव-गँवई के कमजोर आदमी के शोषण के सही तस्वीर उभर के आइल बा । दोसरा तरह के कहानियन में गाँव के खुटचालूपन, ओकरा धूर्तई आदि के लेके कथा सृजन कइल कइल बा ।

एह संग्रह के तीन अंतिम कहानी 'सही मंजिल', 'चीख 'आ 'देशद्रोही' के मिजाज चौधरी जी के अउर कहानियन के मिजाज से अलगा बा । एह कहानियन में चौधरी जी अपना दृष्टि के विस्तार देत अपना कथाफलक के विस्तार देले बाड़न आ अपना भीतर के प्रगतिशील विचारन के कहानी के जामा पेन्हावे के कोशिश कइले बाड़न । अंतिम कहानी 'चीख' में भरपूर अंदाज में गाँव के गंदा राजनीति, सामंतन के व्यवस्था के साथे साँठ-गाँठ आ सर्वहारा के अंत में पराजय रामधार के मौत के साथे होता । ई तीनो कहानी लेखक के प्रगतिशील विचारधारा के संपोषक बाडी स ।

चौधरी जी के कहानियन में कईगो खटकेवाली बात बा जवन उनका कहानियन के उत्तम नइखे बने देले । सबसे पहिल बात बा कहानियन के सपाट प्रस्तुतिकरण आ अटपट भाषा के प्रयोग । सामान्य जीवन में बतकही के भाषा आ साहित्य के भाषा में लेखक के फरक करे के पड़ी । कवनो घटना के हूबहू सरल भाषा में सपाटबयानी कहानी ना हो सके, कहानीकार का एकरो खेयाल रखे के चाहीं । मूल रूप से देखल जाव त चौधरी जी के कहानी स सशक्त कहानियन के कच्चा माल बाड़ी स । अगर कहानियन पर मेहनत कइल जाइत त सचहूँ सही मंजिल मिल जाइत ।

– भोजपुरी वार्ता, पटना

www.bhojpurisahityangan.com

लोकजीवन के कहानीकार

–भुवनेश्वर सिंह

'बड़प्पन' के सब कहानी रोचक आ असरदार बाड़ी स । कहानियन के कथावस्तु वास्तविक जीवन पर आधारित बा । मेला, बाजार, धर्मशाला, मठ-मठिया, ओझा-डाइन, जाति के बाहर विवाह, हिन्दू-मुसलमान, परिवार के हालत, गाँव-शहर के चोर, डाकू, रंगदार, गाँव के लोग के आपस के फूट, दलबंदी आ मारपीट, राजनीति के अपराध, होली के अवसर पर परिवार में धोती कुर्त्ता आ साड़ी के चाह, परिवार के गरीबी, अफसरन के घुसखोरी, बनियन के मुनाफाखोरी आदि के चटकदार चित्र एह कहानियन में बा ।

'बड़प्पन' के कहानियन के पात्र 'वर्गगत' बाड़ेस । एकर मतलब कि ऊ सब अपने अइसन समाज के अनेक पात्रन के झलकावत बाड़े स । जइसे 'बड़प्पन' कहानी के गनिया समाज के सभ एकवान के बोध करा रहल बा ।

'बड़प्पन' के कहानियन में उपदेशो बा लेकीनि ओह उपदेश के पीछे कतो-कतो व्यंग्य आ तनो बा । जइसे कि डाक्टर साहब बड़ पद पर बाड़े । बाकी उनका में बड़प्पन नइखे । काहे कि ऊ मुअलो रोगी के सूई देके पइसा ले लेत बाड़े । बाकी ओहिजे गनिया पाँच रुपया के नोट ठुकरा देत बा। काहे कि ओकरा में बड़प्पन बा, दया-धर्म बा ।

एही तरीका से हर कहानी समाज के कमजोरी के ऐनक बिया। बड़ बारीकी त ई बा कि कहानी के सीख भा उपदेश अपने आप पाठकन के मन में समा जात बा ।

कहानियन के मथेला छोटे-छोटे आ साथ ही सारगर्भितो बा। कहानीकार के मन में जवन खास बात कहे के बा ऊ मथेले में छिपल बा आ कहानी के पढ़ला के बाद अंत में पाठक के मन में ओसहीं उतरा जात बा जइसे दही मथला के बाद लयन माठा में ।

कुल मिला के कहानीकार के कहानियन में लोक जीवन के रस उमड़ रहल बा । एह से ओकरा के लोक जीवन के सफल कहानीकार कहल उचिते बा ।

–राजेश्वरी उच्च विद्यालय, सूर्यपुरा, रोहतास

●

सही मंजिल

– रूपश्री

चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह के कुल 17 गो कहानियन के संग्रह बा 'सही मंजिल'। सभी कहानी भोजपुरी कहानियाँ, भोजपुरी कथा कहानी, उरेह, डेग, जोखिम, तरई, साखी, कोइल, ईगुर, भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका, दियरी, भोजपुरी वार्त्ता, जगरम आ लहार आदि पत्रिकन में 1970 से 1993 का बीचे छप चुकल बाड़ी स । चीख, सही मंजिल, देशद्रोही बेहतरीन कहानी बाड़ी सन जवना में आज देश में पसरत जा रहल उग्रवाद के पृष्ठभूमि किओर संकेत कइल गइल बा । गाँव के आर्थिक-सामाजिक, पारिवारिक आ राजनीतिक स्थितियन के कथावस्तु का रूप में प्रस्तुत कइल गइल बा । कथावस्तु में विभिन्नता बा । भाषा के रूप ठेठ बोलचाल के बा आ ओह में सुहावरन के प्रयोग जान डाल देले बा । कई एक कहानी में अन्त-अन्त ले जात कहानीकार कथ्य आ उद्देश्य के साफ बयान कर देले बा, जवना से ऊ उपदेशी बन गइल बा । कहानीकार लगभग हर कहानी में मौजूद बा । 'बड़प्पन' का बाद आइल चौधरी जी के ई कहानी संग्रह पाठकन में खूब सराहल जाई । हर कहानी में चौधरी जी के बेबाक बतकही के ढंग अपने रंग आ तेवर में मौजूद बा ।

संचालिका, रूपश्री प्रकाशन, पटना-6

●

www.bhojpurisahityangan.com

'सही मंजिल' : भोजपुरी कथा के कोहनूर तलाशे के एगो प्रयास

—अरुण अलबेला

भोजपुरी कथा संग्रह 'सही मंजिल' चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह द्वारा लिखित कहानियन के संकलन हवे ।

भोजपुरी भाषा अपने आप में एगो सक्षम भाषा ह । हम भोजपुरी भाषी होइयो के एकर ताम-झाम, एक तोड़, एकर मुहाबरा, एकर वास्तविक वार्त्तालाप गंध से दूर बानी; मात्र स्पर्श भर बा । जब कबो हम गाँव शाहपुर पट्टी, भोजपुर जाइला तब भोजपुरियन के एक से एक गूढ़; शुद्ध मुहावरा, बोल के तोड़, आउरी बोलें के ढंग, बातन के उतार-चढ़ाव सुनिला तब चकित होखिला काहे कि हमरा शहर जमशेदपुर में काम कइला के कारण गूढ़-शुद्ध आ ठेठ शब्दन से दूर रहेके पड़ेला। दरअसल हम भोजपुरी के रूप से वाकिफ बानी, रस से सराबोर होखे के अहसासो मिलेला बाकिर ओइसन रस हम तैयार ना कर सकिला। भोजपुरी में अइसन रस बा कि आदमी ओकरा के पीके मदहोस हो जाला। ओकर बातचीत करे के ढंग अउरो उतार-चढ़ाव, ओह में अंतर्निहित रीगिर, अउरो काम निकाले के भा करावे के आग्रही स्वर में अलग मिठास बा। ई सब एह कथा संग्रह 'सही मंजिल' में बा । एकरा एक-एक कहानी में भोजपुरी के चासनी बा आ बा बतकही के असल रस ।

दोसर बात ई, कि भोजपुरी में सरसता होखला का बावजूदो एह भाषा में कथा-संग्रह के अबहीं कमी बा। सब से बड़ आ कटु सत्य ई बा कि भोजपुरियन के एक तबका विशेष में क्रय शक्ति होखला के बादो ऊ भोजपुरी पत्रिका भा कथा-संग्रह कीने के प्रति उदासीन बाड़े । जतना लक-दक के साथ हिन्दी पत्रिका निकलेलिस अउरी जतना ओकर खपत बा ओकर एको अंश भोजपुरी के नइखे। भोजपुरी पत्रिका के खरीदार मुश्किल से मिलेलन। खरीद के पढ़े आ प्रोत्साहन देवे वाला कम बाड़न । भोजपुरी कथा-संग्रह के छपवा के मुफ्त में बाटे के दम केकरा में बा ? प्रकाशकनो के बहुते कमी बा ।

जब कवनो कहानीकार कथा-संग्रह छपवावतो बाड़न तब अतना अशुद्धि छप जात बा कि पढ़े में मिजाज खोनसा जाला । एक त भोजपुरी के पढ़निहार कम बाड़े अउरो ऊ पढ़बो करेलन त हिन्दी में । भोजपुरी के तोड़, ओकर बोले के ढंग में जवन मिठास बा ऊ समझ नइखन पावत । कोसिस होखे के चाहीं कि अशुद्धि ना रहे । अब देखीं कहानी 'नदी के किनारा' में एक जगह बा—, काहे पैदल चलत बानी ? पढ़ के चलीं । जबकि 'पढ़ के' का जगह 'चढ़ के' छपल चाहत रहे। अइसन अशुद्धि ढेर कहानियन में बाड़ीस । गंजी के गंची छपल बा । कहानी 'ई का ह' में बइठ के सोचत रहीं के जगह 'बइल के सोचत रहीं', 'किरदार' कहानी में 'वर्दी खोल के' बदले 'वर्दी खाल के' छपल बा । देशद्रोही में 'रात भर' के 'रात पर' छपल बा । कहानी 'सही मंजिल' में ही कई जगह अशुद्धि बा ।

चौधरी कन्हैया प्रसाद द्वारा ई प्रयास सराहनीय बा कि उहां के हर परिवेश, वातावरण, स्थिति-विशेष, शहरी अउरू गँवई परिपेक्ष के छुवले बानी। गाँव के अमीर भा गरीब तबका होखे, चाहे ऊहाँ के शोषण-दोहन-उत्पीड़न होखे, चाहे पार्टी-बाजी होखे, या कोर्ट-कचहरी, ब्लाक-दफ्तर आदि में जवन लेन-देन होत होखे, चाहे गाँव के नस नस में अब जवन बेइमानी, घुसखोरी, गरीबवन के दबावे के सिलसिला घुस रहल बा ओह सब पर कलम चलावे के प्रयास चौधरी जी कइले बानी। ग्रामीण वातावरण के कहानियन में गरीब पात्रन के गरीबी, विवशता के यथार्थ चित्रन बा। कहानी पढ़ला पर गरीब पात्रन के

www.bhojpurisahityangan.com

हाव-भाव, बोल-चाल के ढंग, देह के आकार-प्रकार, पहनावा, दुर्दशा, आह, विवशता सब सामने आ जात बा ।

वास्तविकता के चित्रण साक्षात् बा । एक वाक्य देखीं, -'खइब ? खाए के मन होखे त कह निकाल दीं ? निकालीं ? खैनीवाला सोचलस कि चार बार खैनी बनवलीं, केहू ना केहू आ जात बा ....।'

स्पष्ट यथार्थ के वर्णन देखीं, 'एगो आदमी धोती के फाटल टुकड़ा पहिरले रहे आ खैनी बनावत रहे । उघारे रहे एही से खैनी मलत रहे तब बाहें ना गर्दनो के नस टना जात रही स ।'

भोजपुरी वार्त्तालाप के वास्तविक तर्ज अउर रीगीर के दर्शन करीं, कहानी 'कटहर' में–

"बोल का देबे ?''
"हुजूर, जे कहल जाई ।''
"पचास रुपया देबे ?''
"हुजूर, न्याय कइल जाय ।''
"तब कतना देबे ?''
"हुजूर, जे हुकुम होई ।''
"पचीस रूपया देबे ?''
"हुजूर, हम गरीब आदमी...।''
"तब का देबे ?''
"हुजूर, हम गरीब आदमी... ।''
"तब का देबे ?''
"हुजूर, जे कहल जाई ।''
"दस रुपया देबे ?''
"हुजूर, अतना लायक पेंड़, नइखे ।''
"तब का देबे ?''
"हुजूर, कह दिआय ।''
"पाँच रुपया देबे ?''
"हुजूर, मर जाइब, अइसन मत कइल जाय ।''
"तब का देबे, बोल ना ?''
"हुजूर, माई-बाप, रउवा के बाहर कइसे जाइब ?''
"दू रूपया देबे ?''
"दोहियो बेंच के ना पाइब । लइकन के मुँह में जाब लाग जाई।''
"तब बोल का देबे ? दू खिल्ली पान देबे ?''

एह तरह कहानियन में जरा भी भटकन आ लाग-लपेट नइखे । बिना जामा चढ़वले बिना कल्पना के सहारा लेले यथार्थ सामने रख दीहल गइल बा।

एह सब में भोजपुरी अंचल के परिवेश साफ झलकत बा...इनारा के साफ तल दिखाई देबे नियन । भोजपुरी माटी के सोंधा गंध महसूस होत बा । उहां के वातावरण में कुछ विचरन करे के अहसास भी होत बा । अउरू बुझात बा कि उहां के स्थिति विशेष का बा ? उहां का होत बा ? अभी भी उहां अंध-विश्वास बा । भूत-प्रेत, बुड़ा-चुड़इल के बात बा, ओझाई-गुनाई बा, ईर्ष्या-द्वेष बा, राजनीति आ उठा-पटक बा, स्वार्थ बा, साथ ही प्रेम अउरू साम्प्रदायिक सद्भाव के भावना भी बा , हिन्दु-मुसलमान के संबंध मैत्रीपूर्ण बा, जहर नस में नइखे फइलल ।

कहानियन के आरम्भ रोचक अउर जिज्ञासापरक बा, वार्त्तालाप सटीक बा, भोजपुरी भाषा में प्रवाह बा, शिल्प अउरू कथानक में तारतम्यता बा । छोट कथा में भी कथन स्पष्ट

www.bhojpurisahityangan.com

बा। हालांकि कुछ कहानी अउर स्पष्ट, सटीक, कसौटी पर कसल हो सकत रही स जरा प्रयास के जरूरत रहे। तब कथा-संग्रह उत्कृष्टता के कसौटी पर सटीक उतरीत । फिर भी पारस ना सही, हीरा तरासे के प्रयास कइल गइल बा।

'ई का ह' कहानी में कथाकार के अहसास सामने आ गइल बा। कथाकार के एक वाक्य पढ़ीं, ''आज सब गाँव में अइसन लोग बा जे हमनी तक मजदूरन के नइखे पहुचे देत। हमनी के आ ओहनी के बीच खड़ा हो जात बा... ओहनी के नेता बन जात बा, ओकर ना आपन उल्लू सीधा करत बा... जवन अफसर मन लायक नइखन करत उनकरा के चौक पर भरल दुपहरिया में लगटिया देत बा...इज्जत बांच जाय आ उपरो से कुछ मिल जाय तब आउर का बा ?'' यानि...गाँवन में स्वार्थ से स्वार्थ टकरा रहल बा तबे त एक पात्र बोलत बा, ''मुखिया के सामने सामान बंटे के चाहीं ।'' ''जाके कह दिह कि नदी में बह गइल । दोसर सामान मिल जाई । मुखिया लिख दिहें कि हमरा सोझा बंटाइल हा । आपन आदमी हई ।''

एह तरह से गाँव के विभत्सता के भी दरसावल गइल बा। कहानी 'सही मंजिल' में गाँव के मालिक अपना नौकर के पत्नी के पावे खातिर बोलत बाड़न...''कुछ दिन खातिर तू हट जा...गाँव छोड़ द...हम पंच लोगन के समझा-बुझा लेबि तब तहरा के खबर देब । तब तू आ जइह। तहरा औरत के भार हम लेत बानी।''

एक तरफ एही कहानी में गाँव में पनपत पाटी-प्रशिक्षण आ गुटबाजी के जिकर बा। कहानी 'नदी के किनारा' में गाँवन में अंधविश्वास दिखावल बा त 'कटहर' में स्वार्थ के, 'धोबियापाट' में आपन स्वार्थ बरकरार रखे खातिर अपना दोस्त के ही प्रतिद्वंद्वदी मान के कइसे रास्ता से हटावल जाय एकर वर्णन बा। 'को बड़ छोट...' कहानी में स्वार्थ में लिप्त अउरू एक बड़बोला व्यक्ति के हाव-भाव दिखावल बा। कहानी 'ई का ह' में सरकारी सहायता के बंदरबाट आ लूट दिखावल बा। कहानीकार कहत बाड़े, ''का हो रहल बा, चारो तरफ? बाढ़ सब गंदगी के बहा ले गइल बाकिर गंदगी फैलावेवाला लोग त बड़ले बा।'' तभी त 'घूर' कहानी में बीडीओ द्वारा एगो बूढ़ पर झूठ इलजाम लगा के ओकरा जवान बेटा के आपन घरेलू नौकर बनावे के प्रयास कइल जा रहल बा। ''भइया'' एक अलग तरह के संस्मरणात्मक कहानी बिया । कुछ अइसन घटना अतीत में घटल रहेला जेकरा के आदमी भूल ना सके । 'भइया' कहानी में गलती से ऊंट पर बइठला आ बंसवार में आँख फोड़वा लेला के वर्णन बा। सुहाना मौसम में बारिस के अहसास दिलावत बिया ई कहानी ।

कथा-संग्रह में अइसनो कहानी चाहीं जवना में हास्य आ व्यंग्य के पुट हो। बाकिर एह कथा-संग्रह में कहानी 'बड़े भाई' के समावेश अखर जात बा। ई ना रहीत त ठीक रहल हा । ई कहानी मखमल में पेवन जरूर लागत बिया। कहानी कमजोर भी बिया । अभिव्यक्ति ठीक नइखे। वर्णन के भी अभाव बा। प्रभावित नइखे करत । मन अनसा जात बा ।

'एक कदम नजदीक' कहानी भी संस्मरणात्मक कहानी बिया । जवना में मेला में बैल खरीदे अवस ठगी से बचे के जिकर बा। आंशिक रूप से प्रभावित करत बिया । कहानी 'साधु' में आज के महाजनी सभ्यता के उल्लेख बा। कहानी प्रभावित करत बिया । जिकिर बा कि हमनी का महाजनी सभ्यता में जी रहल बानी जा जवना से खराब कवनो सभ्यता ना होखे। एह में जे जतने नजदीक होला ऊ ओतने बड़ा दुश्मन होला ।

कहानी 'किरदार' में प्रशासन के बेरहमी बा साथ ही प्रश्न भी कि बेयालिस साल से ज्यादा हो गइल बाकि अंग्रेजन के बनावल कानून आज तक ले लागू बा । का नेता लोगन का नइखे बुझात कि कल्याणकारी राज्य के पुलिस के किरदार का होखे के चाहीं ? एह तरह से कहानीकार चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह जी हर परिवेश के दरसावे के प्रयास कइले बानी ।

कहानी 'छूमंतर' में बतावल बा कि लेवेवाला के मन में जब देवे के भावना ही

www.bhojpurisahityangan.com

नइखे आ बेइमानी पर उतर जाये के मन बनवले बा त बखेड़ा खड़ा कर के का लाभ होइ ? मौलबी के समियाना के रूपया नहकू सिंह ना देलन, पाँच बरिस से त का उनकरा से मौलबी पाँच सौ निकाल सकेले ? अच्छा उदाहरण बा कि तीन गो भईस में दू गो नइखी लागतस त का ओहनी के मार दिहल जाय ? या प्रतीक्षा कइल जाय ? अउर इहाँ कहानी अप्रभावी बिया । वार्त्तालाप आ संवाद के अधिकता हो गइल बा ।

कहानी 'सही खातिर गलत' एगो मनोवैज्ञानिक कहानी बा...जवना में एगो भयभीत युवक के कहानी बा...कथाकार एह में सहमत बाड़न कि कुछ रोगो अइसन आवेलन जेकरा कवनो रोग ना होखे.....ढेर लोग गठुआ जाला देहात के ओझाई के चलते ।

कुछ भोजपुरी क्षेत्र में नक्सलाइटन के जोर बा । एहपर भी कहानीकार के कलम चलल बा । कहानी 'देशद्रोही' में एगो अपराधी प्रशासन से ही प्रश्न करत बा कि लोगन के न्याय, सत्य आ खुशहाली के रास्ता बतावल कवनो अपराध ह का ? परिणांमस्वरूप ओकरा के देशद्रोही करार दिहल जात बा अउरू प्रशासन द्वारा आरोप लगावत जात बा कि 'तू अपना दोस्तन के साथे मिल के लोगन के संघर्ष करे खातिर तैयार करत रह ।' कहानी 'चीख' एगो दमदार कहानी बिया ।

कहानी-संग्रह के नाम 'सही मंजिल' जंचत नइखे । एह नाम में भोजपुरिया महक नइखे आवत ।

कुछ कहानियन के वाक्य मन के झकझोरत बाड़नस । कहानी 'धूर' में 'बीडीओ के साथ पाँच पुलिस, एक हवलदार, जनसेवक, सुपरवाइजर, कर्मचारी...नास्ता चाय चलल. ...गाँवघर के लइका-सयान ललचात देखत रहलन। चौकीदार लइकन के चाय पर के मांछी अस भगावे, बाकिर फिर ऊ सब छाप लस....।' एगो दोसर कहानी के अंश देखीं...– 'बुझात रहे कि जनमे से जूता ना पहिरले रहे। गोड़ के पाँचों अंगुरी पाँच दिशा में ताकत रहीस । ठोकचा बइठल झुर्रीयन से भरल चेहरा । बराबर पाकुर पाकुर करत रहे । बिहटी पहिरले रहे आ कान्ह पर एगो फाटल-पुरान धोती के टुकड़ा धइले रहे । भीतर बाहर लपलपात जीभ से भींगल ओठ के ओही टुकड़ा से पोछ देत रहे ।''

कहानी 'छूमंतर' में एक वाक्य बा, 'हमरा एगारह पेंड़ आम के बा । कवनो-कवनो दू-चार साल ना फरस तब का हमरा चाहे ओहनी के कटवा दीं? 'अउरी इहो' कहानी में ई प्रचलित कविता के समावेश मनभावन लागत बा– ''अस्सी कोस के पोखरा, चौरासी कोस के घाट । बजर पड़े ऊ पोखरा कि पंडुक प्यासल जास ।'' कहानी 'सही खातिर गलत' में अच्छा संदेश बा कि नीक काम खातिर साधन भा तरीका खराब ना अपनावे के चाहीं।

अगर मन से पढ़ल जाय तब ई कथा-संग्रह पढ़े योग्य बा काहे से कि एह में गांव के हू-बहू वर्णन बा । वार्त्तालाप के सही ढंग से उकेरल बा, पात्रन के सजीव चित्रण बा. अधिकांश कहानीन में ग्रामीण परिवेश के ही दरसावल बा। एह से पूरा संग्रह पढ़ला से लागत बा कि ग्रामीण क्षेत्र में विचरन कर रहल बानी जा...आ उहवाँ के रंग-ढंग से वाकिफ हो रहल बानी जा । एह कथा-संग्रह के पढ़ल जरूरी बा। एकरा साथ ही हम चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह के बधाई देत बानी आ अभिनंदित करत बानी कि प्रयास होत रहे भोजपुरी कथा के कोहनूर प्राप्त करे खातिर । भोजपुरी के सुदृढ़ करे में उहां के लागल रहीं । कथा संग्रह में कुल 17 गो कहानी बाड़ीस ।

कहानी सब कहां से, कब आ कौन पत्रिका में प्रकाशित भइलं रहीस एकर उल्लेख बा । ई जरूरी रहे ।

-25 फौजाबगान, बारीडीह, जमशेदपुर

www.bhojpurisahityangan.com

सही मंजिल : एगो सफल कहानी संग्रह

—अशेष, जमशेदपुर

''सही मंजिल'' कथा-संग्रह में संकलित नदी के किनारा, कटहर, धोबियापाट, बाकिर, को बड़ छोट, आ ई काह' के छोड़ के धूर, भइया, बड़े भाई, एक कदम नजदीक, साधु, किरदार, छूमंतर, अउर इहो, सही खातिर गलत, देशद्रोही, सही मंजिल, चीख नामक कहानियन में गँवई समाज में व्याप्त आर्थिक वैषम्य, जातिगत भेद-भाव, बड़ जोतदारन द्वारा अपना से नीच जातियन आ गरीबन के शोषण, तरह-तरह के सामाजिक आ आर्थिक अत्याचार, सामाजिक न्याय के नाँव पर ठाढ़ संस्थन के आड़ में हो रहल गरीब जन-सामान्य के भय दोहन, स्वार्थी आ अराजक तत्वन से पुलिस-प्रशासन के साँठ-गाँठ के फल भोगत बेकसूर जन-जीवन, मुखिया के चुनाव में व्याप्त धाँधली, बरजोरी, बदला के भावना से ग्रस्त राजनीति, स्वास्थ केंद्र-उपकेन्द्र में व्याप्त भ्रष्टाचार, डाक्टरन के गैरहाजिरी, दवाइयन के चोर बिक्री, बंदरबांट, पुलिस-स्टेशन- ब्लाक आदि सरकारी कार्यालयन में व्याप्त दलाली आ घुसखोरी आदि के यथार्थ चित्रण भइल बा ।

अइसे त ''सही मंजिल'' कहानी-संग्रह में संकलित सगरो कहानी अपना परिवेश, केन्द्रिय समस्या आ ओकरा के अभिव्यक्त करे में काफी हद तक सफल बाड़ीस बाकिर देशद्रोही, सही मंजिल आ चीख सर्वाधिक सशक्त आ प्रभावोत्पादक बन पड़ल बा। वर्तमान परिवेश के चित्रण के दृष्टिकोण से इनहन के प्रतिनिधि कहानी कहल जा सकेला। जहाँ तक लेखक के व्यक्तिगत दृष्टिकोण के जानकारी के प्रश्न बा, सही मंजिल के चुनाव, लेखक के व्यक्तिगत पसंद की ओर संकेत करत बा । एह से लेखक के व्यक्तिगत दृष्टिकोण के अध्ययन खातिर एह शीर्षक कहानी के आद्योपांत विश्लेषण आवश्यक बा।

सही मंजिल

(क) कथा वस्तु–सही मंजिल के कथावस्तु एगो निठाह गरीब के नवजवान बेटी पियरिया आ बाबुधन के विजातीय प्रेम-विवाह से उठल समस्या से संबन्धित बा ।

1. बाबुधन पियरिया के बिआह के ले आइल । 2. पंचायत भइल । 3. पियरिया के परिचय जात-हित-यार-[illegible] सब गरीब । 4. चाय के दुकान में काम करे वाला लइका तक पाँच-दस हजार रूपया के तीलक माँगत बा ।
5. रतन, पियरिया के फुफेरा भाई के गोतिया-हिरणपुर हटिया में भेंट-घर जाये के प्रस्ताव । 6. लखनऊ में धनी से मुफ्त शादी के प्रस्ताव-मजबूरी में स्वीकृति-मंदिर में विवाह । 7. बस धरे के बेरा दारोगा फोर्स सहित आके गिरफ्तार करत बाड़े-कइया के घर के पता करे के वादा । 8. मुखिया के अनुशंसा पर पियरिया पार्टी में । प्रशिक्षण के समय बाबूधन से परिचय । जीवन-स्तर समान । 9. अमूर्त आकर्षण-प्रेम में परिणति । 10. पार्टी में पता आ पार्टी-कार्यालय में विवाद । 11. विजातीय विवाह के नाते सामाजिक अस्वीकृति । संक्षेप में सही मंजिल के इहे कहानी बिया ।

(ख) कथा – शिल्प आ वस्तु–संगठन– 'सही मंजिल' के कथावस्तु शिल्प के दृष्टिकोण से काफी मार्मिक, यथार्थ के कठोर भूमि पर खाढ़, नया मूल्यन के खोज करत, भोगल जिंदगी के सहज अभिव्यक्ति से ओत-प्रोत, काफी स्वाभाविक आ जीवंत बा । नन्हीं चुकी कथा-वस्तु में पुलिस-प्रशासन के आ सामाजिक यथार्थ के तमाम दृश्य एक सूत्र में पिरो के उतारल बाड़ीस। एह तरह से विचार कइला पर ई यथार्थवादी दृष्टिकोण वाली कहानी बिआ ।

आर्थिक विषमता-आ दहेज एह कहानी के केन्द्र बिन्दु बा । गरीबो गरीब से दहेज मांग रहल बा । गरीब, गरीब के फुसला के ठगवा रहल बा । रतन के काम पर विचार करत ई साफ होता । विवाह के आड़ में पियरिया के बेचे के योजना टूटत मानव-मूल्य आ

www.bhojpurisahityangan.com

स्वार्थ लोलुपता के अपराधिक दृष्टि उपस्थित करत बा । छोटका मालिक के पियरिया के प्रति दृष्टि गाँव के गरीब के साथ नवधनिकन के गलत आचरण के तरफ संकेत करत बा। इहे कारन बा कि पियरिया-बाबूधन दूनो उनकरा (पंचायत) प्रस्ताव के ठुकरा देत बाड़न स ।

आदर्शवादी दृष्टिकोण-कटहर, धूर, देशद्रोही, चीख, एक कदम नजदीक आदि कहानियन में कहानीकार के दृष्टिकोण प्रधान रूप से यथार्थवादी बा । बाकिर देशद्रोही में आके ''अच्छा के फल सदैव अच्छा आ बुरा के फल सदैव बुरा होला'' लेखक के ई धरणा काफी आहत भइल बा। फलतः 'चीख' में अन्याय के प्रति संकेत प्रतिक्रियावादी रूख के दर्शन स्पष्ट देत बा। बाकिर जुल्म के विरोध में व्यक्ति विशेष के आवाज तबले शक्तिशाली ना होखी जबले कि सामूहिक चेतना के स्वर ओकर साथ ना दीं तुलनात्मक रूप से काफी कमजोर बा बाकिर ओकर बलिदानी प्रयास व्यर्थ नइखे जात । ओकर नितांत कमजोर चीख, असमर्थ चीख अतना बारूदी बा कि गाँव के सगरो लोगन के हृदय में क्रान्ति के ज्वाला धधका देति बा। लेकिन प्रतिक्रियात्मक आचार से समस्या के स्थायी समाधान संभव नइखे। एके काव्यात्मक आक्रोश कहल जा सकेला जवना के अंकुर निसंदेह रूप से यथार्थ-भूमि से अंखुआला बाकिर ऊ जीवन के यथार्थ ना हो सके । 'सही मंजिल' में कहानीकार के दृष्टिकोण काफी व्यवहारिक, तर्कसंगत, परिपक्व आ आदर्शोन्मुखी बा । वास्तव में यथार्थवाद व्यक्ति के निराशावादी बना देला, एह से मानव चरित्र पर से व्यक्ति के विश्वास हटे लागेला, ओके अपना चारो ओर बुराइए बुराई देखे लागेला, एह से यथार्थ के आदर्शवादी होखे के चाहीं ।

प्रस्तुत पुस्तक के अन्य यथार्थवादी कहानियन में जीवन के विषय, परिस्थिति, असफलता आदि के अनुभव से लेखक के आदर्शवादी आस्था खंडित दिखाई देता बाकिर 'सही मंजिल' में ओकर आदर्शवाद सबल रूप में सोझे आवत बा । जहवाँ आउर कहानियन में मुखिया आ पुलिस प्रशासन के साँठ-गाँठ से गरीब, कमजोर जनसामान्य के शोषण आ दमन हो रहल बा उहें 'सही मंजिल' में मुखिया के प्रयास से पियरिया के रतन के फरेब से मुक्ति मिल सकल बा । पूर्ववर्ती कहानियन में सामाजिक संगठन के आड़ में सामाजिक जुलुमन का पोषक रस प्राप्त होता ओहिजे 'सही मंजिल' में मुखिया के सामाजिक न्याय के पार्टी एगो आदर्श समाजसेविका के आदश ब। जवना के प्रयास आ सहारा से बाबूधन आ सत्य के समर्थन में सामूहिक चेतना के सहयोगी मनोवृति के विकास परिलक्षित हो रहल बा। ईहे कारण बा कि पियरिया के बिबाह के विरोध में पंचायत के निर्णय के संदेश सुनावे आइल छोटका मालिक के एगो चमचा जब कहत बा 'मुर्दा के घर में राखल ठीक ना होखे ।'

'अबहीं त अकेले बाड़न स बाद में कवनो दुश्मन के छत्रछाया मिल जाई' त छोटका मलिक एकरे उत्तर में जबाब देके सोचत बाड़े कि एहनी के आग लगा के हाथ सेंकल चाहेलेस । जानेली चिलम जिनका पर बोझला अंगारा.....।'' एह से स्पष्ट बा कि ओह गाँव में बाबूधन आ पियरिया के प्रेम-बिबाह आ मुखिया के पार्टी-संगठन के प्रति लोगन के मन में सकारात्मक दृष्किोण आ आस्था बा ।

'सही मंजिल' के नारी पात्र पियरिया द्वारा पार्टी के सदस्यता स्वीकार कइला के घटना नारी के क्रांतिकारी विचार-धारा के दृष्टांत बा । ऊ निर्भीकता के मूर्ति बा । छोटका मालिक आ उनके चमचन के बीच घेराइल बाबूधन के ऊ चील के तरे झपटा मारि के खींच ले आवति बा, आ फुफकार के कहति बा -''रउवा सभे जाईं । रहे भा जाये के निर्णय हमनी का करब जा । आदमी कवनो जानवर ना ह कि केहू हाँक दी, भगा दी । ''

बाबूधन आ पियरिया आदर्श दाम्पत्य के परतोष बाड़े । पत्नी खाती साथी शब्द संबोधन करके लेखक पति-पत्नी के बीच प्रेमपूर्ण समताबादी संबंध के समर्थन कइले बा । ई दृष्टिकोण नारी के प्रति आधुनिक किंतु आर्शवादी कहल जाई ।

(ग) उद्देश्य-'सही मंजिल' कहानी के उद्देश्य काफी स्पष्ट बा । संक्षेप में, प्रतिकूलो

www.bhojpurisahityangan.com

परिस्थितयन में धैर्यपूर्वक गँवई मानसिकता में परिवर्त्तन के आवश्यकता, प्रगतिशील आ मानव-समतावादी नवीन आदर्श मूल्यन के स्थापना एह कहानी के उद्देश्य बा । एकरा खातिर धैर्य, त्याग, जागरूकता आ संठनात्मक प्रयास के आवश्यकता परिलक्षित होत बा ।

(घ) **शीर्षक**- रचना विशेष के कुँजी, तमाम अदृश्य पक्षन के उद्घाटन, रचनाकार के मूल दृष्टि, प्रतिष्ठा आ समाहार शक्ति के परिचायक, रचना मूल्यन के मुख्याधार, सार्थक आ सफल बा । एह में कलात्मकता बा ।

(ङ) **भाषा अ शैली**- 'सही मंजिल' के भाषा काफी परिनिष्ठत, परिमार्जित, परिष्कृत आ खाँटी भोजपुरी बा । एके भोजपुरी के मानक भाषा के एगो दृष्टांत कहल जा सकेला । मुहाबरन के प्रयोग भाषा में सौन्दर्य आ काव्यात्मकता ला देले बा । उदाहरण खातिर 'सही मंजिल' में कुछ मुहाबरन के बानगी देखीं (1) आंही आगा बेना के बतास (2) बड़का मारेला त दुलरवो करेला (3)जानेली चिलम जिनका पर अंगारा बोझाला (4) ना नव मन तेल होई, ना राधा नचिहें (5) ऊँच-नीच लात पड़ जाई (6) नाक कट जाई (7) मंगनी के बैल के दाँत ना देखल जाय, आदि ।

जहाँ तक शैली के सवाल बा, आधुनिक कहानीयन से दूर बाकी काफी आकर्षक, वस्तु संचयन के आतिरकता, पात्र योजना आ उनके क्रिया-बेवहार के बीच एकर स्थापना के दृष्टि से सफल बा ।

संक्षेप में 'सही मंजिल' के कहानीकार अपने सही मंजिल 'के तलाश में लक्ष्य प्राप्त बा । कहानी के कथावस्तु, परिवेश, उद्देश्य, अभिव्यक्ति, भाषा-प्रयोग के दृष्टिकोण से ई एगो सफल कहानी संग्रह कहल जाई ।

मत-सम्मत

● भोजपुरी के बहुचर्चित आ बहुत पहिले से लिखत कथाकार चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह के कहानियन के एह संग्रह में उहाँ के सन 1967 से 1978 तक के काल-आयाम के भोजपुरी जनपद के सामाजिक आ आर्थिक चेतना स्थापित हो रहल बा, जवना के माध्यम से कथाकार समस्यन के देखे के एगो नया दृष्टि दे रहल बा । कथा ग्रामीण अंचल के उजागर करे में सफल बाड़ी सन। चौधरी जी के कथा-शिल्प के बुनावट बहुत कसल नाहीयो होके स्वाभाविक गति लेले बा जे चरित्र-चित्रण, कथा-सूत्र के विकास भा वातावरण के सृजन में कवनों बाधा नइखे डालत । पुरान भोजपुरी लेखक के भाषा कथा के अनुरूप बा । चौधरी जी के एह 'बड़प्पन' खातिर बधाई !

-नागेन्द्र प्रसाद सिंह

15.2.93 नया टोला, पटना-4 सम्पादक-मासिक 'भोजपुरी उचार'

● चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह एगो अइसन नाँव बा जवन 'भोजपुरी कहानी' का विकास का जवरे जुटल मानल जा सकेला । हमरा जाने अइसन कवनो भोजपुरी पत्र-पत्रिका नइखे, जवना के ई नाँव शोभा ना बढ़वले होखे। सबसे ढेर कहानी केहू के यदि छपल बा- त चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह के । ढेर लिखला पर कुछ ढील-ढाल शिल्प आ जाये के गुंजाइश रहेला बाकी चौधरी के लेखनी भरसक एह संभावना से बचल बिया। इनकर कथानक सबके समेटले बा- गाँव, शहर, कस्बा से लेके आदिवासियन के मानसिकता तक इनका कहानियन में बटुराइल बा । 'बड़प्पन' जइसन कहानियन में आज का आम आदमी

www.bhojpurisahityangan.com

के मन के एगो जागत रूपो उभरल बा, जवना में ऊ अपना घृणा के अब तोप के राखे का स्थिति में नइखे रहत। युग के चेतना चौधरी जी का पात्रन में साफ झलकता । मानव मन आ आजका जिनगी के रूप-रंग अपना सभ भाव-अभाव का सँगे चौधरीजी के कहानियन में उजागर भइल बा ।

इनका कहानियन के कई एक संग्रह निकल जाए के चाहत रहे । इनकर कई एक संग्रह निकले, ई भोजपुरी कहानी साहित्य खातिर बड़ शुभ बात होई । 'बड़प्पन' (कहानी संग्रह) का भोजपुरी जगत में काफी सराहना मिली ।

—ब्रजकिशोर
संपादक-'भोजपुरी कथा-कहानी'
1.4.79, महेन्द्रू, पटना-6

● चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह के कहानी (देशद्रोही) त समाज में रोजे घटित हो रहल बा । — ब्रमेश्वर सिंह, भोजपुरी बार्ता, मार्च-जून 1993.

● हम 'सही मंजिल' पढ़ गइनी । पहिलकी कहानी 'नदी के किनारा' में भूत-प्रेत संबंधी ओह परम्परागत लोक-विश्वास के चित्रण बाटे, जे आज ले कायम बाटे । दोसरकी कहानी में ई नजर आवत बाटे कि जमींदारी व्यवस्था टूटलो पर जवन सरकारी व्यवस्था बाटे ऊ ओकरे बदलल रूप बाटे । ई एगो यथार्थबादी कहानी बाटे । 'धोबियापाट' में देहात के दावपेंच के तसबीर बाटे । अनेक कहानियन में सरकारी तंत्र में घूसखोरी, गाँवन के गरीबी आ उहाँ का छल-प्रपंच, ईर्ष्या-द्वेष, बरियार के कमजोर पर जोर-जुलुम के तसबीर बाटे ।

अंत में हम ई कहे के चाहत बानी कि कहानियन में ग्राम्यजीवन के यथार्थवादी चित्रण बाटे । जवना से ई खुलासा मालूम हो रहल बाटे कि गाँवन में युग के प्रभाव आपन करिश्मा देखावे में सफल नइखे । कहानीकार में थोर शब्दन में बहुत कुछ कहे के खेमात बाटे । भाषा आसान आ जहाँ-तहाँ ठेठ शब्दन के प्रयोग बाटे । एह सफल कृति लागि बधाई

— गणेश चौबे

● चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह के कहानी 'देशद्रोही' उत्तम कोटि के बा । नायक अवध के मानसिकता के कइसे तुरल आज बा , ओकरा प्रगतिशील स्वभाव के कइसे धज्जी उड़ावल जात बा आ अंत में ओकर आत्मसमर्पण करा के अपना में मिला लियाता, इहे कहानी में देखाववल गइल बा । ई कहानी कमजोर बर्ग के तुरे के प्रक्रिया के दस्तावेज बा।

— श्रीकांत सिंह, भोजपुरी वार्त्ता, पटना-नव 94

● हम 'सही मंजिल पढ़ि गइलीं । सभे कहानी यथार्थ की पृष्ठभूमि पर सरल, सुबोध भाषा में सजल-संवारल बाड़ी स । एमें प्रकृति के भी छटा जहाँ तहाँ बिखरल बा आ गाँव के विकृतियन के उजागर कइल गइल बा । इन्हन में एगो आकर्षण के साथे साथे अइसन लागत बा कि ई कुल्हि घटना हमरा आँखन के सोझा घटल बा। बाकी केवनो केवनो कहानी लमहर आ ऊबाऊ बा। ''अउर इहो'' लम्बी बा । ''सही मंजिल '' प्रशंसनीय बा । ओह में कथानक के निर्वाह बहुत ढंग से भइल बा । ''चीख'' में रामाधार के अक्खड़पन

www.bhojpurisahityangan.com

आ परापकार के भावना, अत्याचार का प्रतिकार के भावना के प्रस्तुत कइल बा जवन प्राचीन आदर्श ह । ''बड़ भैया'' के अक्खड़पनो नीक लागल । धोबिया पाटो रउवा पढ़ाइले । गाँव के यथार्थ चित्र ह। गाँव में अबहियो विद्रोह के भावना के दबाये के कमी नइखे । बड़कुवा आदमी अपना जोर से अबहियो कमजोर के दबा देत बाड़न ।

– डॉ० लक्ष्मी शंकर त्रिवेदी
6.4.95, नरही, बलिया ।

● 'सही मंजिल' के सतरहो कहानी के कथानक गाँव से जुड़ल बा । कुछ कहानिन में स्वार्थी अफसरन के घिनौना चित्र बा जे दलिदरों से घूस में दू खिल्ली पान तक माँगत बा आ जब ओकरा आवँग नइखे त ओकर तुरल कटहर जीप पर लाद लेत बा । ऊ गरीब ओकरा नाम पर पच से थूक देत बा । असही कुछ कहानिन में बैलन के प्रति गाँव के लोग के मोह-माया, कुछ में हास्य-विनोद, कुछ में तिलक-दहेज के समस्या आ कुछ में भूत-प्रेत (परी) के चर्चा बा ।

कहानिन के कथानक साँचा में ढालल बा । उपदेश सीधे ना कहके घुमाफिरा के कहल बा आ एह से ऊ बाउर नइखे लागत । कहानिन के कुल प्रभाव (प्रभावान्विति) अंत में एक-दू वाक्य में सिमट गइल बा । मथेला छोटे-छोटे बा जइसे गेन्दा के फूल । करीब-करीब सभी कहानिन में वस्तु आ कला में बाजी लागल बा-वस्तु चाहत बिया कि हम आगें निकलीं त कला चाहत बिया कि हम ।

कहानिन में कहानीकार के संवेदनशीलता, भावुकता आ आत्मीयता भी बहुत बड़ चीज बा ।

– भुवनेश्वर सिंह,
हिन्दी अध्यपक, रा० रा० उच्च विद्यालय, सूर्यपुरा-रोहतास

● ''सोना के कंगना'' पढ़ के सिहर गइनी । काफी यथार्थ चित्र प्रस्तुत भइल बा । समाज में पइसल लोभ, शोषण आ दानवता के हर रूपन के एही तरे सोझा ले आवे के कोशिश करीं । परम्परावादी ठाकुर के शोषण त शायद अब बितल बाति हो गइल । शोषण के नया रूप अब साहित्यकार पकड़सु, इहें निहोरा बा । *-राबि-कुसुरुपा, बक्सर । 13.1.95*

● कहानी 'सोना के कंगना' पढ़िके हम आनंद विभोर हो गइनी । ओह में समाज के वास्तविकता के झलक बा । ऊ कहानी आज के नवयुवकन के प्रेरणा के स्रोत बा ।

-विजय शंकर चौबे, सोनबरसा, बक्सर। 23.2.95

● ''सोना के कंगना'' मर्द के स्वार्थपरता के अपना ढंग से उजागर करता । अपना स्वार्थ के पूर्ति खातिर नारी के पीड़ा के केहू नइखे अनुभव करत । ना हीरझरिया के पीड़ा ओकर ससुर ना अपना मेहरारू के पीड़ा महेश।

–रामनाथ पाडेय, भो.; वार्त्ता पटना, अं० 3, मार्च 95, ।

● 'सोना के कंगना' आजु के समाज के दहेज प्रथा के शव-परीक्षा प्रस्तुत कर रहल बा । -हरिश्चंद विद्यालंकार, भो० वार्त्ता, मार्च 95,

● जिन्दगी में ठोस अनुभव आ अनुभूति रउरा पासे बा । एह युग के पीड़ा के रउरा ठीक से बुझलने बानी । ओकरे के अपना रचनन में रउरा उजागर करीला । रउरा सभ कृतियन से हम प्रभावित रहल बानी। युग के पीड़ा-समस्या रउरा रचनन में बोल रहल बा । – रजनीकांत राकेश ।

● 'सोना के कंगना' मन के आपन बना लेलस । कई बेरा पढ़नी जा, हमार बेटियो बड़ा चाव से पढ़ल । -लाखो देवी 'कमपढ़ी', भो० वार्त्ता,

● 'सोना के कंगना' में लइका के बाप के दावपेच, शोषण के आ लइकी के बाप के लाचारी के यथार्थ चित्र उरेहल गइल बा ।

–श्री राम सिंह 'उदय', बाँसडीह बलिया, उ०प्र०

● ''सोना के कंगना'' पढ़लीं । अच्छा लागल । भाई जी रउवा से एगो अनुरोध बा, कहानिया थोड़ा रउवा से मेहनत के माँग करतिया । हमरा बुझात बा कि एकशुरिये

www.bhojpurisahityangan.com

एकबेरा में लिख के भेजाइल बा ।

—कृष्णानंद कृष्ण, पटना, 10.2.95

● ''सही मंजिल'' आ 'बड़प्पन' के कहानियन में सही जिंदगी के उरेह कइल गइल बा ।

—राम लखन विद्यार्थी, घुसियाँ कला, रोहतास, 6.10.94

● 'सही मंजिल'' एगो आम आदमी के सही मंजिल बा । ओके पढ़ि के एगो नया गति, दिशा आ शक्ति क बोध भइल ।

—भोला प्रसाद 'आग्नेय', बलिया, उ०प्र० 3.1.95

● ''बड़प्पन'' पढ गइनीह । ''लहसन'' कहानी बहुत अच्छा लागल । रउवा ''सही मंजिल'' से अधिक एह कहानियन में जमल बानीं । सब कहानी आपन आपन स्वर पाठकन के देके तृप्त कर देत बाड़ेस। एक्कावान कतना ईमानदार बा । जे भड़ो नइखे लेत । हमरा गाँव में अइसन डाक्टर पशु अस्पताल में आइल बा । सरल पशुवन के सूई घोप के पचासों रूपया, ऐंठ लेत बा । ——ऊ बेहया ह ।

— डा० लक्ष्मी शंकर त्रिवेदी, नरही, बलिया, उ०प्र० 22.4.95

● ''सही मंजिल'' डॉ० सलिल जी के माध्यम से मिलल । अपना माटी के महक से सराबोर कहानी पढ़ के मन प्रसन्न हो गइल । चुस्त, सहज, सजीव रचना के वास्ते साधुवाद । कहानियन का माध्यम से समाज में फइलल भ्रष्टाचार के सजीव चित्रण एतना जीवंत लागल कि एके बइठकी में पुरा के पुरा किताब पढ़ि गइनी । भोजपुरी के एतना रूचिगर किताब बहुत कम प्रकाश में आइल बाटे ——छपाई में कुछ भूल रह गइल बा ।

—रघुनाथ प्रसाद, जादूगोड़ा, पू० सिंहभूम, बिहार, 20.3.96,

● राउर कहानी- संग्रह बड़प्पन आ सही मंजिल पढ़ गइनी । कहानी बेजोड़ बाड़ीसन । कहीं छूट नइखे झावत । शुरू कइला पर अंत कके छोड़े के पड़ता । सब में कत्थ आ तत्थ भरल बाटे । कटहर त साइत अपने ऊपर व्यंग्य त नइखे । कहानी पढ़ला के बाद इहे मालूम होता कि ई कहानीकार एगो सफल कहानीकार बाटे । कहीं कहीं मुहाबरा त कहीं कहीं उपदेश बाड़े सन । कहीं कहीं सूक्तीयो देहल गइल बाटे । इहो अच्छा बनल बाड़ेसन ।

—जनार्दन पांडे ''विप्र'' 25.12.96

● ''बड़प्पन'' आ 'सही मंजिल' दूनो किताब पढ़लीं । एकरा पहिले हम ई ना जानत रहीं कि रावाँ कहानी संग्रह निकलले बानीं । पत्रिकन में ढेर लोग के नाँव छपल बाकिर रउरा बड़प्पन आ सही मंजिल के कवनो बरनन हमरा देखे में ना आइल । बात दूइए बा या त कुढ़न या अज्ञान । हमरा सही पता बा कि कुछ लोग रावा बढ़ोतरी के ना देखि सकसु आ उहे लोग छवले बा।

हम पत्रिकन में बहुत लोग के कहानी पढ़िला बाकिर सुरेश कांटक भा रामभरोसे (बलिया) के कहानी छोड़ि के दोसरा के एह कहानी के टक्कर लेवे के दम नइखे । कहानी त बहुत लोग लिखेला बाकिर एह जमीन के ना आकाश के बात जवना के जमीन पर कवनो मानही नइखे । राउर कहानी पढ़ला प बुझाता कि ई ओह जमीन के कहानी ह जहाँ के घेरा मानि के लिखल गइल बा । एगो बात अउरी । रावा साधू लोग से जनता के बचावे के कोशिश कइले बानी । बात ई ठीके बा बाकिर सब नदी गंगा ना होखे आ ओकर पानी गंगाजल ना होई । अभी एक से एक साधू बाड़े तबे एह देश के नाव चलतिया। —— कहानी में से ढेर हमरा मन के छू गइलीस आ करेजा खंखोराये लागल। सही बात के उजियार कइला खातिर बधाई ।

—स्वामी फन्दोतीणानंद पुरी, रामडिहरा, रोहतास, बिहार

●

www.bhojpurisahityangan.com

चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह के प्रकाशित/प्रसारित कहानियन के सूची

□ रूचिका रंजन

क्रमांक	कहानी के नाँव	पत्रिका पुस्तक के नाँव	प्रकाशन काल वर्ष/काल	कवना से कवना पृष्ठ पर
1.	अउर इहो	भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका	सितम्बर 92	299 से 308
		(2) सही मंजिल (पु०)	1993	55 से 64
2.	अंदर से बाहर	भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका	8/7	9 से 23
3.	अनुमान	भोजपुरी जनपद	2/1 मार्च 1998	.....
		(2) बड़प्पन (पु०)	1990	98 से 102
4.	अब ना होई	आरती (आकाशवाणी,पटना)	1982	.....
		(2) बड़प्पन (पु०)	1990	7 से 13
5.	अलग अलग मजबूरी-	लुकार	मई 1984 (24)	2 से 8
		(2) बड़प्पन (पु०)	1990	36 से 44
6.	अलग हट के	आरती (आकाशवाणी, पटना)		.....
7.	असली बात	आरती (आकाशवाणी, पटना)		.....
8.	आजादी	दिआ-सावन भादो	1885(4)	.....
		(2) बड़प्पन (पु०)	1990	90 से 97
9.	आपन हारल	आरती (आकाशवाणी, पटना)		.....
10.	इज्जतदार आदमी	भोजपुरी संसार	अगस्त 1977	17 से 21
11.	इंतजारी	आरती (आकाशवाणी, पटना)		.....
12.	ई का ह	उरेह	4/2	51 से 55
		सही मंजिल (पु०)	1993	19-23
13.	ई साधू के काम ह-	भोजपुरी परिवार पत्रिका	1983	41 से 42
14.	उत्प्रेरक	भोजपुरी कथा कहानी	1999	.....
15.	एक कदम नजदीक सासरी		जनवरी 82(4)	21 से 23 आ 25 से 26
16.	एक नारी दू रूप	भोजपुरी जनपद (प्रेम-कथा-अंक)		.....
17.	एक बार फेर	जनता ललकार	8/7(अग० 84)	5 से 9
18.	एगो ताना, एगो हठ-	बटोहिया-जन	मार्च 95(3)	3 से 6
19.	एगो भोर	भोजपुरी कहानियाँ	9:5 (नवम्बर 1972)	25 से 28
20.	एह हाथ दे ओह हाथ ले-	भोजपुरी कहानियाँ	दिसम्बर 1973	20 से 24
21.	कटहर	भोजपुरी कहानियाँ	6:8 (अग० सित० 1970)	21 से 25
		(2) सही मंजिल (पु०)	1993	4 से 9
22.	कहीं भला	बड़प्पन (पु०)	1990	14 से 23
23.	कांके देख लेनी	कलश	2:7 (जुला० 1979)	19 से 20
24.	किरदार	कोइल	5 (अक्टु० नव० 1991)	22 से 24
25.	कृतघ्न	भोजपुरी कहानियाँ	10:11	13 से 16
26.	कोंट से मंदागिनी	झनकार	.....	.....
		(2) बड़प्पन (पु०)	1990	45 से 51
27.	को बड़ छोट	भोजपुरी कथा कहानी	1:1 (जन० 1978)	20 से 28

www.bhojpurisahityangan.com

		(2) सही मंजिल (पु०)	1993	14 से 18
28.	खन्दान के इज्जत - भोजपुरी कहानियाँ		जन० 67	36 से 38
29.	खुटिया खास	भोजपुरी कथा कहानी	.....	.....
30.	खेला खतम	भोजपुरी वार्त्ता	3:8 (नव० 1995)	17
31.	खैरात	भोजपुरी कथा कहानी	4:12	9 से 18
32.	गलत विरासत	चाक	2 (जून 64)	7 से 11
		(2) बड़प्पन (पु०)	1990	52 से 61
33.	गोड़ाव	अंजोर	.....	.....
34.	चीख	लहार	1993	86 से 93
35.	चुगली	भोजपुरी कथा कहानी	.....	.....
36.	चुनाव	चाक	1:1 (मार्च 82)	19 से 22
37.	चोट	माई के बोली	.....	.....
38.	छू-मंतर	ईगुर	2:3 (जन० फर० 92)	30 से 31
		(2) सही मंजिल (पु०)	1993	52 से 54
39.	जिनगी के आधार - भोजपुरी कहानियाँ		9:8	28 से 32
40.	ठेस	भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका	9:10 (अक्टु० 98)	15 से 21
41.	डंका के चोट पर	आरती (आ०वाणी, पटना)	मार्च 1981	.....
		(2) बड़प्पन (पु०)	1980	76 से 32
42.	डाक्टर साहब	भोजपुरी कहानियाँ	7:11-12	67 से 70 आ 72
43.	तिनका	भोजपुरी कहानियाँ	.....	.....
44.	तीन सो रूपया	आरती (आकाशवाणी, पटना)		.....
45.	दईत	भोजपुरी कहानियाँ	.....	.....
46.	दरोगा कि दरोगी	भोजपुरी कहानियाँ	.....	.....
47.	दस्तक	बयार	1:2	40 से 44
48.	दहशत भरल सन्नाटा - जनता ललकार		.....	.....
49.	देशद्रोही	भोजपुरी वार्त्ता	1:2 (फर० 93)	14 से 15
		(2) सही मंजिल (पु०)	1993	73 से 78
50.	देशभक्ति	भोजपुरी कहानियाँ (अक्टू० 1974)		.....
51.	दोसरका मोड	भोजपुरी कहानियाँ	.....	.....
52.	धार में बहुत जिंदगी - भोजपुरी कहानियाँ		.....	.....
53.	धूम्रपान निषेध	भोजपुरी कहानियाँ	5:8 (जुल० 69)	62 से 64
54.	धूर	डेग	3 (जन० 80)	.....
		(2) सही मंजिल (पु०)	1993	10 से 13
55.	धोबियापाट	उरेह	2:3	69 से 72
		(2) सही मंजिल (पु०)	1993	10 से 13
56.	नदी के किनारा	भोजपुरी कहानिया	6:5	17 से 19
57.	पधेया जी	भोजपुरी जनपद	1:3-14	8 से 9 आ 10
58.	परकटा पंछड़ी	जनता ललकार	12:1-12	9 से 10 आ 15
		(2) बड़प्पन (पु०)	1990	24 से 29
59.	पहचान	भोजपुरी जनपद	8:1 (अप० 76)	13 से 14 आ 15
60.	पागल	भोजपुरी कहानियाँ	5:4 (जन० 69)	46 से 49
61.	पावनफूल	भोजपुरी कहानियाँ	अक्टु० 1947	.....

www.bhojpurisahityangan.com

62.	पूजा	भोजपुरी कहानियाँ	———	———
63.	बड़प्पन	भोजपुरी कहानियाँ	जुला० 1969	———
		(2) बड़प्पन (पु०)	1990	1 से 6
		(3) सेंसर कहानी भोजपुरी के (पु०) (4) प्रतिनिधि कहानियाँ (पु०)		
64.	बड़े भाई	तरई	1:2	11 से 14
		(2) सही मंजिल (पु०)	1993	32 से 36
65.	बरियारी	भोजपुरी कहानियाँ	1967	———
66.	बेगुनाह	अकादमी पत्रिका	1:2	59 से 63
67.	बोका मास्टर	भोजपुरी कहानियाँ	———	———
68.	भइया	जोखिम	2:3 (सित० 81)	20 से 32
69.	भर घड़ा ओस	गाँवघर	अंक 20, 21	13 से 16
70.	मंथरा	भो० सम्मेलन पत्रिका	5:4 (अग० 94)	143 से 148
71.	मनुदा के लोटा	भो० जनपद	1:7	13 से 16
72.	मियाँ के जुती मियाँ के सर - बिगुल		जन० जु० 1994	48 से 49
		(2) तिरमिरी (पु०)	———	———
73.	मुखौटावाला	भो० कथा कहानी	1999	———
74.	मुंशीजी	भो० कहानी	1967	———
75.	मोल	आरती (आ० वा०, पटना)	4.9.81	———
		(2) बड़प्पन (पु०)	1990	70 से 75
76.	लोर के लकीर	गाँवघर	———	———
77.	लग्यक उत्तराधिकारी - भोर स० पत्रिका		7:12	19 से 20
		एक मुट्ठी लाई (पु०)	1997	19 से 20
78.	सत्यमेव जयते	भो० रा० पत्रिका	8:12 - 12	64 से 68
		(2) भोजपुरी कहानी हाल साल के (पु०)	1998	64 से 68
79.	समझौता	भो० कहानियाँ	12:2	55 से 60
80.	सवाल	भोजपुरी उचार	———	———
81.	सही खातिर गलत - दियरी		———	———
		(2) सही मंजिला (पु०)	1993	65 से 72
82.	सही महिल	जगरम	1993	21 से 24
		(2) सही मंजिल (पु०) (3) भोजपुरी विकास चेतना	1993	79 से 85
83.	साधू	जोखिम	3:2	22 से 28
		(2) सही मंजिल (पु०)	1993	42 से 49
84.	सीवान के पतथर	आरती (आ० वा०, पटना)	———	———
		(2) बड़प्पन (पु०)	1990	62 से 69
85.	सोना के कंगना	भो० वार्त्ता	3:1 (जन० 95)	15 से 17
86.	हम ना मानब	भो० वार्त्ता	1:4 (नव० 93)	25 से 26
87	हिसाब	भोजपुरी माटी	जनवरी 1984	———
		(2) बड़प्पन (पु०)	1990	30 से 35
88.	हिमालय बह गइल - भोजपुरी कहानियाँ		———	———
89.	मुठभेड़	भोजपुरी वार्त्ता	अप्रै० मई 1999	12 से 15

www.bhojpurisahityangan.com

चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह

बेगुनाह

www.bhojpurisahityangan.com

www.bhojpurisahityangan.com

पागल

छात्रावास से निकलते खाली जात रेक्सा पर नजर पड़ल । लपक के बिना रोकववले चढ़ गइनी । फिर रेल, फिर मोटर । मोटर अपना चाल से चलत रहे । बाकिर हमरा रह रह के झुझलाहट होत रहे । मरियल घोड़ा पर चढ़ला अस लागत रहे । बुझात रहे कि कइसे उड़ के पहुँच जइतीं ।

एगो अदिमी पूछलस, "अपोलो चान के चक्कर लगा रहल बा ।" ओकर नजर हमरा हाथ के अखबार पर रहे ।

"जवना मोटर में रवाँ चढ़ल बानी ओह में बइठे के जगहे नइखे मिलत। एह पर से उतरला के बाद सब केहू के बैलगाड़ियो ना मिली आ रवाँ अपोलो के बात करत बानी ।" हमरा मन के झुंझलाहट पट दे बहरा निकल गइल जइसे जंगला खोलला पर भीतर जरत बिजली के बल्ब के रोसनी बहरा निकल जाले ।

दउड़त मामी के घर में गइनी । ऊ पलंग पर सुतल कराहत ना रही । घूम के देखनी । ऊ खड़ी में से सेम तूर के फाड़ा में ले ले आवत रही ।

तार मिलते मन में संका भइल रहे । पढ़ियो के विश्वास ना होखत रहे। तोहरे पर संदेह होत रहे कि चाल चलल होइबू । गाँव के बहरिये बस पड़ाव से आवे वाला रस्ता के किनारा तालाब पर, झूठ मूठ के बइठल पथर पर एंड़ी रगड़त आ अपना तरफ देख देख के मुसुकात तोहरा के देख के, तोहार सब चाल हमरा समझ में ओइसहीं आ गइल रहे जइसे थारी में तोप के राखल चीजन पर से केहू तउली उठा दे अउर सब चीज एके नजर में झलक जाय।

दूनो अदिमी हँसे लागल । ओकर हँसी आसपास के वातावरण के गुदगुदा देलस । घनघोर जंगल के बीच में ऊँच पहाड़ी पर से कूद के ठठा के हँसत झरना अस ओकर हँसी रहे । ऊ एक-ब-एक चुप हो गइल । हमहूँ ओकरा साथ हीं चुप हो गइनी । हमरा बुझाइल जइसे हम तेज चाल से भागत साइकिल होखीं अउर केहू दूनो ब्रेक कस के मार देले होखे आ मोमेनटम के चलते एक-ब-एक रूके से पीछे के पहिया अस पीछे से उठ गइल होखीं । मुंह के भरे गिरे गिरे हो गइल होखीं ।

एक-ब-एक चुप होखे के कारन ना समझ में आइल । पूछल चहनी। पूछे के पहिले चारों तरफ देखे लगनी । साइत केहू देखले होखे ? केहू ना रहे । समझ गइनी । केहू नइखे बाकिर एह तरह से ठठा के ना हँसे के चाहत रहे । दूनो आदमी चोरी चोरी मिल रहल बा । रात में आवाज दूर तक ले जाले। केहू सुन ली तब अनेरे में बवाल हो ी । जानत रहीं कि ई बवाल होके रही बाकिर ओकरा के बढ़ावत जात रहीं । हमेसा खातिर टारे खातिर ना बाकिर मन मोताबिक बाताबरन बनावे खातिर । पौधा रात में बढ़ेलनस । हमनी के पेयारो

www.bhojpurisahityangan.com

रात के अन्हरिया में बढ़त रहे । हमरा विश्वास रहे कि एक ना एक दिन जरूर फूली-फरी ।

भोरहरिया के अजान सुनाई पड़ल । अजान के आवाज हवा पर मधुर गीत अइसन लहरात रहे । मन के शांति देत रहे । हमनी के गाँव से ढेर दूर ना रहीं जा । पासे के एगो खंडहर के कोठरी में रहीं जा । भूत-प्रेत के डर से लोग एने ना आवे । चोर-डाकू आवत होइहेंस । कवनो माना नइखे । एही से हम जब एह गाँव में आइला करीब 3-4 बजे रात में लोटा में पानी लेके मर मैदान के बहाना से एहिजा आ जाइला। इनका से कब, कइसे पयार भइल ना कह सकीं । बाकिर अतना जरूर कहब कि हमनी के पहिला भेंट एहिजे भइल रहे । आज ले आगहूं होत रही । आज से पहिलहूँ अजान के आवाज सुन के उठल रहीं जा आ आजो उठनी जा।

आज मन पर दूगो भार मालूम पड़त रहे । एगो रूपा के चउबीस घंटा के बियोग के आ दोसरका ..... ई ना समझ में आवत रहे कि आज अजान के आवाज बहुत मधिम काहे रहे । सोचत सोचत अतना त साफ हो गइल कि आज अजान के आवाज मसजिद के तरफ से ना आवत रहे । तब उसमान बुढ़ऊ अपना घरे में से अजान देत होइहें । जरूर इहे बात हो सकेले । अतना त साफ हो गइल । फिर एकर कारन जाने खातिर मन मचले लागल ।

मामा खाये चल गइल रहन । खरिहान में बइठल जाड़ के घाम के आनंद लेत रहीं । भोजपुरी कहानियाँ के दिसम्बर 1968 के अंक पूरा पढ़ के मने मन सोचत रहीं कि अंक में कवन कहानी सब से ज्यादा सोभाविक बिया?

केहू के बगल के आर पर चलला के आहट मिलल । देखीं त रूपा रही। थोरकी दूर पर बकरिन के झुंड में उसमान बुढ़ऊ छकुनी पर दाढ़ी रखले खाड़ रहन । चाहियो के रूपा से ना बोल सकनी । मुसकाय के रह जाये पड़ल । रूपा बगल के खेत में बइठ के खेसारी के साग खोंटे लगली ।

उसमान के बोलवनी । अपने ओही आरी पर जाके बइठ रहनी जवना खेत में रूपा साग खोंटत रही । उसमान अपना बकरियन के छकुनी से कुछ समझा के, आके, पवलगी कर के हमरा बगल में बइठ रहले । उसमान के उमिर हमरा बाप के बराबर होई । उनकर पैर छूके हमरा प्रनाम करे के चाहीं। हमार मामा एह गाँव के जमीनदार हवन । आजो सबका से ज्यादा धान उपजावेलन आ मोका पड़ला पर रूपया देके सब केहू के इज्जति राख लेलन। एही से उसमान भा दोसरो बड़-बूढ़ लोग हमरा के प्रनाम ना करे देस ।

"पहिले दोसरो के मसजिद में ले जात रहल । का भइल कि अब अपनहीं आज घरे में अजान देत रह ?"

"ई सब मत पूछीं, बबुआ जी ! का दिन रहे आ का हो गइल ।" उसमान के आवाज कांपत रहे । ओह में खीझ, घिरिना, किरोध आ लाचारी के मिलल जुलल भाग रहे । बुझात रहे कि उनका कवनो बात के बहुत दुख होखे। दुनिया भर के लोगन से कह के ओह दुख के कारन के मिटा देल चाहत होखस बाकिर कह पावे में अपना के लाचार बुझत होखस ।

www.bhojpurisahityangan.com

घुसुक के नजदीक हो गइनी । धेयान उसमान पर आ नजर रूपा पर रहे।

'मसजिद धरम के जगह ह । सभ केहू पाक नमाज में भाग लेवे खातिर बटोरात रहे । जेना जात रहे ओकरा के समझा-बुझा के ले गइल मसजिद के मौलाना होखे के नाते हमार फरज रहे ।

जवने दिन देस आजाद भइल तवने दिन पाकिस्तान के जनम भइल । ढेर मुसलमान भाई लोग उहां चल गइलन । हमरो लइका जाये खातिर तइयार हो गइलें स । हम एह माटी के ना छोड़ल चाहत रहीं बाकिर समाज के छोड़ल ना बनल आ हमहू उहां चल गइनी । मुसलमान के देस समझ के गइल रहीं बाकिर मुसलमान के दुरदासा देख के ना रहाइल । करेजा फाटे लागल । बुझात रहे कि दम घुंट रहल बा । एक दिन भाग के चल अइनी ।

कुछ दिन पहिले के बात ह । अजान देनी । लोग जुटल । नमाज के बाद एगो आदमी भाषण देवे लागल । हमरा खातिर एकदम अजनबी रहे । लोग ओकर बात सराह सराह के सुनत रहन । ऊ खाली देसद्रोह के बात बोलत रहे। कुछ बड़-बूढ़ लोग नाक-भौं चमकावत रहन बाकिर केहू कुछ बोलत ना रहे। हम उठ के बोलल चहनी, रोकल चहनी, टोकल चहनी, त धके हमरा के बइठा देलन स ।........।

झूठमूठ के प्रचार कर देलनस कि हमार माथा फिर गइल बा । एक दिन घुमावे के बहाना से ले जाके कांके (राँची) पागलखाना में दे अइलनस । जतने कहीं कि हम पागलाइल नइखीं, ऊ लोग पगलाइल बा जेकि हिन्दुस्तान में रह के पाकिस्तान के सपना देखत बा, ओतने हमरा के तकलीफ देल जाय । हारदाँव के चुप लगा लेनी ।

पागलखाना से आके मसजिद में गइल चहनी तब हमरा के भीतर ना जाये देलनस । तबे से घरे में अजान देइला । एहू के लोग पागलपन कहेला।

"सुनी ला कि रोज नमाज के बाद केहूना केहू अंइसने उकसावेवाली बात करेला । आज काल्ह मसजिद में का का हो रहल बा ? कवनो नेक अदिमी ना कह सके । ......"

"पगला के साथ का कर रहल बाड़ हो ? जा, जइब त बाजार से हो आव ।"

खरिहान में से मामा बोललन । मतलब रहे कि अपना मनलायक अपना खातिर हरियर तरकारी वगैरह ले आव । धेयान टूटल । उठ के घर के तरफ चल देनी । जात जात रूपा पर नजर फेकनी। उनकरो नजर में साफ झलकत रहे कि उसमान सचमुच में पगला गइल बाड़न । साथ ही मसजिद के बारे में जवन कहलन हँ, उहो साँच बा । अलावे कुछ समझ के चल देनी नजरे-नजर में।

—भोजपुरी कहानियाँ 5:4 (जनवरी 1969)
वाराणसी, उ० प्रदेश

●

www.bhojpurisahityangan.com

दईत

"हाय रे ! हमार सोनार बंगला ।"

"काहे ? का भइल ?"

"इहवां जेने देखत बानी, ओनहीं बालू नजर आवत बा । उहंवां के अधो फसल नइखे ।"

"तब काहे भाग अइल ?"

"जान के मोह से ।"

"वाह रे ! तोहार जान । मातृभूमि के छोड़ के भाग आवे वाला कायर। तू कइसे भूल गइल अपना ओह पुरखन के जवन लोग चटगाँव कांड में शहीद भइल रहन । ऊ लोग के आत्मा तोहरा के धिरकारत होई । तोहरा लोग के आपन संतान कहे में सरमात होई।"

कमर में बिहटी आ देह पर फाटल गंजी के छोड़ के कुछ ना रहे । बालू पर धीरे-धीरे सरकत नदी के धारा अस लोर ओकरा गाल पर टघरे लागल । रोवाई के दाब लेले रहे बाकिर लोर ना दबाइल । पोंछे खातिर फाटल गंजी में हाथ लगवलस । हमरा बुझाइल कि फाटल गंजी ओकर लोर के ना पोंछ सकी भले फाट के लटक जरूर जाई । आपन रूमाल ओकरा तरफ बढ़ा देनी ।

"रउवा अभी आग से पाला नइखे पड़ल । चारो तरफ आग लागल होखे तब आदमी ओकरे अंदर बइठ के जर ना जाई बलुक ओकरा भीतर से निकल के बाहर आई आ चारों तरफ से धूर-पानी जुटा के ओकरा के बुतावे के कोसिस करी ।

"पूर्वी बंगाल में आग लागल बा । गाँव-घर, खेत-खरिहान, शहर-देहात सब के सब जर रहल बा । ओकरा के एक जगह से दोसरा जगह तक पहुँचावे के काम पाकिस्तानी सिपाही करत बाड़न स आ ओकरा के खोर-खोर के बढ़ावे के काम पछिम के मुसलमान लोग करत बा । अनजाने में आग लाग जाइत तब गाँवघर के जुटा के बुतावल जाइत बाकिर जब गाँवे के कुछ लोग लगावत रहे अउर सरकार ओह लोग के पीठ पर रहे । ओह लोग के पास हर-हथियार रहे जवकि हमनी के पास कुछ ना । तब भाग के अदिमी जान ना बचाइत तब का करीत ?"

तीर के आगे जाये के पहिले पीछे खींचे के पड़ेला । हमनी के तीर अस छुटब जा आ याहिया खाँ के करेजा में घुस जाइब जा ।

'नइखीं जानत, जान बा त जहान बा । निहत्था कटाये में का मिलित ? दू बून जादा खून बहित अउर का ? सोझ समय भइल आ भगवान साथ देलन तब बांचल अदिमी याहिया खाँ के चिता में हाथ सेंक सकी ।"

बनगामा से बहादुरगंज के तरफ जीप भागल चल जात रहे । बादर के रंग पल-पल पर रूप बदलत रहे । हिमालय के रंग आकास के साथे मिले लागल रहे । कुछ देर में हिमालय के हिगरावल मुश्किल हो जाई । मन में

www.bhojpurisahityangan.com

धोबिनिया शिविर में भइल बात मंड़रात रहे । पूर्वी बंगाल से आइल अदिमियन के अलग राखल जात बा बाकिर का बाद में भी ओहनी के अलग रह जइहेंस ? प्रयाग में गंगा में यमुना के पहिचान हो सकेला; आगे ना ।

"हाकिम ! अच्छा भइल कि रउवा आ गइनी । हम रउवे पास जाये के सोंचत रहीं ।"

"कहीं । का बात ह ?"

"जान जाइब कि धोबिनिया में सात हजार पूर्वी बंगाल के लोग के राखल गइल बा । जब से आइल बाड़न स अतना चोरी बढ़ गइल बा कि मत पूछीं ।"

"अच्छा ई बात बा ।"

खान साहब देह से ना जात से खान हवन । केहू देख के मुंसीजी समझ ले त भूल ना कहाई ।

"बहरा में हर तक छोड़ल मुश्किल हो गइल बा । फार निकाल लेत बाड़न स । राउर ढ़ेर सामान बाहर में पड़ल बा । हमरा रात रात भर जागे पड़त बा । कहीं त घर के अंदर रखवा दीं । ना त कतो उठवा ले जाईं ।"

"हँ ! हँ !! केहू रउरा कटहर के बारे में कहत रहे ।"

"कटहर के का कहत बानी? एक अदिमी के एक बिगहा धान राते भर में काट के राते भर मे मिस लेलन स । कहीं, आसान काम बा एक बिगहा काट के राते भर में मिस लेल ।"

"तब त सब केहू तंग होई ?"

"दोसरा के त छोड़ीं । बिहार सरकार के परती पर के आम के डाढ़ि काटत रहन स। पंचायत सेवक एगो के धर के, शिविर में ले जाके बड़ी मरम्मत करववले रहन। ऊ मार कि मत पूछीं ?"

"ओह से कुछ रूकल ?"

"हरकल मानेला परिकल ना । ओकरे के फेर देखले रहीं - काटत, दोसरे दिन ।"

पीठ के तरफ से केहू के अइला के आहट मिलल । घूम के देखे लगनी तब कान में खान साहब के आवाज पहुँचल, " इहे लकड़ी काटत धराइल रहे।"

हमरा सामने उहे बंगाली रहे जवन कि कुछ दिन पहिले सोनार बंगला के गुन गावत मिलल रहे । खान साहब के बात से एगो जोर के धमाका भइल। हमार विश्वास डोले लागल ।

"जय बंगला ।"

"जय बंगला ।"

"भालो तो ?"

"भालो ।"

"शिविर के लोग के सिकाइत सुने के मिलत बा ।" सीधे पूछे के साहस ना भइल ।

"विभुक्षितं कि न करोति पापं ।"

www.bhojpurisahityangan.com

"एकर मतलब इहे ह कि अदिमी जवना थारी में खाय ओही में छेद कर देव ?"

"ना ।"

"तब ?"

"पहिलें सबसे बड़ भूखड़ ब्राह्मण लोग रहन । हाथ सूखा त ब्राह्मण भूखा । राजा लोग खिआवते ना रहन थारियो दान में देत रहन । एकर मतलब कि पेट के भूख के बाद के बारे में भी सोचत रहन । 1941 के आकाल में कलकत्ता में कय कइल तक खायेवाला लोग रहन । ढेर रहन । आज केहू खाई ? हमार गाँव-घर, खेत-खरिहान, अन्न-धन छूट गइल । देंह पर के कपड़ा तक लुटा गइल । भाग के अदिमी जान बचावल । भाग के आइल रहीं ओह दिन धरती पर छिंटल भात भी बिन-बिन खाये खातिर तइयार रहीं । आज खाइल ना सपरी । आज रउवे साथे रहत बानी । रउवे देस समाज के अंग बन गइल बानी । बड़ नदी में मिल गइला के बाद छोट नदी के पहचान ना रह जाय बाकिर रउवा सभे राखल चाहत बानी । रउवा में आ हमरा में का अंतर बा ? इहे नू कि रउवा सभे जहें के तहें रह गइनी आ हम कुछ दिन तक दोसरा जगह घेराइल रहीं ।"

"स्वामी लिखले बाड़न कि बड़-बड़ नेता लोग बीड़ी, सिगरेट, खइनी, तम्बाकू खातिर जेल से मिलल कोट-कमरा सिपाहिन के एक-दो रूपया में दे देत रहन । हमनी के आपन पेट काट के रासन बेंच दिहिला जा । चाय खातिर चोरी करे पड़ेला । चाय बनावे खारित जरावन चाहीं । ओकरा खातिर डाढ़ि ना काटीं त ब का करीं ?"

"जरूरत के त अंत नइखे । रउवा सभे के सरन देवे के मतलब त ई ना होखे के चाहीं कि रउवा सभे बोझ बन जाईं । ओकर अइसन असर होखे कि आगे से केहू केहू के सरन देबे ना करे ।"

"जरूरत आग ह आ मदद घीव । जतने घीव पड़ी ओतने आग बढ़ी । पानी नीचे के ओर भागेला, ऊपर ना चढे. । धार में दहत फूल के गाछी छान के लगावे वाला अगर ई सोचे कि लगवला के बाद कवनो तरह के चिंता -फिकिर ना करे पड़ी तब ओकरा के लोग मूर्ख ना महामूर्ख कही । कही कि ना ?"

ओकरा भूख के आग में जरत हिन्दुस्तान के नकसा के गंध नाक में घुसे लागल । आँख के सोझा से उजाला घसके लागल । बुझाइल ई अदिमी ना दइत हवनस जवन साधु के भेष में हमरा देस में घुस आइल बाड़न स । एहनी के अपना पेट से मतलब बा । जवना दिन एहनी के पेट के आग सांत ना होई तवना दिन एहनी के देश के बेच के खा जाये में भी झिझक ना होई । चारों तरफ बालू देखीहनस बाकिर ओकरा अंदर लहरात भारत माता के रूप एहनी के नजर ना आई ।

—भोजपुरी कहानियाँ 7:5:सितम्बर अक्टुबर 1971
वाराणसी, उ० प्रदेश

www.bhojpurisahityangan.com

सवाल

बस बिक्रमगंज में लागल रहे । खुले के समय हो गइल रहे । बइठे के जगह ना रह गइल रहे बाकिर लोग रहे कि घुसल चल जात रहे ।

एगो आदमी बस के भीतर आइल । साढ़े पाँच फुट लम्बा धोती-कुर्त्ता पहिरले रहे । धोती ठेहुने तक रहे । कुर्त्ता के ऊपर चादर ओढ़ले रहे । गला के चारों तरफ चादर लपेटले रहे । माथ पर मोटिया के गमछा लपेटले रहे । काँख तर के झोरा चादर के भीतर से लउकत रहे । हाथ में लाठी लेले रहे । लाठी पाँच फुट लम्बा एगो बाँस के टुकड़ा रहे । चार छव अँगुरी बढ़ल पाकल दाढ़ी देखे से मुसलमान बुझात रहे ।

"बाबूजी ! बस आरा जाई नू ?" आवाज में दर्द रहे । बुझात रहे कि आरा गइल जरूरी हइस । बीच में रूकला पर कुछ बिगड़े बिना ना रही ।

"ना जाई । काहे माथा चटले बाड़ ? नीचहीं नू समझा देले रहीं कि ई आरा ना जाई । एकरा से पिरो तक चल जा । ओहिजा से आरा जाये खातिर कुछ सवारी मिल जाई।" ओकरा आगा में खाढ़, सूट-बूट पेन्हले, आदमी खखुआ के बोलल ।

हम जवना बेंच पर बइठल रहीं ओह पर दू आदमी के बइठे भर जगह रहे । हम खिड़की के पास रहीं । हमरा साथे बइठल आदमी, तुरते उतरी, हम जानत रहीं । पहिले सोचले रहीं कि जवन सूट बूट पेन्हले बा ओकरा के अपना पास बइठा लेब बाकिर ओकर जबाब सुननी तब ओकरा प्रति घिरना जागल आ मने मन तय कइनी कि इनकरा क ना बइठे देब; दोसर चाहे जे बइठे ।

नया नया चढ़ल आदमी के रेला आइल तब ऊ हमरा बगल में बइठल आदमी के बगल में चल आइल आ बइठ रहल । कुछ लोग के अच्छा ना लागल बाकिर केहू-केहू कहल कि "छोड़ीं । बइठे दीं । बेचारा थाकल बुझात बा ।" तब ऊ बइठले रह गइल ।

बस चले लागल । ऊ हमरा बगलगीर से बतिआवे लागल । बीच बीच में हमहूं बोले लगनी । ओकरा के समुझावल गइल कि पिरो चल जा । कवनो डीजल-जीप जाई तब बसे भाड़ा में पहुँचा दी । ना होई तब ठहर जइह, भोरे चल जइह ।

हमनी के बात सुन के केहू बोलल," कार आरा जात रहे । काहे ना चल गइल हा ?"

"कार त आरा जात रहे बाकिर कवनो हड़वड़ी नइखे ।" 'बाकिर पइसा नू चाहीं' ऊ कहल चाहत रहे बाकिर ना कह सकल । हम बुझ गइनी। सोचले होई..... "रहिमन नीज मन के व्यथा मनहीं राखो गोय। सुन इठलइहें लोग सब,

www.bhojpurisahityangan.com

बांट ना लइहें कोय ।''

फिर हमरा बगलगीर से बतिआवत रहे । कुछ कुछ बुझाइल, केस के कहानी जइसन । मन ओनही टंगा गइल । बस के आवाज आ लोगन के बतकही, हा-हा ही-ही के चलते पूरा ना सुनात रहे । मने मन तय कइनी कि बगलगीर के उतरला के बाद ओकरा के बगलगीर बनाइब। ओकर बतकही चलत रहल । यात्री आ कंडक्टर के भा यात्री-यात्री के बीच के हंसी-मजाक, गाली-गलौज के चलते बात के छोर छूट-छूट जात रहे । मने मन सोचली कि जब बगल में आके बइठी तब सबकुछ पूछ लेब । खिड़की के बाहर देखे लगनी ।

बस रूकल आ हमरा बगल में बइठल आदमी उठल । हम कनखी से देखत रहीं सीट खातिर बढ़त लोगन के बाकिर ओकर हाथ धर के ओकरा के उठवनी आ अपना बगल में बइठा लेनी ।

कुछ देर समय लागल तय करे में कि कहाँ से पूछीं ? का पूछीं ?

''कहंवाँ घर ह ?''

''भभूवा ।''

''खास ?''

''ना । लगले देहात में ।''

''एने ?'' गलती मालूम भइल । ऊ आरा नू जात बा । बाकिर का भइल ! अब त पूछ चुकल रहीं ।

''आरा नू जाइब ।''

''हं जी ! अबगे नू कहत रहीं ।''

फिर चुप्पी रहल ।

''जजी अरे में नू बा ? अबहीं सासाराम में नइखे खुलल ।'' ऊ सीट पर ठीक से बइठत बोलल । लाठी पारे के जगह ना मिलत रहइस । हम लेके बगल में धर देनी ।

ओकरा के सकुचात देख के ख्याल पड़ल । पिरो बाजार में सड़क किनारे खड़ा रहीं । बगल में दूगो आदमी, दूगो बोरा आ एगो बैल रहे । दूनो आदमी मिल के एगो बोरा उठवलन । बैल के पीठ पर धइलन । जे आवे-जावे ओकरा से कहस कि तनी हाथ लगा दितीं तब दोसरका बोरवा लाद लितीं जा। केहू ना रूकल । दोसरका बोरवा एक आदमी से उठे लायक ना रहे। लोग हमरा के फूल-पैंट, फ्लाइंग सर्ट पेन्हले देख के हमरा से ना कहत रहे । हम गइनी आ बोरा में हाथ लगा देनी । ऊ लोग हमरा तरफ अचरज भरल नजर से देखे लागल । फिर दोसरका बोरा ले आके लादल ।

आजो हम समझ गइनी कि ई हमरा साहबी ठाट के देख के सकुचा रहल बा । ओकरा के बइठे भर जगह देत अपने खिड़की के तरफ सरक गइनी

www.bhojpurisahityangan.com

-''ठीक से बइठ। सकुचात काहे बाड़ ?''

''बाबूजी ! सब केहू एके लेखा नानू होय । आदमी कपड़ा पहिरे के शुरू कइले होई-पर्दा खातिर बाकिर आज कपड़वे आदमी के आदमी से दूर कर रहल बा । हमरा देह पर फाटल-पुरान, मइल-कुचइल आ मोटिया-मरकीन बा । रउवा देह पर दामी दामी कपड़ा बा । रउवा से सट के बइठीं । रउवा कपड़ा पर कुछ लाग जाय भा ओकर तहे टूट जाय तब रउवा हमरा के फजिहत करब कि छोड़ देब ?

दूगो भोजपुरिया के भोजपुरी में ना बोलत देख के समुझावे लागिला । मन डेरात रहेला । ऊ डांटं मत दे कि हम आपन भाषा नइखीं बोलत, ठीक बा । रउवा कवन कहीं कि आपन पोशाक पेंहले बानी । सूट-बूट छाड़ के बन वाला कुर्त्ता पेन्ह लितीं तब नू जनतीं ।

एक दिन के बात ह ! देहात में जाँच करे जात रहीं । साथ में एगो हरिजन रहे । गमछा-गंजी पेंहले रहे आ दोसर एगो गमछा ओढ़ले रहे । हम फुलपैंट, कोट, मंकी कैप, जूता, पैताबा, गंजी, बुशशर्ट पेंहले रहीं । जनवरी के महीना रहे । शीतलहरी चलत रहे ।

''बड़ी ठंढा बा ।''

''ठंढा के मारे त मरे के ठेकान बा बाकिर रउवा सब केहू के का ठंढा लागत होई ।''

''तू लोग काम करेल घाम में आ हमनी के छहिरा । कह; कपड़ा ना पेंहला पर काम चली ? तू लोग गाँव-घरे रहेल आ हमनी के बहरा में बानी।''

''रउवा बा तब नू पेंहीला ।''

हम जानत रहीं कि ऊ बैंक में दू-चार हजार जमा कइले बा आ हमरा माथा पर से कर्जा ना उतरे पावे बाकिर ई कहतीं तब अउर भद होइ त कि खाये के ठेकाने ना आ तीन सौ के कपड़े सिआइल बा । हम चुपे रह गइनी।

आज फिर कपड़ा बीच में आ गइल रहे ।

''बाबूजी ! हम गरीब आदमी हईं। घर पर लइका बाड़न । एगो छोट भाई बाड़न । दूनो भाइयन के जनाना बाड़ी । लइका के मेहर अपना नइहर गइल बिया । एगो छोट बेटी बिया । आठ-दस बरिस के ।

बाबूजी ! भइया लोग के ही चलाइला जा । दोसरो तरह के काम मजूरी मिलला पर करीला जा । बस समझीं कि कमाना खाना बा ।''

''कवनो केस बा कि आरा जात बाड़ ?''

''केसे नू बा ।.....'हमनी के सासाराम में जीत गइल रहीं जा । ऊ लोग ना मानल तब आरा दरखास देले रहीं । नोटिस गइल रहल ह । ओकरे काल्ह तारीख बा ।''

www.bhojpurisahityangan.com

"का केस रहे ?"

"हम जात के चमार हईं । बाप-दादा के जगह जमीन नइखे । कमाना-खाना बा । जान जाइब कि गरीब आदमी के पास रूपयो-पइसा ना रह पावे कि दू पइसा के कवनो रोजगार करे । कसहूं पेट काट के एगो भैंस रखले रहीं । भैंस त बूढ़ आ नाठा रहे बाकिर ओकरे देह के एगो पाड़ी सरेख हो गइल रहे । दूनो के खोलत ना रहीं, पहाड़ पर ना जाये देत रहीं । मेहरारू-लइका जवन लावत रहन उहे घास-पात खिआ के ओहनी के पोसत रहीं ।

हमरा गाँव के बगल के गाँव में अहीर लोग बा । हमरा गाँवे हितइयो हइन जा के । का जाने केहू लगवले-बझवले रहे कि कवनो दोसर बात रहे। तीन-चार आदमी हमरा दुवार पर अइलन । कहस कि पड़िया हमार ह । तू बान्ह के रखले बाड़ । जान जाइब कि पाड़ी त फिर पाड़िये नू तैयार भइल रहे । कतनो कहनी कि हमार ह । हम त खूदे झंझट से बचे खातिर खोलबो ना करीं । पहाड़ो भेजले रहतीं तबो कहाइत कि बदला ओदला गइल होई बाकिर ऊ लोग ना मानल आ बले ले जाये के तैयारी करे लागल । जान जाइब कि हमार बाल-बच्चा रोवे लगलन स । ओहनी के रोवाई सुन-सुन के छाती फाटे लागल बाकिर ऊ लोग कहे कि हम खोल के लेइए जाइब । झूठ ना कहब फिर हमनियों के मरे-मारे खातिर तैयार हो गइनी जा; तब ऊ लोग हटल ।"

"फिर ?"

"ओह दिन चल गइल लोग बाकिर दोसरा दिन के बात ह । दुपहरिया में जमादार एगो सिपाही आ चौकीदार के साथे अइले । चौकीदार हमरे गाँव के रहन।

"चोरी के पाड़ी ह । थाना पर चली । तोहरा अपना बेटा आ भाई के साथे थाना पर चले पड़ी । जमादार के बात सुन के सन दे लागल ।

"ना सरकार ! ई पाड़ी इनकरे ह । हमरा गाँव में हर चमार के घर में एक दूगो पाड़ी बाड़ी स । लोग बटइया पर पोसेलन बाकिर इनकर त बटइयो के ना ह । खास आपन हइन ।" चौकीदार लाख कहलन बाकिर जमादार ना सुनलन आ हमरा के लइकवा के साथे थाना ले चललन । ओह घरी भइयवा घर पर ना रहे ।

"थाना पर गइला पर दारोगा जी कहलन, "चार सौ रूपया द तब पाड़ी के आ तोहरा लोग के छोड़ देब ना त पाड़ी त गइले बुझ, तोहरो लोग के चक्की चलावे जाये पड़ी ।"

सरकार रूपया कहंवाँ से पाइब । दिन भर कमाइला जा त साँझ के

www.bhojpurisahityangan.com

चुल्हा जरेला । हमनी के का दोष कइनी हां जा कि चलान करब ?

"चुपचाप कहत बानी से कर ना त ढ़ेर फटर-फटर कइल त बांस धाँस देब कि अलला के मर जइब ।"

"सरकार मालिक हईं। अवतारी पुरूष हईं। कुर्सी पवले बानी त न्याय करीं; रउवो बाल-बच्चा बा ।"

दारोगा जी बगल में खाढ़ चौकीदार के अस लात मरले कि बेचारा चिताने गिर गइल । मुरेठा ना बन्हले रहित त ओकर माथ साफ दू टूक हो जाइत । "मुंह का तकले बाड़ ? ई लोग का तोहार सार-ससुर ह ? धर के सारन के हाजत में बंद कर द । "

हमनी के तब तक चल आइल मुखिया के तरफ देखे लगनी जा ।

मुखियो जी लाख तरह से समझवलन बाकिर दारोगा ना मनलन । हमनी के हाजत में बंद करा देलन आ पाड़ी बगल के गाँव के लोगन के दे देलन ।

जेकर हर धइले बानीजा ओह लोग के, मुखिया जी के मेहनत से सासाराम से हमनी के जमानत भइल । केस चलल आ हमनीके जीत गइनी जा ।"

"जेकर काम करेल जा ऊ लोग पूरा मदद कइल ?"

"हँ सरकार ! सब तरह से । उहो लोग अहीरे हवन जा बाकिर मदद कइलन जा । ओह लोग से दोसरा पार्टी के वकील खूब जिरह कइले रहे बाकिर ऊ लोग टस से मस ना भइल रहन ।"

"आ मुखिया जी ?"

"मुखिया जी हमरा इलाका के बिना ताज के राजा हवन । जब दारोगा उनकर बात ना मनलस तब उनकरा ताव आ गइल । जान जाइब कि जब से पंचायत बनल बा उहें के मुखिया बानी । का मजाल कि केहू अंगुरी उठा दे। केहू के मुंहदेखल ना करीं । सांच पूछीं तब उहें के सब बात अतना फटक फटक के हाकिम के सामने साफ कर के धर देले रहीं कि हमनी के केस जीत गइल रहीं जा ।"

"का फैसला भइल रहे ?"

"इहे कि पाड़ी चमार के हं । ओकरे मिले के चाहीं ।"

"तब त तूँ लोग माँगे गइल ?"

"झूठ ना कहब सरकार ! डर के मारे हमनी के माँगे ना गइल रहीं जा। दोसरे केहू से बात चलवले रहीं जा । लोग देवे खातिर तैयार ना भइल रहन तब आरा दरखास भेजवा देले रहीं ।"

"तब त ठीक बा ।"

"ना सरकार ! ठीक कहाँ बा ? सासाराम में तीन साल केस चलल रहे। उपास रह रह के, परिवार के पेट काट काट के, तारीख पर जात रहीं जा ।

www.bhojpurisahityangan.com

तबो खाली कागज पर फैसला मिलल । पाड़ी बिआ गइल बिया । ओहनी के दूध-दही खा रहल बाड़नस । आजो समझीं कि कर्जा काढ़ के लेके जा रहल बानी । देखीं, उहंवाँ कतना दिन तक केस चलेला । पहिले अंग्रेज रहनस । दोसरा देस के रहनस । हमनी के हाल चाल ना जानत रहनस बाकिर अब त अपने देस के लोग राज कर रहल बा । ऊ लोग काहे नइखे समझत कि गरीब लम्बा लड़ाई में ना ठटे; उखड़ जाला ।''

"आज का बनल बा ? खाये खातिर ?'' एक दिन सूरदास अपना जवान बेटा से पूछलन ।

"खीर ।''

"खीर कइसन होले ?''

"उजर ।''

"उजर कइसन ?''

"बकुला अइसन ?''

"बकुला कइसन होला ?''

सूरदास के लइका अपना दाहिना हाथ के मोड़ के बकुला के गरदन आ पाँचों अंगुरिन के जोड़ के चोंच बनवलस । फिर बायाँ हाथ से अपना बाप के हाथ धइलस आ अपना दाहिना हाथ के टोअवा देलस ।

"हम ना खाइब । ई टेड़ बा रे ।''

सूरदास जइसन मुंह बनवले रहन आज ओइसने बगलगीर के मुंह बनल देखनी ।

"सभा सोसाइटी के मंच पर, लोकसभा में, विधानसभा में, हर जगह छोट-बड़ नेता लोग, विधायक लोग कहत बा कि अपना देस में न्याय बहुते महंगा बा; ओकरा के सस्ता, सरल आ सहज बनावल जाय । बाकिर केहू बनावत नइखे । लागत बा कि सब केह नाटक कर रहल बा । कुछ लोग अकुता के कानून के अपना हाथ में ले लेत बा तब चम्बल के डाकू भा नकसलवादी कहाये लागत बा । लोग घृणा के पात्र बना देल जात बा । बाकिर रउवे कहीं कि ऊ लोग घृणा के पात्र बा कि पूजा के ?''

हम ओकरा तरफ ताके लागत बानी । नोनार पहुँच के, उतर के चल देत बानी । गाँव के लोग के बात में फंसलो पर ओकर सवाल पीछा नइखे छोड़त ।

—भोजपुरी उचार, दिसम्बर 1978
(2:12), नया टोला, पटना-4

●

www.bhojpurisahityangan.com

दहसत भरल सन्नाटा

ज्ञान अबहीं ना आइल रहन । मंत्री जी दसे बजे से आफिस में चक्कर काटत रहीं ।

इहवाँ के केकर साथी ह ? सब केहू जानत बा कि अपना अपना फेरा में सब केहू रहेला । अपने बोझ केहू से उठ नइखे पावत; दोसरा के का उठाई?

ज्ञान एम० ए० पास हवन । काम से काम रखेवाला आदमी हवन । मक्खन लगावे के हाल ना जानस । ऊ पहिले आपूर्ति निरीक्षक रहन । आफिसर से ना पटल तब रिजाइन कर देलन । परीक्षा में बइठलन, पहिला स्थान पवले आ आजकल हमरे सेक्शन में बाड़न ।

आपन बात अपने का कहीं ? कहब कि अपने मुहे मियाँ मिठू बनत बा । हमहूं अपने लिख लोढ़ा, पढ पत्थल ! अंगुठा छाप सिक्रेट्री के स्कूल के हेड मास्टरी छोड़ के आइल बानी ।

ज्ञान के आवत देख के आफिस के बाहर गइनी – "आफिस में मंत्री जी बानी। अबहीं मत जा ।"

ऊ हमरा के धकिआवत अइलन आ मंत्री जी के आगा जाके प्रनाम कर के खड़ा हो गइलन । पर्दा के बाहर जाके खड़ा होके कान लगा देनी ।

"का नांव ह ?"

"ज्ञानेन्द्र ।"

"अबगे दस बजल हा ?"

"हमनी के कलर्क नू हईं । हमनी के हाल रउवा का जानब । सांझे मकान मालिक घर से निकाल देलस तब रात भर साथी के बरामदा में सामानन के ढोवत आ फिर बाद में रखावत रहनी । भोरे बिना खइले कइसे अइतीं ?"

"आदाब अर्ज!"

"आदाब ! का नबाब साहब ? देखत नू बानी ?" मंत्री जी सवालिया नजर से नबाब साहब के देख के ज्ञान के तरफ देखे लगलन । नबाब साहब फाइनांस सेकेट्री हवन ।

"हम 15 मान सकिला 50 मिनट ना । रउवे कहीं कि इनकरा के का सजाय देत बानी ?"

"ज्ञान तू तीन दिन देर से अइत ?"

"जी ।"

"तब एक दिन कयजुवल मिलित ?"

"जी ।"

"ई कवन दिन ह ?"

"पहिला ।"

"कवनो बात ना । मंत्री जी धइले बानी । हम छोड़ देब तब कहब कि

www.bhojpurisahityangan.com

ई हे सह दे रहल बाड़न । जा अपना सीट पर बइठ के काम कर । आज कयजुवल ट्रिट होई ।

"आई । देखल जाय कि रउवा का करत बानी ?" कहत मंत्री जी नवाब साहब के चेम्बर में गइनी तब सब केहू अपना अपना जगह पर बइठ रहल ।

घंटी बाजल । काफी के आदेश भइल । कप-प्लेट खनकल आ ठहाका लागत रहल आ हमार मन ओनहीं टंगाइल रह गइल ।

कुछ देर के चुप्पी के बाद जोर से घंटी बाजल । सब केहू के नजर उठ गइल चेम्बर के तरफ । ज्ञान के उठ के लपकत जात देखनी तब पीछे पीछे हो गइनी । ऊ चेम्बर के भीतर पर्दा हटा के गइले बाकिर हम बहरे रह गइनी।

"जी ।" चपरासी के बोले के पहिले ज्ञान बोललन ।

"तोहरा के के बोलावल हा ?"

ज्ञान चुपचाप घंटी के तरफ देखत रहन । बुझात रहे कि ऊ जानल चाहत होखस कि हमरा के ना त केकरा के बोलावल गइल हा ?

"तू कइसे बुझ गइल हा कि तोहरे के बोलावे खातिर घंटी बजवनी हां ?"

"तब जाईं ?"

"ना रूक । मंत्री जी आइल रहीं । जानत बाड नू कि हम आई० ए० एस० हईं ? ऊ हमार का बिगाड़ लिहें ? बाकिर जानत बाड़ कि बड़ बेटी मेडेकल कॉलेज में बिया । बेटा इंजिनियरिंग कॉलेज में बा । लोग पूर्णिया के कलक्टर बना के आजे भेज दी जब दिक्कत होई कि ना ? सीवान के कवनो बस के बकाया राइट ऑफ करे के बा । देख के कह कि का पोजिशन बा ?"

"एह आफिस में नइखे । दंडवते साहब के पास बा ।"

"आरे हँ । हमरा याद ना रहे । तब अइसन कर कि तू जा । मंत्री जी अबहीं डेरा ना गइल होइहें । मिल के सब कुछ समझा दीह ।"

ज्ञान बाहर अइलन । हमरा तरफ देखत मुस्कुरात लिफ्ट पर चढ़ के, दरवाजा बंद कर के, बटन दबा देलन ।

हमरा बुझाइल । ऊ कहत होखस-"लोग आवेला आपन आ अपना चमचन के काम करावे खासिर आ बहाना करेला कि आफिस के जाँच करत बानी ।"

"कररर....." के आवाज भइल आ ज्ञान आलोत भ गइलन ।

भेंट भइल दूपहर में तब पूछनी, "डेरा काहे बदले पड़ल हा ? पहिले से खबर ना रहे ?"

"ना ! पहिले से कहां खबर रहे ?"

"तब का भइल ?"

"ऊ मकान एगो चमार के ह । जब राजा महाराज के जमाना रहे तब ओकरा बाप-दादा के इनाम में मिलल रहे । राजा लोग पटना आवत रहन तब उहो पटना में आके रहत रहन स । बाकी समय देहाते के मकान में रहत रहे।

www.bhojpurisahityangan.com

एने बराबर गाँवें पर रहत रहे । लाखों दुख सह के अपना अमीरी के अंतीम चिंह के जोगवले रहे । ओकरा के किरयो पर ना लगावत रहे । एने देहात में एक के बाद एक आइल दहार आ सुखार आ सेक्रेट्रीयट के किरानी पद पर बहाल अपना गाँव के एगो रजपूत परिवार के तकलीफ सुन के किराया पर लगा देले रहे । केहू केहू कहेला कि ऊ उनका के रहे खातिर सेतिहें देले बा । बाकिर ई किराया कमात बाड़े । जे बात होखे । गाँव के लोगन के जूठन तक खा खा के रहत रहे बाकिर बेचे के नांव ना लेत रहे ।

बुढ़ारी के समय । दामा के चलते सांस फूल फूल जाले । रात भर झिलंगा भइल खाटी पर ओठंघल खांसत रहे । रात भर नींन ना लागत रहे आ ऊ हरमेश जागल रहत रहे । केहू आहट मिली तब ऊ पूछ दी, "के जात बा जी ? बिहान हो गइल ? का बजत बा ? कहां जात बानी सभे ?"

पी० पी० सिंह ओही गाँव के हवन । एक दिन अंहमुंहारे चलल आवत रहन । पटना में नया मंत्री मंडल के चुनाव रहे । उनको से पूछ देले रहे ।

जानते बाड़ कि नमकी मंत्री मंडल में ऊ नइखन । ओकर टोकल टोकाइन हो गइल । कहल बा कि रोवे के मन रहे अंखिए खोदा गइल । लौट के गाँवे गइलन । गाँव घर के बटोर कइलन आ ओकरा के गाँव से बहरा करवा देलन ।..... अतने भर रहित तब का कहे के रहे ।

"मंत्री बन जइतीं तब लाखो-लाख पीट के घर भर दिहतीं बाकिर तें सब पर पानी फेर देले । ओकर भरपाई तोरा से तोर खाल उतरवा लेब तबो ना होई बाकिर जे कुछ तोरा पास बा ऊ देले जो । करबे तें तब भरी दोसर ?"

बकस बिलार मुरूगा बांड़ होके रहिहें - के भाव चेहरा पर लेके सभा से उठत खा ओकरा के सुना के पी० पी० सिंह कहलन आ उनकर आदमी ओकरा के पटक के ओकर ठेपा ले लेलनस । ..... ओकरा बाद का होला ?"

"हाईनोट..... मुकदमा ..... बेदखली ।"

"मन कुछ देर खातिर अड़ गइल रहे । मन में बगावत अंकुरे लागल रहे । चारो तरफ देखनी । बुझाइल कि अड़ब तब अभिमन्यु अस घेरा जाइब । बटोराइल त ढेर लोग रहे बाकिर सभे तमाशबीन रहे । प्रतिक्रिया बिहीन चेहरा चुपे रहे के सलाह देत नजर अइले स ।"

कब तक चुप्पी रही ? कबो बोलही के पड़ी । ई बात दोसर भइल कि ज्ञान ना केहू दोसर होखे ।"

मुंह के बात जाते-जात ज्ञान कहले, "जब तक आदमी पइसा के तरफ देखत रही, आपने घटी नाफा सोचत रही, पइसा के ईशारा पर नाचत रही; आदमियत चुप रही । ना त उठा के व्लास्ट फरेनस में डाल देल जाई जहंवा से ओकरा लास के सरलो के गंध ना उठी ।

—जनता ललकार, टाटानगर
अप्रैल-नई 1977 (6:4/5)

www.bhojpurisahityangan.com

बेगुनाह

आधा से अधिका रात बीत गइल रहे । अबहीं ले एतवरिया खातिर नीन के कतहूं नावे ना रहे । करवट पर करवट बदलत रहे । करवट बदलत खा अपना देह के भार अपने पर उठा लेत रहे, झिलंगा भइल बंसखट पर ना डालत रहे ।

सांझे गुरूजी आके सोमरा के मंगले रहन तब ओकर करेजा फाट के टूक टूक हो गइल रहे । रोवाई रोके में असमर्थ हो गइल रहे तब उठ के घर में भाग गइल रहे । ओकरा मन के केहू मार लाठी पीटत रहे, केहू गजबांक लेके चारो तरफ से खोभत रहे । ऊ अंगना में गिर के चारा अस लोटत रहे । एक देने से मने मन तय करे, सोमरा के अपना से अलगा ना करब, ना पढ़ी-लिखी तवनो ठीक बा, बाकिर अपना नजर के सोझा राखब । रात में गोदि में केकरा के लेके सूतब ? फिर दोसरा, तीसरा आ चउथा तरफ से ऊपर नीचे, अगल-बगल, चारू तरफ से, केहू कहे लागे, "ई ठीक नइखू करत । बउराहिन मत बन । ओकरा के जाये द । कुछ बन जाई तबे नू तोहनियों के सहारा दी । मांस के लोथा बना के रखबू ? दुलार से पेट ना भरे । ओकरा खातिर चाहीं शुद्ध गेंहू के आटा ।"

ना जाने कहां से दो आके सोमरा ओकरा माथा पर हाथ फेरे लागल रहे। ऊ आँख खोल के देखले रहे । खींच के छाती से सटा लेले रहे । चूमे-चाटे लागल रहे । सोमरा, एह बिना असरा के मिलल दुलार के बरखा से अचरज में पड़ गइल रहे । ऊ ओकर चेहरा दूनों हाथ के बीचे लेके देखले रहे । सोमरा के चेहरा पर बिखाद के कवनो चिंहा ना पाके पूछले रहे, "तें गुरूजी के साथे जइबे ?"

"काहे खातिर ?"

"ओहिजे रहे-पढ़े खातिर ।"

"हं माई ! भेज दे । उहां ढेर किताब बाड़ी स, कॉपियो बाड़ी स; भुलाइब तब गुरूजी बता देब । उहां रहे वाला लइका पढ़-लिख के बड़ आदमी बन जाले स ।" सोमरा के खुशी के थाह ना रहे । ओकरो बुझात रहे कि ओकरा मन के सभ के खुसियन के बयान ओकर सबद नइखन स कर पावत, बाकिर जतने बोलल ओतने ढेर रहे ।

एतवरिया ठाढ़ भइल । आँख-मुँह धोवलस । सोमरा के किताब-कॉपी-स्लेट झोरा में भर देलसु । ओकर हाथ-मुंह पोंछ के दुलार से चूमा लेके; ले आके गुरूजी के आगा में खाढ़ कर देलस ।

भाग के, घर के भीतर जाके गिरल रहे, से गिरले बिआ । ऊ दियोबाती ना कइले रहे ।

भगत जी कुछ दूर तक गुरूजी के साथ साथ गइल रहन । फिर लौट के आके दलान में बिछावल पुअरा पर भहरा गइल रहन । बूढ़, थाकल, रोग से जर-जर देह, ओहू में बुढ़ारी में भइल लइका के बियोग; बेचारू अथाहा

www.bhojpurisahityangan.com

रल रहन । ना दिये जखलन ना भीतरे आवाजे देलन ।

भगत के खेत-बधार ना रहे । कमात-खात रहन, बाकिर कबहूं केहू के कुछ कहे के मौका ना देले रहन। अइसन तरीका से रहत रहन कि केहू थाह ना पावत रहे । हाथ में चानी के छड़ी ना रहे बाकिर माथ पर इज्जत के टोपी जरूर रहे । अतना बच-बच के चलत रहन कि बाबू-भइओ लोग के कबो कुछ रहे के मौका ना मिलत रहे ।

नया खूनवाला कवनो बड़का लोग के सिकाइत करिहें स त कहिहें, "बड़ से डेराइल जाला, बाकिर ओकरे ओरी त छिपलो जाला । ऊ मारेला त तोपबो करेला । मालिक बाप सरीखा होला, ओकरा दुलारे आ धमकावे के चहबे करी ।"

ऊ पहिले त नाक-भहूं सिकुराइ के चल दिहेंस, बाकिर इन्हका राय के बिना, कुछ करे के साहस, चाहिओ के ना जुटा पइहें स । आस-पास के गाँवन में घटल घटनन पर सोचिहें स, कुछ समय बीत गइला पर तब बुझबहिन स का कि ठीक कहले रहन, - "जब तक पुलिस थाना, कोट-कचहरी..... सभ नइखे बदलत तब तक गाँव के मालिक लोग से टकरइला पर भल ना होई ।"

उनकर आँख के नीन उड़ गइल रहे, ई सोच सोच के कि फजिरे संउसे गाँव जान जाई कि सोमरा..... तब ऊ कवन मुंह देखइहें । पहिले त उनकरा बुझाइल रहे कि एकवरिया जल्दबाजी कर देलस, उनकर सलाहो ना पूछलस, बाकिर खूब महला पर, एह निचोड़ पर पहुंचल बाड़न कि एकर फल अच्छा होई; बहुते अच्छा । ना त सोमरा के पढ़ाई ना होइत । जान बचावे खातिर ओकरा के कवनो बाबू-भइया के गरू चरावे खातिर देबे के परित । ओह से नीमने भइल ।

बेचारू कमाये-खाये वाला आदमी रहन, बाकिर एने तीन-चार दिन के मघेर में काम पर ना गइल रहन, ठंढ़ा के डरे आ दू दिन से घर के चूल्हा आग के मुंह ना देखले रहे । मालिक के घरे एगो छीपा बन्हकी धर के कुछ चाउर आ पइसा ले आइल रहन । पइसा नीमक कीने खातिर कि मांड़-भात नून खा लेल जाई । चाउर के घर में धर के दुवार पर बइठ के पानी मांगे के सोचते रहन कि गुरूजी आ गइल रहन ।

दू दिन के उपासल रहन, पिआसिओ लागल रहे, बाकिर चुपेचाप रहन। पहिले उम्मीद रहे कि ऊ कुछ रिन्ही, तब बोलाई बाकिर जब घर में से धुआं के दर्शन ना मिलल तब उहो मंहटिआवे के कोसिस कइलन । बुझात रहे कि बोलावे के कोसिस करिहें तब रोवाई फूट परी आ टोला-परोस भोर होखे के पहिलहीं सभ बात जान जाई ।

भगत के बाप पढ़ावत रहन, गाँव से बीस-पचीस कोस के दूरी पर एगो शहर में । ऊ ओहिजो मकान बना लेले रहन । भगत के मातारी ना रही । उनकर बाप के उमिर पचास के करीब पहुँच गइल रहे । भगत के छोट भाई टाटा में काम करत रहे । घर के खेत-बधार के आ दुतरफा बरिसत रूपया से घर के तरक्की दिन दूना आ रात चौगुना होत चल जात रहे । गाँवघर के कुछ लोग के, खास कर के रामेश्वर पाडेय के ई देख के आँख फूट गइल आ ऊ

www.bhojpurisahityangan.com

भगत के बाप से 'साठा त पाठा' कह के उनकरा पीछा लाग गइलन । एगो गरीब बाप के जवान बेटी से बिआह करवाइये के दम लेले । पहिले त लोग कहले रहे कि कुछ खर्चा ना लागी बाकिर बाद में ओकर बाप आके रोवे लागल तब लोग छव हजार, ई कह के दिलवा देल कि गछले रहीं जा । बाद में भगत के बाप के हाल साँप-छुछुन्नर के हो गइल आ जवना नावे पर चढ़ल रहन ओकर पतवार रामेश्वर पाडे के हाथ में दे देलन । रामेश्वर पाडेय दरखास्त दिलवा के घर के बंटवारा, चुपे-चुप बाप बेटन के बीच करवा देले रहन । सभ बढ़िआंका खेतन के दाखिल-खारिज भगत के बाप के नांव से करा देले । रहन आ भगत के जानहूं ना देले रहन ।

भगत पटना से आवत रहन तब रात हो गइल रहे । सुरूज डुबते राह बंद हो जात बाड़ी स । बसो नइखे चलत । बेचारू अपना गाँव के एगो आदमी के डेरा पर बड़ी मठिया के पास, आरा में रात बितावे खातिर होटल में खाना खाके गइल रहन। सूते के बेरा ऊ आदमी पूछलस "का बहरा से रूपया नइखे आवत ?"

"टाटा से त हर महीना में आ जाला बाकिर एने दू -तीन महीना से बाबूजी कुछ ना भेजले हा ।"

"का बात बा ?"

"ई सभ रउवा काहे खातिर पूछत बानी ?"

"चकबंदी आफिस में दरखास्त दिआइल हा; कुछ बेचे के बा ?"

"ना ।"

"एक दिन तोहार बाप रामेश्वर पाडेय से बतिआवत रहन । लोग खोल के ना बतिआवत रहन, बाकिर बुझाइल कि परमिशने के बात रहे । हो सकेला, कीनत होखस ।"

"कतना दिन भइल ?"

"इहे आठ-दस दिन भइल होई।"

"कहंवा के बात ह ?"

"सहार के ।"

भगत के माथा ठनकल रहे । ओहू रात उनकरा आँखिन से नीन भागत रह गइल रहे आ ऊ जाग के रात कटले रहन । दोसरा दिन सोझे चकबंदी आफिस गइल रहन। जाके चपरासी, किरानी, बड़ा बाबू, सभ केहू से पूछले रहन, बाकिर केहू कुछ ना कहले रहे । चाय पी पी के ओह दिन भर उहवे रहन । बेंच-कुर्सी सभ से पूछलन बाकिर मालूम ना भइल ।

दूपहर के बाद चपरासी चाय पीये जात रहे । ऊ उनकरा गाँवे एक-दू बेर नोटिश लेके गइल रहे । एह से ऊ ओकरा के चिहंत रहन । ओकरा पास गइलन आ फिर पूछलन तब झार देलस आ खरखुआ के बोलल । फिर का रहे ? भगतो के खीस बर गइल । ऊ ओकरा से बही छिन लेलन, ओकर कालर पकड़ लेलन आ दनादन दू चार चटकन जमा देलन । हल्ला भ गइल । चारो तरफ से लोग जूट गइल । चकबंदी अफिसर आके पूछलन, "का बात बा ? काहे मारत बाड़ ?"

"सोझे मुंह बाते नइखन करत । मुहंवा टेढ़ हो गइल बा, सोझ करत

www.bhojpurisahityangan.com

रहीं ।''

"तू हमरा से कहित ?''

"सुबहे से के बाकी बा, जेकरा से ना कहनी हां ? तूहूँ भेटाइल रहित तब तोहरो से कहितीं ।''

"तोहरा डर नइखे लागत ?''

"अब कइसन डर ? खेत- बधार खतमें हो जाई तब रह के का करब ?''

"के तोहार खेत-बधार छीनत बा ?''

"इहे त हमहूं पूछत बानी कि हमरा गाँव के केहू कवनो तरह के दरखास्त देले बा ? हमरा सदेह बा कि केहू दरखास्त देले बा, हमरा के बेदखल करे खातिर, त लोग बतावते नइखे । बोलो कइसे ? मुहे ना बुधिवो रेहन ध देले बा लोग ।''

"चल, आव; हम बतावत बानी ।''

भगत ओकरा पाछा पाछा गइलन । ऊ अपना आफिस में समाये लागल तब बुझले कि चकबंदी अफिसर ह । बुझे के पहिले इशारा कर देले रहे बाकिर ओह समय भगत ना जनले रहन । भगत जाके, अकड़ के कुर्सी पर बइठले; बाकिर ढेर देर तक ना बइठ पवले कि थानेदार अइले आ उनकरा के पकड़वा के, ले जाके हाजत में बंद कर देले ।

सांझ खा थानेदार चकबंदी अफिसर से कहलन, "छूंछे चलान कंइला पर तुरंते छूट जाई । आज-काल ढ़ेर मिलत बा, कवनो कर्मी नइखे । एगो देसी पिस्तौल आ दू-चार गो गोली मंगवा दीं । हम एकरे पास से रिकवरी दिखा देब । ओह से ऐक्ट लाग जाई ।''

चकबंदी अफिसर उठ के गइलो ना रहन आ उनकरा कहला पर एगो आदमी एगो पिस्तौल आ दूगो जिंदा गोली ले आके जमा कर देले रहे; गवाही देले रहे, "हम देखनी कि भगत चपरासी के सीना पर पिस्तौल भिड़ा देले बाड़े त धर के छोड़ा देनी ।''

जेल में भगत जी नकसलबादी कैदी रहन । अउर कैदी के उनकरा से फरका राखल जात रहे । चोरो-डाकू से खराब व्यवहार उनका साथ होत रहे । पहिले त भइयवा जमानत खातिर हाथ-गोड़ मरले रहे, बाकिर ना होत देख के आ नकसलवादी के साथ नांव ना जूट जाए-नौकरी चल जाये क डर से; सटक सीताराम लगा गइल ।

भगत जी छूट के अइलन तब उनकरा मालूम भइल कि उनकर रेकड़ बचपने से खराब रहल हा । दारोगा के मर्जी से ऊ छूटल रहत रहन । अब एकरा खातिर उनकरा सूद मूल के साथे महीनवारी पहुंचावे के पड़ी, ना त जिला-जवार के हर डकैती में उनकर नांव देके, उनकरा के लालघर देखा देल जाई । पहिले त उनकर विश्वासे ना भइल रहे, बाकिर थोड़ही दिन में थाना-पुलिस, कोट-कचहरी, मार-पीट से तंग हो गइल रहन आ एक दिन अइसनो आइल कि उनकरा गाँवघर छोड़ के आके, एह अनजान जगह पर रहे के पड़ल ।

गाँवघर छोड़त खा बहुत तकलीफ भइल रहे, बाकिर अब बुझात बा कि

www.bhojpurisahityangan.com

ठोक कइले रहन । औसहो सामरा के भेज देवे से घर काटे धावत बा-आजो। मन करत बा कि जाके लौटा के ओकरा के ले आवस । कहल बा कि समय सब से बड़ मलहम ह । ऊ कुछ बन के आई । गुरूजी पारस पत्थल हवन । उनकरा से छुआ के लोहो सोना हो जाला; सोमरा त हीरे ह ।

"का रे ?" बोलला के बाद सोचललन कि सोमरा के त गुरूजी के साथे भेज देले रहीं । ऊ कइसे बोली भाग के आ गइल का ? चारो तरफ तकलन । कतहूं केहू ना रहे । कुच कुच अंहरिया फैलल रहे । एगो बादुर उनकरा ऊपर से फड़फड़ा के उड़ल आ उनकरा अन्दर भय समा गइल ।

भगत खरहरे, पुअरा पर रहन । जाड़ा के रात, ठंढा हवा चारो तरफ चलत रहे । कुछ देर खातिर भुला गइल रहन । एह भय के मारे आंही में पड़ल खर्ह अस, देह के उठा उठा के; केहू पटके लागल । थरथर कापे लगलन । दाँत बइठावे के कोशिश करस तब अउर जोर जोर से बाजे लागे । हिम्मत बटोर के एतवरिया के आवाज देलन ।

खाए के बेरा बीत बइला पर पेट भूखिओ मर जाला; बाकिर फिर खाए के समय अइला पर भूख जागिओ जाले । भूख जोर मरलस, तब भगत के ले आइल चाउर के याद एतवरिया के आइल । नमक ले आवे गइल रहन तब ऊ जलावन के चिंता फिकिर में लाग गइल रहे कि गुरूजी आ गइल रहन। अपना मनो गइल रहे आ सोचले रहे कि भगत जी कहिहें तब कुछ पका देब। भगत जी के आवाज कान में पड़ल तब ऊ हड़बड़ा के उठे लागल । खरिआ के बाध । टूट गइल आ ऊ नीचे धम से गिर गइल । चोट लागल बाकिर रोवल ना । झपट के उठल आ दउड़ल गइल । काँपत भगत जी के देह पर आपन देह बिछा देलस ।

भगत जी के देह के थरथरी अबहीं गाएब ना भइल आ एतवरिया उनका के छोपले पड़ल रहे कि केहू के भनक बुझाइल । ओकरा मन पड़ल कि चिरकुट होइहें । बेचारू रात-बिरात आके, तम्बाकू-चूना के बहाना से घड़ी-दू-घड़ी बतिआ लेलन । हं, चिरकुटे रहन । उनकरा के नियरा आइल बुझ के एतवरिया भगत के देह पर से हट गइल आ बोलल," आव ए भइया। भले आ गइल । तनी देख ना भगत जी के देहिया काहे दो फरफरा रहल बिया ।"

चिरकुट हाथ के डंटा फेंक के भगत जी के पास गइलन आ हबर-हबर दावे लगलन । ऊ जानत रहन कि भगत जी के परिवार दू दिन से कुछ नइखे खइले ।

अबगे खात खा ऊ अपना में मेहरारू से पूछले रहन तब ऊ कहले रहे कि भगत जी के घरे सांझहीं से अंहार बा । तनीको चिरागो ना लउकल हा। बेचारू खुदे गरीब ठहरलन । अपने बोझा त उनका खातिर हमेशा भारी रहेला, दोसरा के बोझा में, कहां फुरसत हइन, हाथ लगावे के बाकिर आज अपने नून-भात खइले रहन आ मांड़ रखवा के आइल रहन । भगत जी के पेट पर हाथ गइल तब बुझाइल कि हवकुरिए गिर जइहें ।

चिरकुट हला कइले तब उनकर मेहरारू माँड़ पर नून छिंट के एगो कटोरा में ले आके, देके चल गइल । भगत "ना नू" करत रहले बाकिर

www.bhojpurisahityangan.com

उनकरा मुह से चिरकुट कटोरा के सटा देले तब एक घूंट पीके भगत बोललन, "नून ढेर बा तनी पानी ले आव ।"

एतवरिया पानी ले आइल आ मांड़ में मिला देलस । भगत के भूख त रहे कि भर गगरा मांड़ पी जइतन बाकिर आधा-सुधा पीके छोड़ देलन ।

एतवरिया कटोरा के हटा के फरका धर देलस ।

चिरकुट दाबते रहले तब तक ऊ आग जला देलस । कटोरी में तेल गरमाए खातिर ध देलस । चापाकल पर से पानी ले आके बाल्टी में देलस । पुअरा पर लेदरा बिछा के, ओह पर भगत के सुता के, फाटल-पुरान कमरा उनकरा के ओढ़ा देलस ।

तेल गर्मा गइल तब चिरकुट बहाना बना के चल गइलन । ऊ भगत के देह में गरम तेल के मालिस करे खातिर तेल में कटोरी उठावे चलल ।

मांड़ के कटोरा पर नजर पड़ल । अउरी पानी मिलवलस । अंउर नून डाले खातिर नून ले आवे गइल । उहाँ नून रहे कि मिलित ? आके गट-गट पी गइल । ऊ अंचरा से मुंह पोंछ के तेल-मालिस करे लागल ।

एतवरिया चुपचाप तेल-मालिस करत रहे । भगत के पीठ पर गते गते हाथ चलावत रहे, बाकिर अपना मन के उड़ान पर कवनो तरह के कंट्रोल ना कर पावत रहे । ओकरा हाथ से ओंकरा तिलंगी का डोर के छोर छूट गइल रहे। ओकर मन बंवरा में पड़ल पतई बन गइल रहे । आँख छलछला जात रहे तब गते से पोंछ देत रहे, बाकिर सोच में पड़ला से आँख पोंछे के तरफ ध्यान ना देलस आ एगो बून टपक गइल-भगत के पीठ पर ।

भगत के पीठ पर बून गिरल तब ऊ चुप ना रह सकले । ऊ एतवरिया के हाथ हटावत उठ के बइठ रहले आ ओकरा गाल पर टघरत लोर के लकीर के अपना गमछी से मिटावत बोलले, "पागल ना बने के । हमनी के त दुख के मार खात-खात घठाउर हो गइल बानी जा । दुख के चकोहो हमनी के नइखे तूर सकल; नइखे झुका सकल । कसहूं कवनो राहे गइला पर आजुओ दू-चार खदुका मिलिए जाला । फिर आज ई सब काहे खातिर ? सोमरा मर त नइखे गइल; पढ़े गइल बा । पढ़-लिख के आदमी बने गइल बा । हमनी के जिनगी जइसन खउफनाक मोड़ पर पहुँच गइल रहे, जहां खड़ा होके चारो तरफ आँख फाड़-फाड़ के तकलो पर, आगे कवनो राह ना लउकत रहे ।" तनिका रूक के, मुँह में के बलगम थूक के बोलले, "अब, जब कि पुरूब में भिनसहरा के लाली धउड़े लागल, केकरा ताकत बा कि भोर के सुरुज के उगे से रोक दी ? मांड़ से जरल हम दूध से डेरा गइल रहीं ।" भगत एतवरिया के समुझावत रहन बाकिर उनकर अपने मन कुछ ना समुझ पावत रहे । "धार में बहत रहीं । किनारा त लउकल ।"

एतवरिया जाके, कीली लगा के आइल आ बगल में सुत रहल । दूनो आदमी मने मन बोलत रहे ।

-भोजपुरी अकादमी पत्रिका, फरवरी 1979 (1:2)

www.bhojpurisahityangan.com

पहचान

राघों के मरला के बाद सुखदा के जिनगी में अंहार फैल गइल । कुछ समझ में ना आवत रहे । कहाँ जाय ? का करे ? कतो जाके डुब जाइत फिर राधाकांत के मुंह देख के मन में जीये के लालसा लागल रहल ।

नइहरो में केहू आपन ना रहे । गाँव घर में कुटावन-पिसावन कइल सुखदा के इज्जत के खिलाफ रहे । सातवां तक पढ़ल रही । सास-ससुर आ पति के इज्जत के ख्याल कर के केकरो नोकरी करे के ना सोचत रही बाकिर आज एही उमेद पर शहर जाये खातिर गाड़ी पर बइठ गइली ।

घर के धन-दउलत खेत-बधार सभ के सभ सास-ससुर आ पति के बीमारी में स्वाहा हो गइल रहे । पांव में दू-चार थान गहना रहे । बेंच के सब गहना के खा गइली बाकिर कतहूं कवनो काम ना मिलल । दस दिन के ऊपर हो गइल रहे कि मन में निश्चत कइली । बर्तन-चौका करब बाकिर भीख ना माँगब । राधाकांत के भविष्य के कवनो स्थाई रूप ना लउकत रहे ।

राधाकांत के बइठा के ओकरा काम में मदद करे लगली । ऊ बूढ़ रहे। सुखदा के काम करत देख के बोलल, "तूं के हऊ ? का चाहत बाडू ?"

"हमरा के कतो काम पर लगवा दीं । रउवा मालूम होई । कतहूं खाली बा ?"

"जज साहब के कोठीं पर काम करबू ? उहां हमरे छोट गोतिनी काम करत रहे । कलमुंही के दू दिन से कतहीं पता नइखें ।" फिर रूक के बोलल, "बाकिर बंगला पर चौबिसो घंटा रहे के होखी ।"

राजीव लोचन बाबू जज साहित्यिक आदमी हवन । सुखदा के देखलन तब उनका बुझाइल कि ई औरत दाई के जात के त ना ह । जरूर कवनों-मजबूरी में पड़ के एकर ई हाल भइल बा ।

चाय-नास्ता के बाद बइठल रहन । माथा में ढुकल सवाल बेहाल कइले रहे। हरिया नौकर के बोला के कहलन, "नयकी दाई के बोला के ले आव ।"

हरिया समझ ना सकल बाकिर जाके सुखदा के जज साहब के हुकुम सुना देलस ।

सुखदा डेरात डेरात जज साहब के पास गइल । आपन कहानी सुनावे के सुन के रोवे लागल ।

राजीव लोचन के पक्का विश्वास हो गइल। कहानी सुनावे खातिर हठ करे लगलन ।

सुखदा रो-रो के आपन कहानी कह देली , राजीव लोचन के आँख लोर से भर गइली स ।

अपने कार पर राजीव लोचन सुखदा के भेजवा देलन । फोन कर के

www.bhojpurisahityangan.com

शिक्षा अधीक्षक से बात कइलन । ओही दिन सुखदा के अस्थायी रूप से दैनिक वेतन पर एगो स्कूल में शिक्षिका के पद पर बहाली हो गइल ।

कोठी के हाता में नौकरन खातिर बनल कमरा में रहे के छूट अबहूं रहे । जज साहब कपड़ा आ रूपयो से मदद कइलन । सुखदो दूनो बेरा जज साहब के लइकन के पढ़ा देल करस ।

जज साहब राधाकांत के अपना लइकन से कम ना बुझत रहन । जवन कपड़ा जज साहब के लइकन खातिर आवे उहे राधाकांतो खातिर । जज साहब के लइकन के साथ एके गाड़ी में उहो स्कूल जात रहे । जज साहब राधाकांत के अपना लइकनो से ज्यादा चाहत रहन काहे से कि ऊ उनकरा लइकन से पढ़े में, लिखे में......... खेले में मन के दुखावेवाला कवनो काम ना करत रहे । उनकरा कवितन के राग से गावतो रहे ।

सुखदा के जिनगी के एगो सपना रहे कि राधाकांत पढ़-लिख के आदमी बन जास । अउर कवनो दोसरा सुख-सुविधा के लालसा ना रहे । समय पर स्कूल गइल आ आइल, इहे काम रहे । रातो-दिन राधाकांत के चिंता में रहत रही । ऊ जज साहब के भगवान से कम ना बुझत रही । भगवान से बराबर प्रार्थना करत रही कि हे प्रभु ! हमरो के कवनो अवसर दीं, जब जज साहब के कवनो कामे आ जइतीं।

राधाकांत एम० ए० के इम्तहान देले रहे । फस्ट आवे के आशा सब केहू करत रहे । जज साहब के परिवार गर्मी बितावे खातिर पहाड़ पर चल गइल रहे । जज साहब कवनो जरूरी काम सलटा के जाये खातिर रह गइल रहन । दू दिन के बाद सुखदा के अपना स्कूल के लइकन के साथ दिल्ली-कश्मीर जाये के रहे । एही से उहो साथे ना गइल रही ।

सात बजे सांझ के बरसा पे .... चारो तरफ कुच कुच अंहरिया फैल गइल-बिजली कट गइल तब सुखदा के अंदर जवानी सिर उठावे लागल । अपना बैधव्य के ख्याल कर के चुपचाप लोर बहावे लगली । जज साहब के ख्याल आइल । दिल के कमजोर ठहरलन । अतना बड़ मकान भय से कुछ हो मत जाय । अकेला जीव कवनो जीव ह ? सुखदा बरसत रात में जज साहब के कोठी के भीतर गइली ।

सुखदा कोठी के अंदर ढुकली ना कि लाइन आ गइल आ उजाला चारो तरफ फैल गइल । सुखदा के संबंध में जज साहब ढेर देर से सोचत रहन । कतना सिगरेट फूँक चुकल रहन बाकिर कुछुओ पकड़ में ना आवत रहे ।

"नमस्कार ।"

"खुश रह । अच्छा भइल कि आ गइलू । ओह दिन तू आपन अधूरे कहानी सुनवले रहू । का पूरा ना सुना सक ? हमार मन तोहरा के पहचानत बा । आज हम सांच-सांच कहत बानी कि हमार मन तोहरा के पहिलके दिन से पहचानत बा । अपना मन के शांती खातिर हम आज तक तोहरा चाहे राधाकांत खातिर कुछ कइनी।"

www.bhojpurisahityangan.com

''का करब हमार पूरा कहानी सुन के ? बाकेर राउर अनुरोधो हमरा खातिर आदेश बा । ..... गांव में हमार जन्म भइल रहे ।''

''बस ! बस ! अब आगे जरूरत नइखे । तोहार बचपन के नांव कुन्ती रहे।''

सुखदा अपना बचपन के नांव जज साहब के मुंह से सुन के अचरज में पड़ गइली । ऊ कुछ बोलस ओकरा पहिलहीं जज साहब बोले लगलन, ''बचपन में एक बार अपना माई के साथे तोहरा गावे गइल रहीं । रघु पाड़े हमार मामा लागत रहस । एक दिन तोहरा घरे गइल रही । तब तोहार माई एगो पीयर अमरूद देले रहीं । ऊ अतना सुघर रहे कि ओकरा के हम तीन दिन तक ना खइले रहीं । बाद में माई कहलस कि खाजो ना त सड़ जाई तब बिना मन के खइले रहीं ।

माई मरत खा तोहरे से बिआह करे खातिर कह गइल रहे । ऊ तोहरा माई के पहिलहीं कवो बचन दे चुकल रहे । बाबूजी के शहर में नौकरी लागल तब गाँव छूट गइल । माई मरल बाकिर तोहरा से शादी करे के लालसा के लहर लहराते रहे । एक दिन सुनलीं कि तोहार शादी हो गइल । दबाव पड़ल आ हमरो अंगना में अनजान जान उतर आइल ।''

''हाय रे हमार भाग्य !'' सुखदा जज साहब के पैर पकड़ लेली ।

जज साहब के कइसन दो लागे लागल । बुझाइल केहू गर्दन दबावत होखे । छाती में दर्द होखे लागल ।

''कुंती..... छाती..... दर्द.....।'' बहुत मुश्किल से बोल पवले, जज साहब । कुंती जानत रहे कि छाती में दर्द भइल ठीक ना ह । फोन के तरफ बढ़ल। कुर्सी से टकरा गइल । चोट लागल बाकिर ख्याल ना कइलस । फोन खोललस । बोलला पर आवाज ना होत रहे । समझ गइल कि बरसा से तार टूट गइल होइहेंस । गिरत-पड़त गाड़ी तक गइल । ''पों ! पों ! बजा के ड्राइवर के बोलवलस । ड्राइबरे के साथे जज साहब के उठा के कार तक लवलस ।

''अस्पताल ।'' कह के सुखदा कार में जज साहब के साथे बइठ रहल ।

''तेज ! अउर तेज !'' रह रह के कहत जात रहे । सहर अंहरिया के चादर ओढ़ले रहे । सड़क पर सगरो पानी पानी हो गइल रहे । फुट-आध फुट तक पानी लागल रहे । कार नाला में उतर गइल । दरवाजा से लाग के सुखदा के माथा फाट गइल ।

सुखदा जज साहब के साथ जिंदा ना रह सकल बाकिर मउवत के समय उनकरा साथ रहे ।

-भोजपुरी जनपद,
छपरा अप्रैल 1976

www.bhojpurisahityangan.com

एक बार फेर

राधाकांत रिक्सा से उतर के घर के तरफ झपट के चलल । रिकसावाला के भड़ो देवे के याद ना पड़ल । दरवाजा के पार कर के घर के अंदर पहिला कदम रखलस कि सामने से रजनी, ओकरा के पढ़ावे-लिखावे वाला जज साहब के औरत, आ गइल । अखबार एक हाथ में से दोसरा हाथ में कर के बोले खातिर मुँह खोललस । झट से हाथ बढ़ा के रजनी ओकरा मुहँ में लड्डू कोंच देलस । ठठा के हंसल ।

राधाकांत जल्दी-जल्दी मुँह चलावे लागल आ मने मन बोले लागल.... .... ना, हमरा पास होखला के चलते ना मुँह मीठ करवली ह । जरूर कवनो दोसर बात होई ..... हंस ना सकल । आँखिन में लोर छलछला गइल । जल्दी निगले लागल तब सरक गइल । अकबका गइल । खोंखे लागल ।

रजनी बढ़ के माथा दबावे लागल । "पागल हव अइसे ना हड़बड़ाए के। राधा अपना बाप-मातारी के साथ अबहीं इहवे बिया । ऊ का सोची ?"

राधा ? ई कवना लइकी के नांव ह ? हम जानतो नइखीं आ ओकरा हमरा पर सोचे के अधिकारो मिल गइल । कुछ याद नइखे आवत । कतनो जोर डललस बाकिर याद ना पड़ल तब नजर में सवाल उभर के रजनी के तरफ देखलस ।

"हमार बहू । तोहर मंगेतर । जज साहब के दोस्त ठीकेदार अनिल के बेटी ।"

राधाकांत सब समझ गइल बाकिर ई ना समझ सकल कि ओकरा शादी के बारे में ओकरा से काहे ना पूछल गइल ? लइका रहे तब जज साहब के अँगुरी पकड़ के खाढ़ रहत रहे, जब ऊ कुछ खरीदत रहन । होसगर भइला पर ओकर राय लेके ओकरा खातिर कुछ खरीदल जात रहे । ईहां तक कि कपड़ा-लत्ता तक । का औरत एगो कमीजो के बराबर के ना होखे ?

"रउवा हमरा खातिर मातारी से बढ़ के बानी । हम एकरा के मानिला । रउवा ई शादी पसंद बा कि ना ?" मन में आइल अपना एम० ए० के परीक्षा के फल सुनावे के कि एहू साल फस्ट आइल बानी बाकिर चुपे रहल-ओह बारे में । ओकरा लागल कि ऊ एम० ए० के डिग्री बेकार लेलस, एकर कवनो उपयोग ना होई । मन के भाव मने में दफना देलस । जज साहब जानत बाड़न कि ना ? माई जानत बिया कि ना ? जाने के चहलस । पूछल चाहियो के ना पूछलस । कहीं बुरा मान जास । सोचस कि जज साहब बहाना रहले हा । असल बात कि अपना मातारी के राय जानल चाहत बा । लाख कइनी बाकिर

www.bhojpurisahityangan.com

गैर-गैरे रहल ।

राधाकांत के चेहरा देख के साफ बुझात रहे कि ऊ कवनो चिंता में पड़ गइल बा । कुछ तय नइखे कर पावत । ऊपर-नीचे आ जा रहल बा । ओकरा मन में उथल-पुथल मचल बा । रजनी डेरा गइल आ खुशामदी आवाज में बोलल, "बेटा, तोहरा अस लइका पहिले ना देखले रहीं । किताब में पढ़ले जरूर रहीं । लइकाई से तू कबो कवनो बात कटले नइख । तोहरा स्वभाव के चर्चा संउसे शहर करेला । अनिल जी एक बार आइल रहन । तू 7-8 साल के रह। ओही समय तोहरा रूप-गुण पर मोहित होके, तोहरा के जज साहब से, अपना बेटी खातिर माँग लेल रहन । सुखदा ओह रात रात भर खुशी के दिया जरवले रही । आज ई लोग आ गइल बा । चल भेंट करा दीं । बेटा ! जज साहब, हम आ सुखदा तीनों आदमी पीयर पात हो गइल बा । अब गिरी भा तब । आज तक ना कइल तब अब अइसन काम मत करीह जवना से हमनी के तनिको चोट पहुँचे के अंदेसा होय । चार पल बाकी बा हंस के कट जाई । भावना के चूर-चूर मत करीह । विश्वास के महल मत ढहीह । मंजिल पर पहुँचत राधा के पावन में झटका लागी तब थउस जाई ।" रजनी के मन में आइल कि राधाकांत आज-काल के लइकन अस कुछ कह मत दे । रजनी के खुद ना समझ आवत रहे कि राधाकांत अइसन शांत, सुशील आ आज्ञाकारी लइका पर संदेह काहे भइल ? उनकरा मन में भय समाइल होई समय देख के; हाथ जोड़ देली ।

राधाकांत मुस्कुरा देलस । कुछ बोलला पर कुछ बोला जाई; मन चंचल बा । दिल में आग लागल बिया । मुंह खोलला पर धुआँ निकले लागी । जज साहब आइल नइखन । एक-दू रोज में आ जइहन । सून के का कहिहन ? सोच के आँख में आइल लोर पोछत, "रउवा बेकार-बेकार के बात सोचे लागिला । चलीं । मेंहमान लोग बइठल होई । बाजार से कुछ नइखे नू मंगावे के ? आदमी समाज के बनावे ला जरूर बाकिर समाज में रहे खातिर ओकरा समाज के कायदा-कानून के जरूर माने पड़ेला । सब केहू अपना मन के करे लागी तब समाज कहाँ रही ?" कहे के त कह गइल बाकिर ओकरा बुझाइल कि ऊ अपनहीं अपना के समझावत रहे ।

रजनी के खुशी के थाह ना रहे । चारो तरफ एके पाँव पर नाचे लागल। हंसी-खुशी के दाना चारो तरफ छिंटत चले के मन करे लागल ।

राधाकांत के साथ जाके रजनी मेहमान लोग के पास बइठल । राधाकांत प्रनामापाती के बाद बतिआवे के कवनो दोसर बात ना देख के अपना पास भइला के खबर देलस ।

नौकर फोन के चोंगा रजनी के थम्हा देलस । सब केहू ओकरे तरफ

www.bhojpurisahityangan.com

देखत रहे । ऊ दू तीन बार "हलो ! हलो !" कइलस आ चुप होके सुने लागल बाकिर सुन ना सकल आ कटला रूख अस गिर पड़ल । दाँत लाग गइल ।

डाक्टर के फोन कइल गइल ।

पानी के छिंटा देल गइल । जरा सा होश होय तब, "जज साहब कहां गइले ? हमरा के काहे छोड़ गइले ? सुखदा दीदी कहां गइली ?" इहे कहस ।

राधाकांत रजनी के देख भाल में लागल रहे । ओकरा बुझात ना रहे कि ओकरा अंदर ई बुजुर्गी कहां से आ गइल ? ओकरा भीतर झंझावात चलत रहे बाकिर ऊ ऊपर से शांत रहे ।

जज साहब आ सुखदा के मरला के खबर से ज्यादा दुख अनिलजी के एह बात से भइल कि अब शादी एहू साल ना होई । राधा उनका चाहे उनकर परिवार खातिर कवनो बोझ ना रहे बाकिर ओकर शादी ऊ आपन वोइसन ठीका समझत रहन जवना के अंतीम नापी करावे के समय बीत गइल होखे। उनका खातिर आजो राधा बदलल ना रहे बाकिर टोल-पड़ोस के सब लोग अपना-अपना बेटिन के भेज के उनका बेटी के रहल भारी कर देले रहे । अनिल जी एक बार एगो पुल बनवले रहन । अंतीम नापी करावे में दिल-सिल कइले रहन । पुलवा नापी के इंतजार ना कइलस आ चुपचाप एक दिन बइठ रहल । अब ऊ कवनो काम में देर होत देख के कांप जाले ।

राधाकांत के मन में बिचार उठल कि ई खबर घंटा भर पहिले आइत तब रजनी हमरा से कुछ कह ना पइती । हम परोक्ष रूप से 'ह' ना कह पइतीं। पहिले के बात जे रहे से रहे अब रजनी अकेले बाड़ी । इनकर आ इनकरा भावना के ख्याल राखहीं के पड़ी । ऊ सोचे लागल । जज साहब के बगल में सुखदा के चिता धधकत बा । ओहनी के बीच में केहू दोसरो चिता सजा रहल बा । ऊ चाहियो के पहचान नइखे पावत बाकिर ऊ ऊ ना हो सके; ओकरा विश्वास बा ।

एक बार फेर अंधेरा आगे में उतरे लागल । ऊ देखत जात रहे आ बुझतो रहे बाकिर अंधेरा के चुपचाप उतर के तह पर तह बनावहूं देत रहे ।

-जनता ललकार, टाटानगर
अगस्त 1980 (9: 7/8)

●

www.bhojpurisahityangan.com

चुनाव

प्रजातंत्र के बवंडर से जंगल के कोना-कोना झकझोरा गइल । राजतंत्र मुर्दाबाद, प्रजातंत्र जिंदाबाद के नारा लगावत जब खरहन के जमात जंगल में निकसल तब शेर के करेजा दहल गइल । ओकरा गोड़ तर के धरती धसकत बुझाइल । एक बेर ओकर मन कइलस कि छलांग लगा के ऊ खरहन के झुण्ड में कूद जाव बाकिर अपना के ऊ सम्हार लेलस । तले हरिनन के झुण्ड चौकड़ी भरत चिचियात सामने से गुजरल- तानाशाही मुर्दाबाद ।

शेरनी अपना जीभ के लार चाटत शेर के तरफ बड़ी दुलार से देखली।

शेर के मन डवांडोल भ गइल । उनका अपना गोड़ तर के घसकत जमीन इयाद पड़ गइल । ऊ पोंछ डोलावत शेरनी के गर्दन चाटे लगलन । ऊ गते से कहलन, "घबड़ा मत । अहेर खतम होखे द । तोहरा आगाड़ी हरिन के मोलायम-मोलायम, ताजा-ताजा मांस परोसब ।

शेरनी एक बेर अपना देह के रोंवा खड़ा कर के हरिन-झुण्ड के तरफ तकली फिर आपन थूथून शेर के गर्दन में सटा देली ।

शेर हट के छाया में बइठ रहलन ।

लोमड़ी ना जाने केने से अइली आ शेर के पंजरा सट के कहली, "जंगल के हवा खराब भ गइल बा । घंटा भर पहिले हाथी लगे जानवरन के सभा बटोराइल रहल हा ! एक स्वर से तय भइल ह-अब शेर के राजतंत्र जंगल में ना चली । जंगल में प्रजातंत्र होखी । सभकर हक जंगल पर रही ।"

शेर कहलन, "घबड़ा जन । हम कुल्ही देख लेब । देखत बानी कि केकरा बुता बा हमरा के जंगल के राजा के पद पर से हटावे के ?"

"हाथी के नेतृत्व में जवन दल बनल ह ऊ अपना के पीछड़ा कहत बा। कुछ अइसनो जानवर बाड़न जवन अपना के अछूत कहत बाड़न । कहत बा लोग कि हमनी के समानता के हक लेब जा । नीच बन के ना रहब जा । जब ले शेर के राज खतम ना होखी हमनी के चैन से ना रहब जा । कहत बा लोग कि हमनी के जंगल के कंद-मूल खाके, पेंड़न के पतई चबा के आपन जिनगी काट रहल बानी जा बाकिर शेर, चिता, भालू, लोमड़ी, भेड़िया, बाघ हमनी के खून पीके आ मांस खाके मस्ती काट रहल बाड़न । हमनी के जंगल में जीअल मोहाल भइल बा । हमनी का अब अत्याचार ना सहब जा ।" लोमड़ी कहली ।

"सब फलहारी लोग एकवटल बा ।" कह के शेर खिलखिला उठलन।

"हँ !" लोमड़ी के उनकर हँसल नीक ना लागल ।

www.bhojpurisahityangan.com

"ठीक बा । आज रात के कुल्ही मांसाहारियन के बटोर हमरा कंदरा के सोझा क द । हम प्रजातंत्र के घोषणा काल्ह पौ फाटते कर देब ।

रात में शेर के दरबार में बाघ, चीता, भालू, लोमड़ी, गीदड़ के सभा बइठल। सभे घबड़ाइल रहे ।

शेर कहलन, "घबड़इला के काम नइखे । अपने सभन प्रजातंत्र राज में आउरी मउज से रहब । अबहीं त हमनी तनी लेहाजो करीला जा । खून ओतने बहाइला जा जेतना से हमनी के पियास मेटाय । जान ओतने मारीला जा जेतना मांस से भूख मेटाय । बाकिर अब त प्रजातंत्र रही । मनमानी करे के छूट रही । काल्ह से अपने सभन प्रजातंत्र के जयकार करीं ।"

शेर अपना कंदरा में चल गइलन ।

पौ फाटते जंगल में प्रजातंत्र के घोषणा भ गइल । सभ जानवर खुशी में नाचे लगलन । हाथी के चिघाड़, हरिन के चौकड़ी, बंदर के डाल-डाल पर झूमझूम के नाचत; देखत बनत रहे । मोर लोग बिना बादले के ठुमुक-ठुमुक नाचे लागल । चिरइन के चहचहइला से जंगल गूंज उठल ।

हाथी आपन सूँढ़ उठवले अइलन आ शेर से कहलन, "जब ले जंगल के महामंत्री के चुनाव नइखे हो जात, अपने जंगल के राज चलाईं । चुनाव करा के त अपने अपना पद से हटीं ।"

"ना, ना-अपने विपक्षी लोगन के नेता हईं । अपने अब जंगल के कार-बार सम्हारी, हमरा के छुट्टी दीं । शेर बड़ा चतुराई से कहलन ।"

"ना, ना-अपने हमार बात जन उठाईं । सभे से बात कर लेला के बाद हम अपने से निहोरा करे अइनी हां ।" हाथी कहलन ।

"ठीक बा ।" शेर हाथी के बात मान लेलन । चुनाव के घोषणा भ गइल । पहिले-पहिल चुनाव रहे । नामांकन खूब भइल । नामांकन-पत्र के छँटाइयो भ गइल । चुनाव-प्रचार खूब मजेदार रहे । आकाश में चील्ह, कौआ चिचिआ सन । रात में गीदड़-सियार के बारी आवे । हाथी के चिघाड़ शेर आ बाघ के गर्जन से जंगल कांप उठल । प्रचार में कवनो दल कम ना रहे । हाथी के दल कहे, "हमनी गरीब आ कमजोर खातिर चुनाव लड़ रहल बानी । हमनी के आपन जीवन पेंड़ के डाल-पात आ कन्द-मूल पर गुजर कर रहल बानी जा । हमनी के हाथ में शासन अइला पर जंगल में खून बहल बंद हो जाई लूट-पाट ना होई ।"

शेर के दल कहे, "अगर अपने दुनिया में जिंदा रहल चाहत बानी; पड़ोसी के हमला से अपना जंगल के रक्षा करे के चाहत बानी आ असथाई सरकार चाहत बानी तब हमरा दल के हाथ मजबूत करीं । हम जंगल में गरीबी ना रहे देब । अल्पसंख्यक के रक्षा हमार दल करी । केहू अछूत ना रहे पाई ।"

धुआँधार प्रचार के बाद चुनाव के दिन आ गइल । प्रचार बंद हो गइल। बूथन के रक्षा के भार चीतन के दिआ गइल । चुनाव अधिकारी बाघ लोग बनावल गइल । सियार लोगन के मत-पत्र आ पेटी के भार दिआइल ।

www.bhojpurisahityangan.com

बूथे-बूथे मत-पेटी पहुंच गइल । साझ होखत-होखत सियार लोग अपना-अपना बूथ पर बाघ के देख-रेख में पहुंच गइल । दिन भर के धावाधाई में सांझ होखते पेट कुलकुलाये लागल ।

अबका शिकार पर पेट पालेवाला लोग भूखे संझा गावे लागल । बाघ गरजलन । बाकिर सियार सांझ के कब चुप रहलनसन जे आज रहसन । हुँआ-हुँआ के गूंज से बूथे-बूथ गूंजे लागल ।

चालाक लोमड़ी इशारा पाके गते से बूथ पर पहुँच गइली । हाव-भाव देखावत हाथ जोड़ के मतदान अधिकारी से कहली, "अपने घबड़ाईं जन । चुटकी बजावत कुल्ही इंतजाम हमनी के कर देब जा । अपने आराम से आपन आसन धरीं । अपने त जानते बानी, हाथी के दल फलाहारी ह । कन्द-मूल आ पतइन पर गुजर करेवाला । साँझ होखते सभे आपन-आपन मान आ घोंसला ध लेला । रात में बाहरो ना निकल सके लोग । रात त हमनी मांसहारिन खातिर बनल बा । अपने थोड़का काम करीं ।" लोमड़ी बात खतम कर के एक ओर लचकत चल गइली ।

अबहीं तनी सांझ रहे । एह से कुर्त्ता-पैजामा आ बाण्डी पहिरले एगो बानर आइल । विरोधी दल के कार्यकर्त्ता के देख के सियार लोग सहम गइल। बाघ के जीभ चटपटाये लागल । ऊ एक बेरी गुरना के उनका ओरी तकलन।

बानर लपक के पेंड़ के एगो डाल ध के झूम गइलन आ डाले-डाले ना जाने कहंवा अलोपित भ गइलन ।

सियार लोगन के तेज चलत सांस के गति कम गइल । सियार लोग डेराइल रहे । बानर के मुंह देखला पर भोजन ना मिली । थोड़का देर बाद लकड़बग्घा अपना दांत में एगो हरिन जंतले आइल आ बूथ के पंजरा रख के हुंकरलस । सभे के जीभ चपचपा गइल । भूख के आग तेज भ गइल । गते गते सभे ओकरा पंजरा जूट गइल ।

ना जाने केने से लोमड़ी हांफत अइली आ कहली, "अपने सभन के आज जेतना मांस खाइल पार लागे, खाईं । मांस खाये आ खून पीये के पूरा जोगाड़ हमरा ओरी से बा । बाकिर .....।"

"बाकिर का ?" सभे एक संगे पूछल ।

"अपने सभन हमार जात-बेरादर बानी । हमनी के आद-अवलाद के जिनगी खून-मांस पर टिकल बा । जंगल में हरिनन के राज भइल तब जान लीं । अपने सभे के बंश-परम्परा मेंट जाई । नीचन के हाथ में एको बेर जंगल के राज गइल; कि हमनी के नाश भइल । हमनी के इमान-धर्म के ताखा पर रख के अपना धर्म के पालन करे के चाहीं । जइसे होखे जंगल में फिर से शेर के दल के राज बनावे के पड़ी । तबे हाड़-मांस के स्वाद मिली । हरिन, बानर, सुअर आ खरगोश के बल पर हाथी का दल के राज जंगल में होखते: हमनी कतहूं के ना रह जाइब जा ।"

"तब हमनी के का करे पड़ी ?" सभे पूछलस ।

"अपने सभन पेटी-सेटी हमरा हवाले करीं । मस्ती से हरिन के मांस भकोसीं । हम सब ठीक कर देब ।" लोमड़ी कहली ।

www.bhojpurisahityangan.com

चुनाव करावे आइल दल मास पर टूट पड़ल ।

लकड़बग्घा एगो लइका के ले आइल आ बाघ के आगाड़ी में पटक के अपना ओठ पर लागल खून के चाटे लागल ।

ओने भेड़िया के मदद से लोमड़ी ओह बूथ पर के आठ सौ भोट में से साढ़े सात सौ पर शेर दल के चिन्ह पर मोहर मार के, पेटी में बंद कर देली । ओकरा के सील क देली ।

खट-खुट के आवाज सुन के मतदान पदाधिकारी अपना मुंह में लड़िका के बांह जंतले भीतर झंकलन आ गुरना के तकलन । लोमड़ी हंस पड़ली ।

"तू हंसत बाडू । हमनी के नौकरी पर आपत आ जाई । मतदान भोर सात बजे से होखी आ पेटी तू आज राते में सील कर देलू । मतपत्र पर हमार दस्तखतो नइखे ।" बाघ लड़िका के बांह जमीन पर गिरा के कहलन ।

"राउर दस्तखत भेड़िया क देले बाड़न । रउरा न कहब तब नू बात फंसी । चुपचाप जाई, लड़िका के मांस खाके मस्ती में रात काटीं । प्रजातंत्र ना होखित तब मुंह में लड़िका के मांसो ना ठेकित ।" लोमड़ी कह के हंसत दोसरा बूथ के तरफ चल गइली ।

भोर होखते जंगल के रूपे बदल गइल । झुंड के झुंड खरगोश लोग अपना मान से निकल के मतदान केंद्र के तरफ चलल ।

बानर आ हरिन लोग अलगे चमकत-दमकत भोट देबे निकसल । बूथ के चारो तरफ मोड. मोड़ पर बाघ, चीता, भालू आ लकड़बग्घा के देख के सभे अपना मान में दुबक गइल । बूथ के दरवाजा अतना छोट रहे जे ऊ लोग ओह में ना ढुक सकल । केहू भोट ना दे सकल ।

अगिला दिन भोट गिनाइल । शेर के दल जीत गइल ।

शेर प्रधानमंत्री बन के फिर जंगल में राज करे लागल । चीता, भालू, लोमड़ी आ लकड़बग्घा लोग मंत्री बनल । विजय-दिवस पर शेर के भाषण बड़ा नीक भइल।

ऊ कहलन "अब जंगल में प्रजातंत्र बा । सभे के हक बरोबर बा केहू छोट नइखे। हमार राज कमजोर आ गरीब के रक्षा करी । हम बचन देत बानी कि जेह दिन कवनो कमजोर पर केहू हाथ उठाई, हम ओकर हाथ चबा जाइब ।"

उनका भाषण पर बड़ा जोर से ताली बाजल । सभे शेर के जय जयकार मनावे लागल ।

"जवन भइल ओकरा के अनहोनी ना कह सकीं । ई त होखहीं के रहे आ ई तब तक होई जब तक समाज में असमानता रही । रोगी, भूखल, कमजोर कतनो धाई कारवाला से ना सकी बाकिर हम इहो कहब कि विरोध अर्थहीन ना होखे ।

-चाक, मार्च 1982 (1:1), छपरा

www.bhojpurisahityangan.com

हम ना मानब

आज दिन भर बरसा भइल रहे । आरा सासाराम सड़क पक्की ह बाकिर बरसात में एकर दुरदासा हो जाला । करीब पाँच हाथ चौड़ा पक्का कइल बा। बड़ी चालू सड़क ह । जब दूगो ट्रक, बस आमने-सामने से पास करे लागे लिस तब दूनो के एक एक चक्का कच्ची पर उतारे पड़ेला ।

कोयला, गिट्टी, सिमेंट, छड़ जइसन भारी सामान से भरल ट्रक वाला पक्की पर से चक्का के उतारे के नाँव ना लेलनस आ सड़क जाम हो जाले।

पाँचे बजे से सड़क पर रहीं बाकिर कवनो गाड़ी ना अइलिस । यात्री भरल रहन । पौने सात बजे एगो ट्रक आइल । रूकत बुझाइल तब सभ केहू ओकरा तरफ लपकल । कुछ लोग चढ़ गइल । ट्रक खुल गइल आ हम ना चढ़ सकनी ।

ट्रक थोड़े दूर जाके रूकत बुझाइल । हम ओकरा तरफ लपकनी । ट्रक के ड्राइवर नास्ता करे होटल में चल गइल रहे । जाके हमहूं ट्रक पर चढ़ गइनी ।

ट्रक चलल जात रहे । यात्री लोग दू-चार के गोल बना के बात करे में लाग गइल रहन ।

ट्रक जगह-जगह रूकत यात्री लोग के उतारत चढ़ावत चलल जात रहे । एक जगह रूकल । कुछ लोग चढ़ल । एक आदमी हमरा सामने खाली घोड़ा के बंडल पर आके बइठ रहल । ओकरा गोदी में एगो डेढ़ दू साल के लइका रहे । लइकवा गोर रहे बाकिर ओकरा हाथवा पर गोल-गोल दाग रहे । एक नजर में ऊ दगिया दिनाय अस बुझाइल बाकिर धेयान से देखला पर ऊ दिनाय ना रहे ।

हम पूछे खातिर लइका वाला के मुंह के तरफ देखनी । ऊ हमरा बाँये बइठल आदमी के बात सुने में लागल रहे ।

"इहंवा काहे चढ़ल हा ?"

लइकवा के तरफ देखत, हाथ से ओकरा हाथ पर के दाग देखावत ऊ बोलल, "देखत नइख । ई पंद्रह दिन से भइल बा । पहिले एकदम कोहड़ा अस रहे । पंद्रहे दिन में सुखा के कांट हो गइल । पहिले त आदमी बुझल कि दिनाय ह, ठीक हो जाई । दिनाय के दवाइयो कइल गइल बाकिर जब ठीक ना भइल तब चिंता बढ़ गइल । बड़ी नोचेला एह से खराब रोग ना कहल जा सके । एक आदमी बतवले रहे कि इहां एगो बैद जी बाड़न जे एकर दवा करेलन । उनकरे खातिर आइल रहीं ।

"भेंटइले हा ?"

"ना । दिन भर के समइयो चल गइल । रोपनी कबरिया के समय ठहरल । एकरे पाछा खेती चउपट होखे चाहत बिया । फिर आवे पड़ी। कहत रहे लोग कि रात में उहां के जरूर आइब बाकिर अतना छोट लइका लेके रात

www.bhojpurisahityangan.com

भर कइसे राहेला ?''

''एगो काम कर । एतवार-मंगर के भोरे आव । हमरा गाँव के मुखिया के बड़ भाई बाड़न । ऊ बढ़िया से देखेलन । सब केहू के ना देखस बाकिर हमनी के कह देब जा तब तोहार काम कर दिहें । देख के बता दिहें । सब सामान तइयार कर दिह। ऊ कवनो दिन जाके बइठा दिहें ।''

''हमहूं जानत बानी ऊ देर दिन से देखेलन बाकिर सब लोग ना जाने। बाकिर एक बात बा । हम ऊ पहिले कह देब । ऊ जे कहिहें करे पड़ी । छल कइला पर, नकली दू नम्बर के सामान जुटवला पर, खिसिआइयो जालन'' हमरा दाहिने बइठल एगो अधबुढ़ आदमी बोलल । ऊ हमरा बाँये बइठल आदमी के साथ ही ट्रक पर चढ़ल रहे । अब बात से बुझाइल कि उहो ओकरे गाँव के ह ।

'' बेसी कुछ ना माँगस । एक-दू बोतल पहिला पानी वाला दारू चाहे पचास, दू-चार आना भर गाँजा । आउर कुछ ना ।'' बाँये बइठल आदमी फिर बोलल तब हमरा ना रहाइल आ कहनी, ''बैद जी ना मिललन हां तब आज घरे जा । काल्ह बिक्रमगंज चल जइह । डुमरांव रोड में एगो बैद जी रहेलन । उनकरे से तू एकरा के देखइह । अच्छा त होइत कि तूँ एकरा खून के जाँच करइत । पूरा पूरी कारन मालूम हो जाइत तब एकर रोग ठीक होखे में देर ना लागीत । ओझा गुनी के फेरा में पड़ब तब बेकार परेशान होइब; फायदा त कुछ होई ना ।''

''अइसे काहे कहत बानी ?''

''हम ठीक कहत बानी । तोहरे अस दलाल ना त बेवकूफ आदमियन के सहारे ओहनी के चानी काट रहल बाड़न स । मौज-मस्ती उड़ा रहल बाड़न स । जब अपना माथे पड़ेला तब अकिलिया कहाँ चल जाले ? तब लोग कहेला कि अपना घरे ओझाई ना होखे । हमार गुड़ हमरा घर के लोग के मीठ ना लागी ? हम मारब तब हमरा घर के लइकन के घाव ना लागी ? हम ....?''

''रउआ सभे अँगरेजी नू पढ़ल बानी । धर्म-कर्म से रउआ सभे के कवन काम बा ।''

''गलत बात कहत बाड़ । एह में धर्म के मत घुसाव । धर्म देखावे के चीज ना ह । धर्म नाँव ह दोसरा के भलाई कइला के । धोखा देल धर्म तोहार होई, हमार ना ।''

''एही से नू पहिले मना कइल जात रहे लोग के अँगरेजी पढ़े से ।''

''अँगरेजिये ना कवनो विद्या पढ़े से आदमी के अकिल होले । अकिलमंद आमदी के ठगल आंसान ना होखे । एही से चल्हांक आदमी दोसरा के पढ़े ना देला । कवन पढ़ल-लिखल आदमी ना चाहे कि ओकर लइका पढ़ीत ? पढ़ल-लिखल आदमी जवन ना चाहे कि दोसरा के लइका पढ़-लिख जाय उहे दोसरा के लइकन के पढ़त देख के ना कहेला कि पढ़-लिख के जज बनब ? सब कुकुर काशिए जइहन तब हांड़ी के ढुंढ़ी ?''

''ए बाबू साहब ! हमहूं ओझा गुनी के ना मानी । एक बेर के बात ह।

www.bhojpurisahityangan.com

हमरा भवहिया के लइका होखे के रहे । समय से पहिलहीं दर्द होखे लागल रहे। दिन ही से दर्द होत रहइस बाकिर हमरा से ना कहलीस । सांझ खा सात बजे कहलीस । पूछनी कि ढेर दर्द बा ? कम होखे तब रहे द स भोरे देखल जाई। ना ढेर होखे तब कह स कि बाजार ले जाये के तइयारी करीं । कहलीस कि ढेर नइखे । समय के पहिले बा एही से ना त कवनो बात थोड़े रहे । हमहूं महटिया देनी । का देखत बानी कि बड़का भइया मोहना के लेले आवत बाड़न। ऊ हमरे गाँव के रहे । ओकरा चाल-चलन के सभे दुसेला । इहो जानत रहीं कि ओझाई के नाँव पर गंजा-दारू उड़ावत रहेला । ओकर आइल हमरा बुरा लागल बाकिर भइया लिआ आइल रहन, एह से कुछ ना कहनी । जब ओकरा से नजर मिलल तब ऊ ओठे तर मुस्काइल । हमरा लागल कि ऊ कहत होखे, तोहरा अस ढेर लोग के देखले बानी । आ गइल नू तुहूं मुट्ठी में । कहाँ गइल हमार विरोध कइल ?

भइया के तरफ देख के आ ई सोच के कि भोरे त ले जाके देखइबे करब एह घड़ी एकरा के देख लेवे द । इहो बात एह से सोचनी कि ओह घड़ी हमरा ओझाई के कवनो बेवहारिक ज्ञान ना रहे । अब के बात रहित तब त एको घड़ी ना ठहरे दितीं ।

जान जाइब कि ऊ झूठमूठ के नखड़ा करत रहल । ऊ देखते जान गइल रहे कि केस खराब बा बाकिर कुछ ना कहलस । जब कि 10-11 बजल तब छोटका भइयवा जाके देखलस । भवहिया लाजबान हो गइल रहे । रह रह के बेहोश हो जात रहे । ऊ मारे खातिर तइयार हो गइल तब कहलस "आरा ले जा लोग ना त ना बांची ।"

फिर का रहे ? अतना सुनते छोटका उनकरा के घर में से खींच के आँगन में ले आइल आ खूब बना के मरम्मत कइलस । "जान लेके छोड़ल । हम तोहरो जान ना छोड़ब ।"

ना छोड़इतीं तब जाने ले लित । हमरो त खिस बरले रहे बाकिर बार्द में निपटे के सोच के जल्दी से जल्दी आरा पहुँचे के सोच के; ओकरा के छोड़ा के घर से बहरी भगवनी ।

खाट पर टांग के भवहिया के सड़क पर ले गइनी । सड़किया से सटले पछिम एगो घर बा हमरा गाँवे । देखले होखब । ओह में ओह घड़ी एगो टमटम वाला रहत रहे । ओकरा के जगा के, टमटम कसवा के कातर गइनी । ओही रात में जगा के एगो जीप वाला के ठीक कइनी पहिलही मुंहमागाँ देके ।

इमरजेंसी केस रहे । आरा पहुँचे के जल्दीबाजी रहे बाकिर उफरा परल कुकूर के पीठ अस सड़क जीप के ना चले देत रहे । जीपवाला कतनो बचा के चलत रहे बाकिर आदमी के देह भंवर में पड़ल नाँव अस डोलत, उठत, पटकात रहे । कबो ऊपर घाव लाग जाय तब कबो नीचे ।

भवहिया के छोड़ के जीप में हमरा घर के चार आदमी रहे । दूगो मरद आ दूगो औरत । हमनी के दूनो आदमी आगा ड्राइवर के बगल में बइठल रहीं जा । पीछा जीप में भवहिया के माथा अपना जंघा पर धर के, अलग-बगल बिछावन आ अउर दोसर सामान धइले माई बइठल रहे । भउजी ओकरा गोड़ देने बइठल रही ।

www.bhojpurisahityangan.com

भवहिया घरहो से बेहोश हो गइल रहे । तनी मनी पानी के छिटा देके कोशिश कइल गइल रहे । जब ऊ होश में ना आइल रहे तब छोड़ दिआइल रहे । कातर में सरकारी आस्पताल के एगो दाई रहेले । ऊ सूई देले रहे तब भवहिया आँख खोल देले रहे । इसारा से माँग के पानी पीअले रहे । बाकिर उठ के बइठल ना रहे ।

भवहिया उठ के बइठ रहल । कतनो कहलिस बाकिर ऊ ना सुतल । मुंह देखे से बुझात रहे कि दांती लगवले होखे । बीच बीच में उठहूं के कोसिस करे । माई-भउजी ओकरा के उठे ना देत रहीस ।

आरा-सासाराम सड़क पर चलल होखब तब देखलहीं होखब । सब गाँव के नजदीक लोग ठोकर बना देले बा । ड्राइबर ठोकर बचा बचा के चलत रहे बाकिर रात में ना बुझाइल आ एगो ठोकर पर जीप उछल के ठांय देना गिरल।

भवहिया के मुंह से आहि अइसन आवाज निकसल आ ऊ माई के गोदी में गिर पड़ल ।

भउजी माई से कहली आ माई हमरा से तब हम ड्राइबर के एह के जीप रोकववनी ।

मरल लइका गिर गइल रहे ।

ड्राइबर कहत रहे, "जीप चलत रहे दीं । कवनो घर आई तब हम रउआ सभे के उतार देब ।"

हम कहनी, "जरा सा रोक । कुछ त कइले जाई ।"

सड़क के बगल में चाट में देखनी । कतो पानी रहे त कतो खाली कादो-पांकी । पांकी हटा के लइका के तोप देनी । पानी ले आके टार्च के रोशनी में जीप के धो-पोछ देनी । ड्राइबर से कहनी, "एह रात में इहां रह के का करे के बा ? आरा चला । हमनी के अस्पताल में उतार दिह । सूई बगैरह के बाद देखल जाई ।"

ड्राइबर बड़ी भल रहे । ऊ मान गइल आ हमनी के आरा अस्पताल में पहुँचा देलस ।

डाक्टर लोग कहल, "राउर समय ठीक रहे कि आरा ले अइनी । ओझाई के फेर में रह जइतीं तब जानो से हाथ धोवे के पड़ित ।"

जान जाइब कि हम तबे से ओझा लोग के फेरा में ना पड़ीं । हमरा घरे कबो ओझा लोग ना जास ।"

ट्रक गड़हा में पड़ गइल रहे । ट्रकवा बड़ी जोर से उछलल तब लइकवा डेरा गइल । ऊ जोर जोर से रोवे लागल । हमरा उतरे के जगह आ गइल रहे। ट्रक रूके लागल तब हम उठ के उतरे खातिर चल देनी ।

"ई त आपन आपन विश्वास ह । मान त देव ना त पत्थर ।" फिर बाँयेवाला बोलल तब लइकवा वाला जबाब देलस, "तू मान हम तोहरा के मना करे नइखीं जात । ठोकर खइब तब बुझाई । बाकिर हम ना मानब ।"

हम उतरत उतरत कहनी, "चल्हांक आदमी पहिले चेत जाला । ठोकर खाके, नाक-भुभुन तुड़वा के चेतल से का चेतल ।"

● -भोजपुरी वार्त्ता, पटना, नव दिस० (1:4)

www.bhojpurisahityangan.com

मंथरा

अब गाँव के बेरूखी बर्दास्त करे के आदत पड़ गइल बा । बेरूखी देख-सुन. के अब उदास ना होखीं । पहिले गाँव वालन के निमनो बात के विरोध करत देख देख के उलझन में पड़ जात रहीं । सोचत सोचत पागलपन के हद तक पहुँचे पहुँचे हो जात रहीं । गाँव वालन के विरोध आ हमार सोचल अंतहीन सिलसिला हो गइल रहे ।

अब ऊ बात नइखे । गाँववालन के निरर्थक विरोध आ अपना मन के ओह उलझन से ऊपर उठके अपना शक्ति के संग्रहीत करके, फिर से लिखे-पढ़े में लाग गइल बानी । अफसोस कर रहल बानी अपना भावुकता में पड़ के गँववला समय खातिर ।

पहिले हमार मन घोड़ा अस सीधे सरपट दउड़त रहे । आग-पाछ, दाँये-बाँये देखें के फुर्सत ना रहे । बच बच के पाँव धरे के आदत ना रहे । इहे कारन रहल कि भलाई के बादो छोट से छोट खिलाफत सुने के मिलत रहे त हम जमीन से उखड़ जात रहीं । रात दिन सोचत रहीं आ लिखल-पढ़ल सब, छुटल जात रहे ।

ओह दिन सांझ खा जब सब केहू मर-मैदान हो के घरे चल गइल रहे। किसान-मजदूर लोग लौट गइल रहे । आरा से तुरारी जाये वाली आखरी बस चल गइल रहे । गाँव के तरफ से आवत लालटेन के रोशनी पुरान हो चलल रहे । पुलिया पर से उठ के हमहूं चलनी तब धोती ठीक करत पनछोपा से उठके, अपना तरफ आवत चाना के देखनी त गते गते चले लगनी ।

"के ह ? कन्हैया भाई ?"

"हं हो । आव । का हाल बा ?"

"तनी हेने आव । "कहत हमरा के सड़क से उतार के अपना खरिहानी में ले चलले ।

केहू के बात में फंसा के, अलोत में ले जाके मार-मरवा देवे के घटना हमरो गाँव में नइखे भइल से ना कहल जा सके बाकिर हम आज तक अइसन कुछ नइखीं कइले कि केहू हमार जान लेवे पर उतारू होई ।..... सोच के बढ़त गइनी ।

ऊ जाके खरिहानी में बइठ रहले तब हमहूं बइठ रहनी कि हम बइठ रहनी त ऊ बइठ रहल खेयाल नइखे । जादे संभावना कि पहिले हमहीं बइठल होखब, काहे से कि ढेर देर तक खाढ़ होके बात कइल हमरा पार ना लागे ।

"रउरा आपन समझ के कह दिला आ लोग बुरा मान जाला ।"

"तू त जानते बाड़ कि हमरा से सात जनम के मुदइयो के बुराई ना हो सके । केहू के बिगड़ल ना देखल जाय ।"

www.bhojpurisahityangan.com

"लोग बा कि गिरत देख के दू लात जमा देला कि बांढ़ेया से गेर जा, जल्दी गिर जा आ रउरा बानी कि बढ़ के उठावे लागिला । लोग गलत सलत माने लगावे लागेला ।"

"का भइल हा ?" जाने खातिर चुप लगा गइनी ।

"रूदल के घरे कह आइल रहीं कि .....?"

"तोहरा घरे मुंडेरा वाला शादी ना करी । दोसरा से बात करत बा । जाके आपन रूपया ले आव या बात कर के तइयार कराव । "हम उनका बात के पूरा कइनी ।

"कहत बा लोग कि रउरा मुंडेरा गइल रहीं । रउरे कुछ कह के शादी कटनी हां ।"

सुन के हमरा छांय देना लागल । ई अछरंग लगावल रहे । हमरा भीतर उथल-पुथल मच गइल । आज रूक के केहू के बात के जाँचो करे के फुर्सत केहू के नइखे । केहू गलत बात कहत होखे तब केहू रोकहूं टोकहूं वाला नइखे ?

"तोहरा से के कहत रहे ?"

"अब त एह बात के मुतना घर-घर में पहुँचा देले बा । हम त उदले से सुनले रहीं ।"

"कब तोहरे से कहत रहन ?"

"कहते ना रहन । काटल-काटल गारियो देत रहन । कहत रहन, "हमरा बेटी के बिआह कन्हइयवा कटले बा । जाते जात भेंटा जाइत तब गोली मार दिहतीं आ मन के मुराद पुरा कर लिहतीं ।

हमहीं खाली ना रहीं । योगी, प्रसादी, शेखर आ मुसनो रहन । हम, योगी आ शेखर जग्य देख के आवत रही जा । प्रसादी आ मुसन उनके साथ गइल रहन । मुंडेरा से रूपया लेके आवत रहन जा । अब शादी ना होई ।"

शादी ना होई । ई विश्वास त हमरा पछिले साल हो गइल रहे । लोग गच्छल रूपया पुरा ना करत रहन आ बहाना बना बना के समय टारत चल जात रहन । गच्छल रूपया तुरते ना देला पर बेटहा के ऊपर खराब प्रभाव पड़ेला । गाँव घर पूछे तब लोग कह दे कि लइकवा वाला आगे साल करे के कहत बा तब हम का करीं ? गाँव जान गइल रहे कि लोग ढेर रूपया गच्छ लेले बा आ अब मोह लागत बा या पुरत नइखे ।

केहू केहू कहेला कि दोसरा के कहला में लोग गच्छ लेले रहे बाकिर अब अपना से तउलत बा त ओतना लायेक नइखे पावत आ पैर खींचले बा । ना त, रूपया जुटावल इनका लोग खातिर कवनो कठिन काम नइखे । हम सोचत रहीं कि ऊ फिर कहले, योगी कहले कि आजे, इहां सभे के सामने विक्रमगंज में हमरा उहवें के एगो हीत से भेंट भइल रहे । ऊ बोकारो काम करेलन । गाँव में छुट्टी में आइल बाड़न। ऊ कहत रहन कि रउवा गाँव के लोग अब जात रहे तब रंगदारी से बात करत रहे। बुझात रहे कि उहे लोग

www.bhojpurisahityangan.com

बेटहा होखे एही से शादी ना भइल हा ।''

शेखर कहत रहन, ''हमनी के जग्य देख के आवत बानी जा । उहवे अपना भगिनिया के शादी ठीक करवले रहीं । राते बेटहे किहां रहीं । भोरे दिन ठीक ठाक करा के, कागज ले लेले रहीं । भोरे नास्ता के बाद गाँव के बहरी तक विदा करे आइल रहनस । हमनी के जग्य भिरी चल गइल रहींजा । थोड़े देर के बाद उहाँ एगो लइका आइल रहे आ हमनी के लिआ गइल रहे । जवन बुढ़वा भोरे दिन ठीक करवले रहे उहे हमरा हित के देल रूपया हमरा के लौटावत कहलस- ''लइकवा शादी खातिर तइयार नइखे ।'' का करितीं ? हम रूपया ले के चल अइनी हां । योगी के आ हिनका सामने के बात हं; पूछ ल । उहां जायके का रल ? सब होनी ह । ना होखे के रहे, ना भइला केहू के दोष देल बेकार बा ।''

''कन्हइया भाई अइसन ना हवे । हमरा विश्वास नइखे कि ऊ अतना नीच काम करिहें । आज तक ऊ केहू के बनावे छोड़ के बिगड़ले नइखन । कहनी तब ऊ कहे लगलन, ''ऊ सासाराम से आवत खा उहां के केहू से शिकायत कइले रहन आ हमरा घरहूं जाके कहले रहन ।''

''सासाराम से आवत रहीं । हमरा जीप पर पाछा एक आदमी के हमार साथी अफिसर बइठा देले रहन । बिक्रमगंज में उतार देवे के रहे । ऊ उहवे काम करेलन । हमरा बराबरी के पद पर बाड़े ॥ कबो के भेंट ना रहे । गया जिला के हवन । परिचय बढ़ला पर कहले रहन कि अपना गाँव के रूदल से कह देब कि मुडेरा वाला दोसरा से बात कर रहल बा । आके आपन बात पक्का करस भा आपन रूपया ले जास । इहे बात कहे खातिर हम रूदल के दुवार पर गइल रहीं । भेंट ना भइला पर उनका चाचा से कह देले रहीं । उहां उनका घर के लइको रहनस ।''

''रउवा त ठीक कइनी । मिलल खबर पहुँचा देनी ।''

''एक़र माने त ई कि मिलल खबर ना पहुंचइतीं ?''

''उहो ठीक ना होइत। जानत बानी ऊ इहो कहत रहन कि ई शादी त हमरा खुदे पसंद ना रहे आ हम चाहतो रहीं कि कइसे टूट जाइत ।''

''मुसन का कहत रहन ?''

''ऊ का कही ? ओकरे त सब कारसाजी ह । सभे उनका के समझावत रहे बाकिर ऊ कुछ ना बोलत रहे । चुपचाप घुआ अस लगवले रहे ।

केहू के पैर के आहट मिलल तब देखनी । यमुना रहन । आके उहवे बइठ रहले तब पूछनी, ''तुहूं कुछ सुनल हा ?''

''हं जी ।'' मुसना कहत रहे, ''कह भला । कन्हइया के अइसन चाहत रहे । रूदल कहत रहन कि उनका लइकिया के शादी काट देले हा ।''

''ना हो । रूदल का कहिहें । ई सब मुसन कहत बाइन ।'' मन उदास हो गइल रहे । दिमाग चक्कर काटत रहे । कुछ के कुछ कहा जाई तब ठीक ना होई। सोच के उठनी आ अपना घर के राह लेनी ।

www.bhojpurisahityangan.com

हमार गाय, बाछी कइएक दिन से भीतरे रहीस । वर्षा के चलते एके स्थान पर राखे के पड़त बा । दुवार के सामने परती पर निकाल के बान्ह देतीं बाकिर खूंटा खाली ना रहनस । एक दिन देखनी । दू दिन देखनी । तीसरा दिन मुसन के लइकवा से कहनी, "हमरे खूटंवा पर बैलन के बान्ह देत बाड़ । पोखरा पर काहे ना ले जा ? तूँ त उहाँ बान्हत रह । हमरा घरे के बा- पोखरा पर ले जाये वाला ?" ऊ जाके हमार बात अपना बाप से कहले रहे । मुसन पूछत रहन "का कह देनी हां ?" दुख लागल हइस । अब बुझात बा कि दुख ओकरा ना मुसन के लागल रहे ।..... एही से ऊ हमरा विरोध में लोगन के भड़का रहल बाड़न । ..... इहे सब सोचत अपना दुवार पर बइठल रहीं । हम गली में जात महीपाल चाचा के देखनी तब इशारा से बोलवनी ।

ऊ आके चौकी पर बइठ के हमरा तरफ ताके लगले । तब कहनीं, "हम त आज तक मुसन के बनावे छोड़ के बिगड़ले नइखीं बाकिर ऊ हमरा पाछा हाथ-गोड़ धो के पड़ गइल बाड़न । तनी समझा द । समय के ना कहल जा सके । कान के विष ना सहाय । ना त पूछ कि हम उनकर कुछ बिगड़ले बानी । तू जे कहब हम मान जाइब। कहत चलत बाड़न कि हमहीं रूदल के बेटी के बिआह कटनी हां । तोहरा साथे रहेलन । एही से .....।"

"ब्रह्मपुर मेला गइल रहींजा । रात में हमरो से कहत रहे ।"

"तब हम का कहीं ? तूँ त सब जानते बाड़ ।"

"हम त खूब जानत बानी । रउवा नइखीं जानत तब जान लीं । ऊ हमरा साथे रहेला । हम ओकरा खातिर जे कइले बानी, ऊ ओकर बापो ना कइले होइहें। बाकिर ऊ भुलाइयो के कबो हमार बिगाड़े से बाज आइल होखे। ऊ असली राड़ ह । जवना पत्तल में खाला ओही में छेद करेला । हमहीं ना सउँसे गाँव जानेला कि ऊ केहू के भल ना ताके ।

हम उनकर मुँह ताकत रह गइनी । हमरा तनिको विश्वास ना होत रहे कि केहू अइसनो हो सकेला जेकरा दोसरा के खुशी में आग लगा के सुख मिलत होई । भेंट गइला पर कतना मीठ-मीठ बात करेला । हमउमिरिया ह। लइकाई के इयाद दिला दिला के हीत बनेला । पाछा में ई हाल बा ?

हमार मेहरारू सुनली त कहे लगली, "बगल वाली एक दिन कहत रही कि गाँव भर में हाला हो गइल बा । रउवा शादी कटनी हां । हम रउवा से ना कहत रहीं कि रउवा सुनब त बेचैन हो जाइब । रात दिन एही पर सोचत रहब। रउवा आगा में मीठ-मीठ बोलेला तब रउवा विश्वास कर लिहिला । ऊ पक्का धूर्त ह । काइयां ह। कतना घर के बर्बाद कर देलस लड़ा लड़ा के । दुवार पर बइठा के बात करिला तब देख के हमार देह जर के भुसा हो जाले । ओइसनो आदमी के बइठावे के ह ।"

हमरा ना बुझाय कि ई रहेली घर में आ बाहर के बात सुन-जान के कइसे एकदम ठीक निर्णय पर पहुँच जाली ।

www.bhojpurisahityangan.com

''मुसना पक्का राड़ ह । ओकरा बात पर केहू विश्वास करो त आपस में फुटौवल कर ली, लड़ के मर जाई । ओकरा बात पर केहू विश्वास करेला ?'' कहियो भाई के दुवार पर केहू से कहल ई बात हमरा दुवार तक हवा में तैरत आके हमरा के कुकुरमांछी अस बिंहले रहे । ओकरा डंक के दर्द आज ढेर महसूस कर रहल बानी ।

अन्हार हो चलल । शिकायत सुन के लोग भाव बदल लेले बा । मन भारी-भारी बा । हमरा के दोसरा नजर से देख रहल बा । हमरा नइखे बुझात कि लोगन के चेहरा पर उग आइल एह अनचाहल जंगली घास के कइसे हटा दीं ।

''कवनो तरकारी नइखे ।'' कहत हमार मेहरारू झोरा आ रूपया बढ़ा देली। उठ के दोकान तरफ चल देनी ।

पहिले मोड़ पर पहुँचल रहीं कि रूदल से सामना हो गइल । मन भयभीत हो गइल कि ना जाने कि अब का होई ? रूदल हमरा पर एक नजर फेंकत आ हरमेसा अस मुस्कात आगे बढ़ गइलन । हम दावा के साथ कह सकत बानी कि उनका नजर में हमरा प्रति घृणा भा क्रोध के भाव ना रहे । बुझाइल जइसे रूदलो कबो भाई के दुवार पर वाली बात सुनले होइहें त हमरा प्रति उपजावल क्रोध के बढ़ल नोह अस टुंग देले होइहें ।

वादो में कुछ ना भइल । हमहूं सब जान के अनजान बन गइल बानी। मुसन मिलेले तब पहिलहीं अस बात होले । एहिजे रहे के बा । एही लोग के बीच रहे के बा । फिर बातचीत बंद रहित कइसे ? बिना बात कइले केहू जिंदा रह सकेला ? जान-बूझ के जहर पी रहल बानी । पहिले इहां के कतो भाग जाये के मन करत रहे बाकिर अब ना करे ।

''जागत रह ।'' सुतल लोग के बीच चिल्लात बानी । कबो केहू के आँख खुली तब हमार आवाज ओकरा कान से टकराई । हम मानत बानी कि समाज में धन-दौलत के प्रधानता आदमी के अंदर आदमियत नइखे रहे देले बाकिर एकर अंत होई । ई हमरा विश्वास बा ।

अंहरिया त रउवो रास्ता में कांट उगा देले बिया । राउरो खुशी कपूर हो गइल। रउरो एह अंहरिया के मिटावल चाहत बानी । रउवा भक्त हईं । अवतार होई, हाथ पर हाथ धर के बइठल रहीं, ओकरे भरोसा पर बाकिर हम ना बइठब । हमरा के जतने सपरी एकर जड़ खोदत रहब ।

रउरा मंथरा के ना; नियति के दोष दीं बाकिर हम त अइसन समाज चाहत बानी जवना में केहू के मंथरा बने खातिर मजबूर मत कइल जाय ।

—भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका
पटना, अप्रैल 1994 (6:4) पृ० 143 से 148

www.bhojpurisahityangan.com

सोना के कंगना

गंगाजी के उत्तरी किनारा पर बसल बा ऊ गाँव । उहाँ पर हमरा गाँव के एगो बेटी बिआहल बिया । ओकर नाँव ह -हीरझरिया । हीरझरिया के ससुर सरकारी नौकरी करेलन ।

हीरझरिया के एके भाई बा आ ऊ ओकरा से छोट ह । दोसर कवनो भाई-बहिन नइखन स ।

हीरझरिया के भाई के बिआह ठीक हो गइल तब ओकर बाप ओकरा ससुरा गइलन ।

हीरझरिया के ससुर सांझ खा काम पर से अइलन । रोजो घरहीं से जाले-आवेले।

हीरझरिया के सास समधी के अइला के खबर देत कहली, "बेटा के बिआह नू ठीक कइले बाड़न । बेटी के लिया जाये खातिर आइल बाड़न ।"

ओकर, ससुर दुआर पर गइलन । दूनों समधी में कुशल-समाचार होत रहे तब ओकर बाप हंसत कहले, "गर्मी के दिन ठहरल तनी सेकराहे..... ।"

"कहाँ सेकराहे ?"

"बिदाई कर दिहतीं । लइकवो के सुदिन बनत बा ।"

"हमरा भेजे के साउंज नइखे ।"

ओकरा बाप के एकर उमेद ना रहे । उनकरा विश्वास रहे कि ऊ जब चहिहें अपना एकलउती बेटी के लिया जइहें । एकरा पहिले हीरझरिया के ससुर कइ एक बार कहलहूँ रहन, "दूनो इनकरे घर ह । ई जहाँ मन करी रहिहें ।" भाई के बिआह में बहिन के कइएक नेग करे के पड़ेला ।

समधी के बात सुन के अकिल गुम हो गइल । पहिले त उनकरा मुँह के बकारे बंद हो गइल बाकिर बाद में बहुत निहोरा कइलन -" भेज दीं बिआह के घर बा । एके भाई हइस । फिर कब साध पुराई ?"

हीरझरिया के ससुर एक बार जे "ना" कहले त नहिंए कहत रह गइले। ना हंसले ना पसिजले, ना कुछ सुनहीं खातिर तइयार भइले ।

हीरझरिया के बाप के बहुत खराब लागत रहे । ऊ खरा स्वभाव के हवन । कबो केहू के जी हजूरी भा चापलूसी ना कइले रहन । खिस बरत रहे बाकिर बेटी के भविष्य सोंच के चुप रह जात रहन ।

कुछ देर के बाद हार-दाव देके पूछले, "तब ऊ बिआह में ना जाई ?"

"रउवा चाहब तब जरूर जाई।"

"बिना चहले आइल बानी ?"

"आइल बानी तब कहीं ।"

"का कहीं ?"

"नेग में का देब ?"

"जवन जुरी तवन देबे करब ।"

"एसे बाजा ना बाजी ।"

"का चाहीं ? रउवे कहीं ?"

www.bhojpurisahityangan.com

''एक जोड़ा सोना के कंगना लागी ।''

हीरझरिया के बाप एकबाएक ब्रेक मरला गाड़ी में बइठल यात्री अस हबकुरिए गिरत-गिरत रूक गइले । सोचे लगले ।

''सोचे लगनी नूं ।''

''सोचत त जरूर बानी । देखीं ढेर भारी बोझ बुझात बा ।''

''तब जाईं । छोड़ीं । का झूठमूठ के पूछोरा कइले बानी ।''

''इहे ? दोसर कुछ ना ?''

''ना ।''

ऊ फिर आपन साउंज सोचलन । जोगाड़ त ना बइठत रहे बाकिर दोसर कवनो रस्तो ना देख के गच्छ लेलन-नेग में सोना के कंगना देवे के ।

''राउर बेटी हई लिआ जाईं । हमरा कुछ नइखे कहे के बाकिर कान खोल के सुन लीं आ गाँठ बान्ह लीं कि बिदाई करत खा सोना के कंगना ना देब तब हम बिदाई करा के ना ले आइब ।''

हीरझरिया अपना बाप के साथे दोसरा दिन आइल । गवने गइला डेढ़ बरिस भ गइल रहे । सब केहू से रो-हंस के मिलल । बिआह के घर । काम में लागल हंस-गा के सब बीध कइलस ।

नेवता पर ओकर ससुर आइल रहन । बरात से लौट के अइलन तब कहे लगलन, 'हमार बिदाई कर दीं । हम लिआ के जाइब । हमरो घरे कवनो दोसर पतोह नइखे ।'

हीरझरिया के भाई के बिआह तिलक तय कर के भइल रहे बाकि तय मोताबिक तिलक मिलल ना रहे । नया धनी रहन स । जब ना तब साफ टाट उलट देत रहनस आ ओकरा बाप के हर जगह आपन इज्जत राखे खातिर अपना तरफ से लगावे के पड़ गइल रहे । बेचारू के हाथ खाली हो गइल रहे । ऊ कतनो कहले बाकिर उनकर समधी बिना बिदाई के जाये के तइयार ना भइले ।

गाँव घर, हीत नाता के कहला पर तीन महीना बाद के दिन तय भइल।

हीरझरिया के बाप सोचले रहन कि तीन महीना के समय मिलल । सोना के कंगना बनवा लेब बाकि तीन महीना के समय फूर्र से उड़ गइल आ उनकर दामाद आके दुआर पर बइठ रहल तब उनकर आंख खुलल । सावन के महीना चारों तरफ रोपनी कचाइल लागल रहे । रोपनी कबरिया के खर्चा जुटावे में सब केहू लागल रहे।

ऊ एक-दू दिन बाद बिदाई त कर देलन बाकिर सोना के कंगना ना देलन। दामाद से कहलन, 'अपना बाबूजी से कह देब । रोपनी-कबरिया के जोगाड़ ना कइला पर खेती चउपट हो जाई । हम अगहन में सोना के कंगना जरूर पहुंचा देब।'

साँझ के समय । हीरझरिया बरामदा में बइठल अपना, छव महीनवा लइका के दूध पिआवत रहे । ओकर ससुर दुवारे पर भनकत-पटकत अइलन । ऊ उठ के धार में जाये लागल । ओकर ससुर झपट के ओकरा से ओकरा लइका के छिन लेलन । ऊ गरजत रहन, 'हमरा घर से निकल जो । तोर बाप कहले रहन-सोना के कंगना देवे के । जब दिहन तब हमरा घरे अइहे ना त मत अइहे ।'

ऊ कहबे ना कइले, डांटत धसोरत ओकरा के आंगन से बाहर कर

www.bhojpurisahityangan.com

देलन ।

हीरझरिया कहंवा जाइत ? दुआर के बगल में गली में घुघ तनले खड़ा रहे । ओकर ससुर अइलन आ ओकरा के हांकत गांव से बहरी ले गइलन ।

गांव से दखीन, गंगाजी से उत्तर पक्की सड़क बिया । ओह पर बराबर बस-जीप चलत रहेलि स । उहवे जाके, बस रोकवा के हीरझरिया के ससुर ओकरा के बस पर चढ़ा देलन आ कंडकटर से कहलन, 'नोनार ले जाके उतार दीह । बीच में मत उतरे दीह । लौटाइओ के मत ले अइह ।'

बस आरा आइल तब हीरझरिया उतरे लागल । कंडकटर ओकरा ससुर के चिन्हत रहे । ऊ जानत रहे कि ओकरा ससुर के मालूम हो जाई कि आरा उतार देले रहन तब ऊ ओकरा के बेइज्जत कर दिहें । ऊ झंझटिहा हवन । बस के मालिको लोग उनकर दबदबा मानेला । ऊ मालिक से कह दिहें तब नौकरियो चल जाई। कंडकटर हीरझरिया के रोकल चहलस ।

हीरझरिया सोचले रहे कि आज आरा में गांव के केहू के डेरा पर रह जाइब । काल्ह, खबर भेज देब । बाप चाहे भाई केहू त आई । कंडकटर के रोकला पर ओकर अब तक के रोकल रोवाई बान्ह तूर के सरपट धावत धार अस बह निकलल तब सब केहू चिहा चिहा के ताके लागल ।

बस के यात्री लोग बीच-बचाव कइल । 'औरत जात ठहरल । कुछ कह-सुन दी तब फेरा में पड़ जइब लोग ।' सुन के कंडकटर चुप हो गइल तब हीरझरिया उतर के चल देलस ।

दोसरा दिन गांवे गइल तब ओकरा माई के रोवला के थाह ना रहे । ओकर रोवाई सुन के काठ के खंभो सिहर उठलनस । चारो तरफ डकैती होत देख-सुन के हीरझरिया के बाप गहना तुरवा के बेंच देले रहन । खेत खरीद लेले रहन । घर के चाउर-गेहूं बेच के लइका के बिआह कइले रहन । एह से घर से कवनो इंतजाम कर के सोना के कंगना बनवावल संभव ना रहे ।

गांव-गांव नइखे रह गइल । केहू-केहू के हीत नइखे । सब केहू एक दोसरा के रसातल में पहुंचा देवे के फिराक में लागल रहेला । लोग दोसरा के ठीक करे में अपने बउराइल रहत बा । तबो आंख नइखे खुलत । ऊ गांव के दलदल से दूरे रहेलन । साफ सोझिया आदमी हवन । रो गा के मांगल पंइचा-उधार के ज्यादातर लोग अइसन पचा गइल कि केहू केकरो मददो करे में डेराला । एह समय केहूना लउकत रहे जेकरा से ऊ मदद मांगे जइतन । जेकरा पास उनकर रहे ऊ जेठ-आसाढ़िए में, बिआहे घड़ी ना देले रहे, एह सावन-भादों में कहां से दी ? सोच के ऊ तगादा ना भेजले ।

गोदी में के लइका के इयाद से बेटी आ बेटी के दुख से दुखित महतारी दूनो के हंकरत-भोकरत देख सुन के हीरझरिया के बाप के करेजा फाटत रहत रहे बाकिर छाती पर पत्थल धर के चुप बइठे के सिवा उनकरा पास कवनो दोसर उपाय ना रहे । अकेल परला पर आंसू बहे लागे तब गमछा से पोंछ लेत रहन ।

हीरझरिया के सखी सब ओकरा मर्द के पास चिट्ठी भेंजलीस । आवे के के कहो ऊ जबाबे ना देलन । उहो चिट्ठी पर चिट्ठी भेजलस बाकिर एको के जबाब नां आइल ।

मतारी-बाप के एकंलउती बेटी हीरझरिया जंगली फल-फूल उस भरल-पुरल लागत रहे । खाये-पीये के कवनो कमी त रहे ना, एह से समय

www.bhojpurisahityangan.com

से पहिले सयान हो गइल रहे । जाघ पावेत्र करे के लोभ में आकर माई जल्दिए बिआह करा देले रहे। बेचारी लइकाई से कवनो तरह के चिंता-फिकिर से दूर रहत आइल रहे । एक-ब-एक चिंता के पहाड़ ओकरा माथा पर गिरल तब ओकरा सहहूं के समय ना मिलल तब ऊ डाढ़ि से टूट के गिरला फूल अस कुम्हला गइल ।

ओही दिन हीरझरिया के बाप ओकरा ससुरा गइल रहन ओकर ससुर साफ कह देले रहन, 'जब तक सोना के कंगना ना देबऽ हम तोहरा बेटी के अपना घरे ना घुसे देब ।' गोदी में लइको के ना देले रहन तब रात भर भूखले-पियासल रह के हीरझरिया के बाप लौट आइल रहन ।

आदमी के दिल में सोना बस जाला तब ऊ आदमी ना रह जाय । ऊ आदमी के ना चिन्हे । ओकरा खाली सोना से मतलब रह जाला । हीरझरिया के बाप इहो पढ़ले-सुनले रहन कि एगो राजा के सोना बटोरे के लत लाग गइल रहे । ऊ कवनो साधु-संन्यासी के सेवा कर के बरदान मंगलस कि हम जे कुछ छूईं सोना हो जाय। साधु के हर तरह से समझवलो पर ऊ ना मानल रहे तब साधु तंग आके वरदान दे देले रहन । फिर का रहे । खाये के चीज छूवस तब सोना हो जाय । पीये के चीज छूवस तब सोना हो जाय । पलंग-कुर्सी, लइकी-मेहरारू जे छूवलन सोना हो गइल। सोना त खा ना सकत रहन । सोना त पी ना सकत रहन । सोना बोलत त रहे ना। खइला-पीअला, बोलला-बतिअवला बिना राजा मरे लागल रहन । हीरझरिया के बाप सोचत रहन कि उनकर बस चलित तब उहो अपना समधी के वरदान दे दिहितन। बाकिर का करस ? उनकरा वरदान देबे के शक्तिए ना रहे ।

गांव के केहू के दामाद आवेलन तब उनका के नास्ता करावे खातिर, खाना खिआवे खातिर गांव भर के लइकी जमा हो जालि स । हमार पाहुन आइल रहन । हीरझरिया अउर लइकिन के साथे हमरा घरे आइल रहे । ओकर उदास चेहरा उनका नजर में सवाल पैदा कइलस तब टोल-परोस के लइकी ओकरा साथ घटत घटना के चर्चा करत ओकरा ससुर के कसाईपना के याद कर के चुप्प हो गइलि स ।

दुआर पर आके, हीरझरिया के बाप के बोलवा के पाहुन बात कइलन आ लौटत खा उनकरा के अपना साथे अपना गावे ले गइलन । पाहुन उनका के अपना बाजार पर के सोनार से अगहन के करारे सोना के कंगना बनवा-दिलवा देलन ।

फिर का रहे ? हीरझरिया अपना भाई के साथे अपना ससुरा चल गइल।

सुखा के कांट भइल लइका के लेके हीरझरिया अपना छाती से लगा लेलस तब लइकवा हहुआ के परल आ पीये लागल । हीरझरिया के नजर ओकरा पीठ पर उदड़त रहे । आंख से लोकर बहत रहे जवना के ऊ आंचर से पोंछ लेत रहे ।

'हम पहिलहीं कहत रहीं कि दखिन बियाह मत करऽ बाकिर इनकरे मन ना मानत रहे । चुड़ा-गुड़ खाये के शौख लागल रहे । कहीं भला ! लइका सुखा के कांट हो गइल ! हत्यरवन के तनिको विचार ना रहे कि छवमहिनवा बेटा छोड़ के आइल बिया ।'

सासु के बोली हीरझरिया के गोली अस लागल । तितली लेस देलस । चोरी आ सीनाजोरी वाली बात रहे । उल्टे चोर कोतवाल के डांटत रहे । मन

www.bhojpurisahityangan.com

में त आइल कि ईंट के जबाव पत्थल से दीं बाकेर ई सोच के चुप्पे रह गइल कि कुछ ना कहला, कइला पर त ई हाल बा, जबाब देला पर का होई? मार के गंगाजी में दहवा दिहें स । जवन एह गांव खातिर नया बात ना होई । औरत एगो बिरवाई के लत्तर हई। ओकरा हर घड़ी सहारा चाहीं । ओकर मर्द ठीक रहीत आ ओकरा बगल में खाड़-होखे खातिर तइयार बा ; ई ओकरा विश्वास रहीत तब ऊ जबाब दीत । का पर करीं सिंगार पिया मोर आन्हर ..... सोच के बिना देर कइले उठल आ जाके सासु के गोड़ दाबे लागल लइका के बगल में सुता के ।

'बहु ! तोहरा अबहीं ना बुझाई । तूँ हमरा पर नाराज होइबू । तोहार बस चलित तब तूँ हमरा के कांचे चबा जइतू । अरे पगली । एह में तोर कतना भलाई भइल ? तनी सोच के त देख । हम ई नाटक ना करतीं तब तोरा हाथे तीन-चार भर सोना के, पंद्रह-बीस हजार रूपया के कंगना लागल रहीत ? जवन कंगना तोरा मिलल ऊ तोरा कामे आई, तोरा लइकन के कामे आई, हम तोरा से मांगे जाइब तब कहिहे ।'

ओकरा ससुर आंगन में खड़ा होके बोलत रहन-"छूंछा तोके के पूछा ? जंजाल अच्छा कंगाल अच्छा ना । लाव तनी देखीं त ।"

ओकर ससुर दिवाल से ओठघावल खटोला के बिछा के ओही पर बइठ रहलन । सासु के पास से जाके ऊ ससुर जी के दूनो पैर छू के प्रनाम कइलस आ कंगना लावे खातिर चलल तब ओकर सास बोलली, 'आरे घरे में नू बा जब मन करी देख लिहें । अबहीं काम पर से आवत बाड़न दूगो मिठाई ला द कि पानी पी लेस'।

"ना चुप रहेलू । ना बुझाय त आमदी चुप्पे रहेला । बेमतलब के ना बोले के। गांव जान गइल होई कि सोना के कंगना ले के आइल बिया । कहीं डर-डकैती हो जाई तब लोग का कही ? ले आव रे ।" ऊ जल्दी जल्दी बोलत रहन आ आंख के हाथ के इशारा से अर्हावतो रहन ।

हीरझरिया के हाथ से सोना के कंगना ले के ओकर ससुर गमछा में धर के लपेटत जात रहन आ कहत जात रहन, 'कवनो सोनार के देखा के जांचवा लिहल ठीक होई ।'

ससुर के बोली सुन के हीरझरिया ओह में छिपल अर्थ के बुझ गइल कि गुरहथी में चढ़ल गइना आ मुंह देखाई के रूपया अस इहो ससुर जी के बक्सा में बंद हो जाई । ओकर माई बराबर ओकरा के सिखाई कि सास-सुसर के जबाव ना देवे के । ऊ मुंह खोल दी त कुछ से कुछ हो जाई तब माई का कही ? सोच के ऊ चुप्प रह गइल बाकिर सोचत रहे कि हमनी के कवना समय में सांस ले रहल बानी जा ? पइसा के पकड़ दिनों दिन कड़ा से कड़ा होत जा रहल बा । आदमी धन-दौलत बटोरे खातिर खूंखार से खूंखार जानवरो के मात दे रहल बा । सरस स्नेह से सनल संबंध के तागा के कांच सुत अस तुड़ के फेंकत जा रहल बा ।

—भोजपुरी वार्त्ता,
पटना, जून 1935 (3:1) पृ० 15-17

www.bhojpurisahityangan.com

खेला खतम

आँख मलत पलंग पर से उतर के लुंगी ठीक करत बाहर खुले वाला दरवाजा खोल के चौकी पर बइठ रहनी । अपना तीनो लइकिन के बारी बारी से आवाज दे के कहनी, "एक गिलास पानी ।"

"का भइल ?"

"मर गइले ।"

दुवार से आवत आवाज कान में पड़ल । ओही घड़ी बड़की पानी लेके भीतर से आइल ।

"देख त के मरल ?" पानी के गिलास थाम्हत दुवार के तरफ देखनी।

बड़की दुवार से आके कहलस, "रूपा मर गइले ।" लम्बा सांस खींच के छोड़ देनी ।

..... दुवार पर बइठल लोग के जरावे जात आ जरा के आवत देखनी।

गली में रूपा के बारह बरीस के नातके जात देख के बोला लेनी आ पूछनी, "कब मरल रहन ?"

"रात में । "

"साढ़े एगारह बजे ।" ओकरा साथ में खाढ़ एगो लइका बोलल । उहो ओकरे संगे के रहे ।

"कइसे ?"

"चाचा के लइकवा बानू ? सुनवा । ऊ खाटी पर से सुतले में गिर गइल रहे। ऊ ओकरा के उठा के सुता देले रहन । पेशाब कर के आवत रहन तब चउकठ पर गिर गइल रहन । अपनही उठ के सुतियो गइल रहन ।"

"के गिरल ?"

पूछला पर कहले कि हम रहीं ।

बाद मे कहले रहन, "बड़ी गर्मी लागत बा ।" कुर्त्ता निकाल देले रहन । पंखा हँकला पर, माथा पर ठंढा तेल धइला पर, शांत हो गइल रहन । ठीक हो गइल सोच के लोग सुते चल गइल रहे अपना-अपना जगह पर । फिर हांफे लागल रहन। सांस खर खर बाजत रहे । घीव देला पर रूक गइल रहे । सुते लागल रहन । सभे हट गइल रहे ।

लगले फिर हांफे लागल रहन। घीव देल गइल रहे । फिर चुप होके आँख मुंद लेले रहन । लोग हटे के सोचत रहन कि हिचकी आइल । एक हिचकी, दू हिचकी, तीन हिचकी, बस; खेला खतम । सब शांत हो गइल रहे। अतने त अउर कुछ ना ।" साथ के बड़ लइका के मदद से सुधार करत कह के ऊ चल देले रहे । आ हम जीवन मउवत के बीच के दूरी के नाप करे में अपना चउवा-अंगुरिन के लाचार पाके शून्य में ताकत रह गइल रहीं ।

..... ओहू दिन इहे शून्य हमरा के अपना मुठी में बंद कर लेले रहे आ हमार पोर पोर एगो अनजान भय से भयभीत हो गइल रहे । संसार के झण

www.bhojpurisahityangan.com

भंगुरता नजर के सामने नंगा होके नाचत रहे आ हम नजर में अचरज के भाव भर के अपना साहब के तरफ देखे लागल रहीं ।

साहब हमरा बगल में अपना आठ साल के लइका के हाथ धइले खाढ़ रहन । सांझ कवनो नवयुवती अस लजात गते गते उतरल आवत रहे ।

गया सरकारी बस डिपो के पछिमवारा गेट से पछिम सड़क के दक्षिण तरफ खाढ़ रहीं जा ।

सड़क पर हड़हड़ात एगो सरकारी बस पछिम से आइल आ आके ठीक हमनी के सामने हीं रूक गइल ।

बस के खड़ा होत भइल कि एगो कुकुर उत्तर तरफ से आके बस के इंजन के नीचे बइठ गइल ।

कुकरा अबहीं बढ़िया से बइठहूं ना पवले रहे कि बस चल देलस । लगले गेट रहे । ड्राइबर दहिने काट के बस बढ़वलस । बस के पछिला बंवारा चक्का कुकुर, जवन बस खुलला से उठ के हटल चाहत रहे, पर चढ़ गइल। कुकुरा जोर से धारदार "कांय" दे कइलस अउर बिलकुल शांत हो गइल । रोंवा रोंवा खाढ़ हो गइल ।

बस डिपो में चल गइल । आठ दस गो कुकुर चारो तरफ से आ आके कुकुरा के लास के घेर के खाढ़ हो गइलेस । एक एक कर के ओकरा के सुंघ के जात बस के तरफ मुंह कर के भुंके लगलेस ।

जखनी हम साहब के तरफ देखनी ओखनिए उनकरो नजर हमरा तरफ उठल । दूनो आदमी एक दूसरा के देखत रह गइल ।

"जिंदगी आ मउवत के बीच के दूरी नापल महामुश्किल बा ।" साहब बोलले । ना जाने हमरा के सुनावे खातिर कि अपना के समुझावे खातिर ।

..... बैनास कमरा में अइले, "हाकिम बानी कि ना ?" पूछत ।

"आव ! आव ! बइठ ।" कहनी तब ऊ अपना हाथ में के गमला हमरा तरफ बढ़वले । बगल में धइल पत्रिका के कॉपी पर रख के हम गमला थाम्ह लेनी ।

हमरे गमला रहे । फूट गइल रहे । उनका के दू रोज पहिले देले रहीं आ ऊ नया पेन चढ़ा के ले आइल रहन । हम गमला बगल में धरत उनका से पूछनी, "जिंदगी आ मउवत के बीच के दूरी नापल जा सकेला ?" उनका आवे के पहिले इहे सवाल हमरा चारो तरफ खाढ़ रहे । उनका सामनहूं आ गइल ।

ऊ चिहाइल कुछ देर तक हमरा तरफ ताकत रहले फिर कहले, "ना हाकिम ! नापल ना जा सके । काल्हे के बात ह । केशउवा बतिआवत रहे । बतिआवते बतिआवत मर गइल ।"

"के ?"

"केशउवा ।"

"कवन केशउवा ?" याद ना पड़त रहे कि कवन केशउवा मरल बा।

"इनरपतपुर के ।"

"के कहत रहे ?"

www.bhojpurisahityangan.com

"जसा के भाई।" हमहो ना जसा के हमरा गांव के मरद मेहरारू सभे जानत बा। ऊ पचरुखिया के ह। पीरो कपड़ा के दुकान करेला। पहिले ऊ गाँवन में फेरी कर के कपड़ा बेचत रहे।

"कहत रहन कि गेंहू तउलावे खातिर उनका घरे गइल रहीं। तउले के पहिले बइठल बात करत रहीं जा। कहले कि सांस लेवे में दर्द हो रहल बा। छाती में बाथा उठत बा। कहत कहत मर गइले। ..... क्षणो भर ना लागल।"

"कहंवा मिलल रहन ?" हमार इसारा जंसा के भाई से रहे।

"काल्ह कातर गइल रहीं। उहंवे भेंट भइल रहे।"

..... काल्हे के बात हनू ? गली में जात चाची के बोलवले रहीं तब ऊ आके बइठके दूनो हाथ माथ पर धर के; कुछ पूछीं ओकरा पहिलहीं कहे लागल रही, "रूपा के पतोहिया कलपत रहलि हा। काल्ह कबो गंड़ासी घास पर मारस त कबो नीचे। लागत रहे कि बाई में होखस। घसिया के बड़े-बड़े कटले रहस आ हाली हाली थोड़िसा भूंसा में फेंट के गइया के दे देले रहस। अपना मउगी के गोबर हरावत देख के कहले, "साफ कर या मन साफ कर, आज इहंवा ना सुतब। ऊपर बलरेज पर सुतब।" पतोहिया आवे लागल तब ओकरा से कहले, "आज हम लिटी ना खाइब। दाँत दर्द करत बा। ई खइहें। इनका दाँत बा। हमरा खातिर दूगो रोटी बना के भेज दिहे।" बेचारी घरे आके काम धंधा में लाग गइल रहे। रोटी बनल रहे बाकिर ओकरा भरे के मन ना पड़ल रहे। अब रोवत कलपत बिया कि हम उहां के एगो अदना बात ना पूरा कइलीं आ आँख छलछला अइलिस। ऊ अंचरा से लोर पोछे लगली। बुढ़ देह थर थर कांपत रहे।

.....काल्ह ना परसो हमरा से भेंट भइल रहे। इहवे दुवारे पर बइठल रहीं तब आइल रहन। बइठ के पूछले रहन, "आदमी मिलल ?"

"ना। कसहूं काम चलत बा। अपना का होखत बा ?"

"का होखी-हमरा से ? दू मुट्ठा घास काट के कसहूं ले आइला।"

मन में आइल रहे कि कहीं, "अपना बाबू अस तुहूं घासे काटत चल जइब।" बाकिर ना कहले रहीं।

जिंदगी आ मउवत के संबंध सोचत बानी। जिंदगी के गर्दन हर समय मउवत के पाँव के नीचे दबाइल रहेले। दबाव दिन दूना रात चौगुना बढ़त जाला बाकिर बुझाय ना। जब दबाब सीमा पर पहुँच जाले जिंदगी टें बोल देले।

हड़हड़ात कवनो रेलगाड़ी लम्बा पुल पर से गुजर गइल आ हम बगल के कांपत जमीन पर खड़ा रह गइनी-विचार में डुबत-उतरात, कुछ सोचत, कुछ तय करत.....।

आदमी जानत नइखे कि कब मरब ? कहंवा मरब ? कइसे मरब ? तब त अतना अतहतह कइले रहत बा। जब जान जाइत तब का करित ?

—भोजपुरी वार्त्ता,
पटना, नवम्बर 196 (3:8), पृ० 17

www.bhojpurisahityangan.com

अंदर से बाहर

मइल लुंगी, फाटल गंजी पहिरले साइकिल के बीच में चाउर से भरल बोड़ा धइले, पैदल, ठेलत जात रहीं । हमार ध्यान कतो दोसरा जगह ना रहे, सायकिल पर के भारी बोझ के ठेले में लागल रहीं । एगो कार पाछा से आके सायकिल से सट के खाढ़ हो गइल । हम डेरा गइनी । सायकिल हाथ से छूट के फरका फेंका गइल ।

घुम के देखीं तब साहब रहन । सड़क पर जात लोग समझल कि कार सायकिल के धक्का मार देलस । लोग जुम आइल बाकिर अफिसर-चपरासी के देख के जेने से आइल रहे ओनहीं चल गइल ।

"सलाम हजूर !"

"सलाम ! कइसन बाड़स ?"

हम झेंप गइनी । समझ में ना आवत रहे कि का कहीं ? का ना कहीं? ऊ पूछलन, "ई का दशा बनवले बाड़े ?

"हमार नौकरी खतम हो गइल । चाउर-दाल, नून-तेल के दोकान करत बानी । सरकार ! कहाँ बानी; आजकल ?"

"पटना में । फर्टिलाइजर के निदेशक बानी । तोर नोकरी त पुरान रहे? कइसे खतम हो गइल ? सरकारी खजाना खा गइल रहस का ?"

"ना सरकार ! खजाना ना खइले रहीं । औरत बीमार रहे; आजो बिया । ओकरे दवाई करावे खातिर छुट्टी पर रहीं ।"

"के खतम कइल ?"

हमरा समझ में आइल रहे कि फर्टिलाइजर खेतिए के चीज ह । इहो जान चुकल रहीं कृषि के नौकरी से कि पटना में निदेशक रहेलन । कहनी, "रउवे विभाग के अफिसर; अउर के ?"

"के ?"

"आरा के उप निदेशक ।"

"एकदम ?"

"जी !"

"तू कुछ ना कइल ? चुपचाप बइठ रहल घरे आके ?"

"ना हजूर ! रउवे पास दरखास्त भेजले बानी ।"

"भेजले बाड़ ?"

"जी ।"

"देख । आज त हम ओह विभाग में नइखीं ।"

एगो आशा के किरण झलकल रहे ऊ मधिम हो गइल कि फिर उहां के कहनी, "पंद्रह दिन के बाद हम ओह विभाग में प्रशासन संभाले जा रहल बानी। तू आपन कागज-पत्तर लेके मिलिहे ।"

"सरकार ! हमरा पास कवनो कागज नइखे, सब निदेशक के पास भेज देले बानी । सोच के कि नौकरी मिल जाई तब ठीक ना त ई सब रहिए के का करी ?"

"रजिस्ट्री से ?"

www.bhojpurisahityangan.com

"जी ।"

साहब ड्राइबर के तरफ तकनी तब हम बुझ गइनी कि उहां का कार बढ़ावे के इशारा कर रहल बानी । "सरकार ! हम त राउर बहुत अन्न खा चुकल बानी । का रउवा गरीब के एक कप चायो ना कबूल कर सकीं ?"

"उहें डेरा बा ? पहिले के ?"

"जी ।"

"अइसन कर । आज हमरा के जाये द । भभुआ तक जाये के बा । बिक्रमगंज में, इहवे दू बज रहल बा । अउर देर कइल ठीक ना होई । काल्ह नव बजे तक हम चल आइब । बिक्रमगंज डाक बंगला पर रूकब । तू उहवे चल अइह । चाहे ना तोहार नस्तो करब । तोहार सब बात सुनब ।"

कार बढ गइल । सलामी दाग के हम सयकिल के तरफ बढ़नी ।

दोसरा दिन भोरहीं से हम तैयार रहीं । साहब ठीक नव बजे आ गइल रहनी ।

नास्ता करके आराम कुर्सी पर बइठ के हमरा से कहले, "देख । मानल । हम गैर हईं । साहब हईं । तू चपरासी हव बाकिर आज तू रोगी बाड़ आ हम डाक्टर। आज तोहार फाइल हमरा पास नइखे बाकिर पंद्रह दिन के बाद ऊ हमरा पास आ जाई। नाहियो आई तब अब हम जरूर मंगवा लेब । तब तोहरा आपन सब बात खोल-खोल के कहहीं के पड़ी । बाकिर ओह दिन तूँ कानून बतिअइब आ हम चाहियो के तोहरा से तोहार सब बात ना जान पाइब । आज तूँ हमरा के आपन हमदर्द आ डाक्टर समझ के सब बात साफ-साफ कह । तोहार नौकरी त चलिए गइल बा । अउर केहू ज्यादा का करी ? झूठ मत कहिह । हम सुन के कवनो राह निकाले के कोशिश करब"

"हमरा दरखासो देला महिना दिन से ऊपर भइल । आज तक एको चिट्ठियो ना आइल । हम त ओने से निराश हो गइल रहीं । हम त रउवा के चिन्हबो ना करतीं, सायकिल ठेले में ध्यान रहे । बाकिर आज रउवा मिल गइनी तब हम कहब कि एह में जरूर खुदा के कवनो चाल बा । रहल बात झूठ के त सरकार विश्वास रखीं हम रउवा से झूठ ना कहब । गलत-सही जे भइल बा सब कहब । अगर हम गलत कइले होखीं तब रउवा जे सजाय देब हमरा कबूल रही बाकिर रउवो जानत बानी कि हम कइसन आदमी हईं । बिना दोष के केहू के दबाव ना मानी ।"

"ठीक बा; कह ।"

"हम कराकाट में काम करत रहीं । खत मिलल कि तोहार बदली करगहर कइल जात बा । हम साहब से मिले आरा गइनी आ आपन अरज-गरज कहनी कि हम बाल-बच्चादार आदमी हईं । अतना दूर बदली मत करीं । दया करीं ।

साहब कहले, "तोहरा जाये पड़ी ।"

हम कतनो रोवनी-गवनी बाकिर ऊ ना पिघलले अउर बार-बार कहस, "हमरा कलम में जब तक रोशनाई रही तोहरा के काराकाट ना रहे देब ।"

हम वापस आके आ रिलिभ होके करगहर चल गइनी ।

उहां पर सहायक निबंधक के आदेशपाल रहीं । साहब करगहर आ

www.bhojpurisahityangan.com

नोखा दूनो जगह के काम देखत रही । नोखा मे डेरा राखत रहो । एक बार कहनी, "तू हमार आदेशपाल हव त हमरा साथे नोखा रह ।"

हम उहां के साथे नोखा रहे लगनी । एह बात के पी० ई० ओ० साहब के बहुत नागवार गुजरल । उहां के रिलिभ कर देनी । हम नोखा चल अइनी । उहां जगह खाली रहे । उहें से वेतन मिले लागल । कवनो दिक्कत ना होखे। साहब के मालूम भइल । हम छुट्टी में रहीं । एही बीच चिट्ठी मिलल कि हमरा छुट्टी बाद आरा योगदान करे के बा । हम छुट्टी बाद आरा जाके योगदान देनी । डेढ़ महिना तक तनखाह ना मिलल । हम साहब से जाके कहनी तब हमार पोस्टिंग रामगढ़ कर देले ।

एक दिन साहब रामगढ़ गइल रहीं । आस-पास के अफिसर लोग उहें रहे । पी० ई० ओ० साहब के डेरा के बाहर लान में कुर्सी लागल रही स । बात होत रहे । हमहूं उहां पर गइनी । मोका मिलित तब आपन दुखदर्द कहतीं से बात ना रहे । हमरा के देख के साहब कहे लगले, " ई खूनी ह । अस्मगलर ह । डाकू ह। एकरा से बच के रहब ।"

पी० ई० ओ० के डेरा से चाय आइल । नौकर ट्रे में चाय के कप घर के लवटत रहे । आठ-दसगो कप रहनस । साहब के बात सुन के हमार खून खउले लागल रहे । चाय देख के अउर गर्मा गइल । बढ़ के अइसन थाप मरनी कि चाय सहित कप आरा के साहब के चेहरा पर गिरल । सब केहू उठ उठ के खड़ा हो गइल । हम उहां से हट गइनी ।

आरा जाके उहां के आदेश भेज देनी । रामगढ़ से रिलिभ होके हम आरा जाके योगदान देनी ।

आरा में डेढ़ माह रहनी बाकिर वेतन ना मिलल । कही पोस्टिंग होइत तब नू मिलित ।

बाद में हमरा आदेश मिलल कि तोहार पदोन्नति कइल जात बा; प्रसार प्रशिक्षण केंद्र आरा में प्रयोगशाला सहायक के पद पर योगदान कर । हम उहां जाके योगदान कइनी ।

उहां के एक आदमी कहल, "तोरा के फँसावे के उपाय हो रहल बा । सब सामान तोरा चार्ज में रही । तोरा कुछ बुझाई ना कि कवन चीज का ह। जवन चीज दिआई ओह पर दसखत करिए देबे । बाद में खोजल जाई तब ऊ चीज ना मिली । फिर तोर नौकरी खा जइहेंस ।"

हमरा ओकर बात बुझाइल । लइकाईं में सुनले रहीं ।

गाँव से बहरी इनार पर कुछ लोग नेहात रहे । इनार के बगल में रास्ता रहे। रास्ता के बगल में एगो पेंड़ के ठूंठ रहे । रास्ता पर जात साधु के ठुंठवा से ठेस लाग गइल । ऊ सराप देले, "तू जड़ से उखड़ जा ।"

समय बीतल । बरसात आइल । ठुंठ से कलंगी फुटे लगलिस आ देखते देखत ठुंठवा एगो नीमन हरियर-झंखाड़ पेंड़ हो गइल । लोग कहे, "साधु सराप देले रहन कि आशीर्वाद ।"

हथिया नक्षत्र आइल । रातदिन वर्षा होखे लागल । आंही चले लागल । ऊ पेंड़वा जड़ से उखड़ के फेंका गइल ।

हमरा अपना पदोन्नति के राज समझ में आ गइल । हम पूछनी, "तब का करे के चाहीं ?"

www.bhojpurisahityangan.com

"तू चार्ज मत लिहे ।"

हम चार्ज ना लेनी ।

औरत के देखवनी तब डाक्टर कहले, "टी० बी० ह । तीन साल इलाज करावे पड़ी ।" हमरा घर में अउर केहू ना रहे । दूगो लइका रहनस । बूढ़ बाप रहन। हम छुट्टी पर चल गइनी ।

इहां के एम० एल० ए० साहब से आरा के साहब से खूब पटत रहे । उनका से कहनी । ऊ मदद करे खातिर तैयार हो गइलन । हम उनका के कार से आरा ले गइनी । ऊ साहब के डेरा पर गइले । ऊ लोग का का बात कइल हम ना जननी । ऊ आके कहले, "तोर काम हो जाई । तोर बदली विक्रमगंज हो जाई।"

हम इंतजार करे लगनी । महिना दिन के भीतरे लिफाफा आइल । समझनी कि काम हो गइल । लपक के ले लेनी । खोल के देखला पर पैर के नीचे के धरती घसक गइल ।

जाके कागज एम० एल० ए० के आगा फेंक देनी– "रउवा कहत रहीं, काम हो जाई । का काम भइल ? गरीब के बाल-बच्चन के अलम एगो नौकरी रहे; उहो खतम हो गइल । लीं । रखीं । हम का करब ? हमरा त मालूम रहे कि ई दिन सामने आई ; ना आवत रहे तब तक ताजूब करत रही ।"

"हमरा अफसोस बा कि तोहार नौकरी चल गइल, एह महंगी के जमाना में बाकिर ओहू से ज्यादा अचरज होता उनकरा कथनी आ करनी पर सोच के। तू ई रख । पटना दरखास्त दे द । हम उहां देखब ।"

एम० एल० ए० कहले तब हम कागज उनका हाथ से ले लेनी । हमहं तय कर लेनी दरखास्त देवे के आ हमरा अंदर विश्वास पैदा हो गइल कि ई जान बूझ के हमरा साथे अन्याय कइले बाड़न । उहां पर हमरा जरूर न्याय मिली । आ इहो कि ई जरूर दोषी करार देल जइहें ।

एम० एल० ए० से सुना के कहनी, "रउवा हाकिम हईं । उहो हवन । टोपीवाला टोपिए वाला के मदद करेला; ई झूठ ना ह । रउवा जानत बानी, अउर केहू जाने चाहे मत कि हमरा साथे अन्याय कइले बाड़न । हम पटना अर्जी भेज रहल बानी। एक ना एक दिन सच्चाई सामने आई आ झूठ के पर्दाफाश होई । उनकर गर्दन पकड़ाई । अब हमार साथ छोड़ीं । उनकरे मदद करीं । राउर दोस्त हवन । पटना जालन तब रउवे डेरा पर रूकेलन ।"

उनकरा पास से आके पटना अर्जी भेज देनी । इहो लिख देले रहीं कि हो सके तब सी० आई० डी० से जाँच करा लीं ।"

"ठीक बा । अगर अतने बात बा तब कुछ नइखे बिगड़ल । तू पंद्रह दिन के बाद पटना सचिवालय में आव । हम चार्ज लेला के बाद पहिला इहे काम देखब ।"

हम नया सचिवालय में कृषि निदेशक (प्रशासन) के चैम्बर के सामने रहीं । साहब भीतर बोलवले आ कहले, "आरा फोन कर देले बानी । उप निदेशक आ प्रसार प्रशिक्षण के प्रिंसिपल दूनो लोग आवत बा । जरूर आई लोग । तब हम बोलवाइब । तब तक स्टेनो के कमरा में बइठ ।"

हम स्टेनो के कमरा में जाके बइठ रहनी ।

www.bhojpurisahityangan.com

जब दूनो लोग आ गइल तब साहब दूनो लोग के बइठे के पहिलही पूछ देलन, "आरा में प्रयोगशाला सहायक के नौकरी खतम कइले बानी ? का बात बा ?"

"हम नइखीं कइले । प्रिंसिपल साहब कहब ।" उपनिदेशक कहले ।

"ऊ दरखास्त देले बा । निदेशक से हमरा पास आइल बा । आरा जाये के समय नइखे । इहवे कहीं । का बात भइल रहे ?"

"ऊ बहुत बदमाश आदमी रहे । एक रोज साहब, उपनिदेशक के तरफ देख के, कहनी कि ओकरा के पत्र दे द कि फलाना तारीख से तोरा नौकरी के आवश्यकता नइखे । हम ओकरा के खबर कर देले रहीं ।"

"चार्ज का रहे; से ना कहीं ?"

दूनो लोग एक दोसरा के देखे लागल । उपनिदेशक कहले, "बहुत चार्ज रहे । हजूर से सब का कहल जाय ।"

साहब बगल में से उठा के फाइल ओह लोगन के सामने में पटक देले। इहे नू फाइल ह । ना कवनो चार्ज ना वार्निंग, ना सेसंर; एके बे डिस्चार्ज । ए० डी० एम० के साथ रहल बा । एस० डी० ओ० के साथ रहल बा । केहू दोषी ना कहल ओकरा के । ऊ लोग कहीं कि अपना सेवाकाल में अतना नीक चपरासी ना देखनी । हमरो साथ ऊ रहल बा । आजतक उन्नति कइलस । आज ऊ दोषी हो गइल ?"

घंटी बाजल । चपरासी आइल । हम जाके खाड़ा हो गइनी ।

साहब कहले, "का रे हरामी ! तें जिंदगी भर हरामिए रह गइल ? सामने तोर साहब लोग बा । अफिसर बाप दाखिल होला आ तू सलामो ना कइले ।"

"ई अफिसर ना राक्षस ह लोग । हमार नौकरी लेलन जा । हमार रोजी-रोटी छीन लेलन जा । हमरा बाल-बच्चन के मुंह में जाब लगा देलन जा । हमार औरत दवा बिना मरत रहल आ एह लोग के दया ना आइल । अइसने बाप होला । ई लोग बाप ना; कसाई ह । हमार बस चले त एह लोग के मूड़ी काट लीं ।"

"तोरो कुछ कहे के बा ?"

"हम का कहीं; सरकार ? हम निर्दोष बानी । हमार नौकरी बरकरार रहे के चाहीं । हमरा पर कवनो चार्ज होखे तब बतलावल जाय; हम ओकर सफाई देब । वाह रे बरियारी ! हम कलकटरी के स्टाफ ठहरनी । हमरा के एस० डी० ओ० बहाल कइले रहन । नौकरी इहां सभे खतम कर देनी । हमरा में गलती रहे तब इहाँ के हमरा के वापस भेज दितीं -एस० डी० ओ० के पास । जेकरा सामने केवल एक चीज के पूछ होला, ओकरे के देबे दिलावे से नीक ना त बाउर । ओकर नांव ह; रूपया । जे रूपया चिन्हे लागल ऊ आदमी का चिन्हीं । हमार नौकरी लेवे के पावर इहां के नइखे । इहां सभे हद से बाहर चल गइल बानी । डाक्टर लिखले बाड़न कि टी० बी० ह । तीन साल इलाज करावे पड़ी । पूरा सेवा करे पडी । छूत बरावे पड़ी । हमरा घर में एगो बूढ़ बाप आ दूगो छोट छोट लइकन के छोड़ के दोसर आदमी नइखे। अगर बात झूठ साबित होखे तब हम कसुरवार ठहरावल जा सकिला ।"

साहब ईशारा कइले तब हम बाहर चल अइनी । ऊ ओह लोग से कहले, "जइसन ओकरा साथे भइल बा , न्याय त कहत बा कि तूहू लोग के

www.bhojpurisahityangan.com

साथे ओहसहो पेश आइल जाय बाकेर तोहरा लोगन के पारेवार के सोच के हम ऊ सब नइखीं कइल चाहत ।'' फाइल में से डिसचार्ज लेटर निकाल के, ''ई केकर दस्तखत ह ?''

''हमार !'' प्रिसिंपल कहले ।

''तोहरा के त चाहीं त आज अबे सस्पेंड करा दीं । न टाइपिस्ट के दस्तखत, ना प्रधान सहायक के साइन, एगो इसू नंबर बइठा के दे देल । पावर के बात त बड़ले बा । कृषि विभाग में रहला से दिमागो में भुसा भर गइल बा। ई सोझ बात ना समझ में आइल कि ऊ कलकटरी के स्टाफ ह ।''

प्रिसिंपल साहब के पैर धर लेलन - ''सरकार! एक दफा मौका दीं । आज माँफ कर दीं । फिर अइसन गलती ना होई । हम इहां के कहला में, सब कुछ, इहां पर विश्वास कर के कर देले रहीं । हम आजे जाके सब ठीक कर देब ।''

''गलती त बहुत संगीन भइल बा । ई सब ना होखे के चाहीं बाकिर जा, जब कहत बाड़ कि सब ठीक कर देब तब कवनो बात नइखे । जा, फिर बाद में देखल जाई । अगर रेगुलर करे में कवनो कानूनी दिक्कत होखे तब ओह समय के ओकर वेतन अपना पास से दे दिह बाकिर ओकरा कवनो तरह के दिक्कत ना होखे के चाहीं ।''

ऊ लोग चल गइल तब फिर उहां गइनी । साहब कहनी, ''डेरा चल जा । आज पटने में रह । काल्ह आरा जइहे । तोर नौकरी मिल जाई ।''

सलाम कर के, डेरा के पता लेके हम साहब के डेरा पर चल गइनी ।

साहब डेरा पर अइले तब कहले, ''लोग के ठीक जबाब देले रह । आज काल्ह ढेर काम एही से बिगड़त बा कि गलत के सही कह देल जात बा । सब केहू गलत के गलत कहे लागे तब त केहू गलतिए ना करे । इहां त बात बा कि लाख गलती कर आ चान-सूरज अस चमकत चेहरा लेके सउँसे समाज में घुमत रह । पहिले ई बात ना रहे । लोग कहेला कि ई सब सभ्यता के देन ह। अगर ई सभ्यता ह तब एह सभ्यता से असभ्यते नीमन ।''

चाय पियत खा साहब कहे लगले ''नौकरिये में ना गाँवों में आदमी कुछ गलत करे में डरत रहे कि लोग का कही ? बाहर-भीतर फुसफास होखे लागे तब आदमी बेपानी हो जाय । बाद में कहला-सुनला पर असर होत रहे । देख, अंग्रेज रहनस । ऊ जानत रहनस कि हमनी के कतना पानी में बानी जा । ना जानत रहनस, से ना कहल जा सके बाकिर धरना-सत्याग्रह के कतना असर पड़त रहे ? अब त जगह-जगह सत्याग्रह हो रहल बा, लोग आमरण अनशन कर रहल बा बाकिर केकरा पर असर होत बा ? आदमी के खाल मोट हो गइल बा । हमरा विश्वास रहे कि तोर नौकरी लाग जाई बाकिर अतना आसानी से हो जाई, हमहूं ना सोचले रहीं । लोग एके डांट में सीधा हो गइल । काल्ह चल जइहे। जाके देख, का होखत बा ?''

''केकरा पास जाइब ?''

''उपनिदेशक के पास ।''

''ऊ अर्जी ना लिहे तब का करब ?''

''जाके लिख के दिहे । इएस भा नो कुछ त लिखबे करिहें । जइसन होई आके फिर हमरा से कहिहे ।''

www.bhojpurisahityangan.com

दोसरा दिन हम साहबे से दस रूपया लेके आरा गइनी । उपनिदेशक अपना डेरा में रहन । हम उहें चल गइनी । उनका आगा में आपन अर्जी धर देनी । ऊ पढ़ले कि ना ? ना कह सकीं । बिगड़ गइले, "तोहरा के पटना जाये के के कह देले रहे? तू हमरा पास काहे ना आइल रह ? का जमाना आ गइल बा ? लोग ऊपरे से बात करत बा ।"

"हम पटना ना जाइल चाहत रहीं । रउवे मजबूर कइनी तब हमरा जाये पड़ल । हम त एकरा पहिलहू कइ एक बार रउआ से मिलल रहीं; का मिलल रहे ? पटना जाये में कुछ लागेला । ऊ हमरा पास ना रहे । हमरा कर्जा लेवे पड़ल रहे । जानत बानी ? विश्वास करब ? आजो दस रूपया साहब से मंगनी हां तब लौट के इहां अइनी हां । बाकिर छोड़ी 'ई सब बात । हमार अर्जी रउआ सामने बिया । रउवा हाथ में कलम बिया । कलम में सियाही जरूर होई । होखे तब इएस भा नो लिख दी । फालतू बात कइल बेकार बा ।"

उपनिदेशक प्रिंसिपल के बोलवले । उनकरा के हमार कागज देत कहले, "ल भाई! ले जा । ई हाथी के कांह पर बाड़न । देखब कि ई छत्तर-छाया इनकरा के कब तक बचाई ।"

"हाथी के भरोसा हम ना करीं । हम त इहो ना जानी कि सांझ खा का होई। रउआ ना रहब कि हम; ई केहू नइखे जानत । इहां से तुरते बाहर जाके का होई; हम इहो नइखी जानत बाकिर रउआ जानत बानी कि कयामत तक एही कुर्सिया पर रहब आ लोग के खून चुसत रहब । पिहीं ।" हमहू सुना देनी । डरे के का रहे ! ओखर में सर देके चोट ना गिने के रहे । अब तक अकेले रहीं । हार ना मनले रही तब अब का सोचे के रहे जबकि साहब मिल गइल रहीं ।

बाहर आके प्रिंसिपल कहे लगले, "देख । हमार कुछ दोष नइखे । उनकरा कहे से कर देले रहीं । हम त देखत रहीं कि ऊ शैतान तोहरा के तंग कर रहल बा बाकिर हम ना कइले ... दितीं । ऊ हमरो के तंग करे लागित । करित कि ना ? तूहीं कह ।"

"छोड़ीं, ऊ सब बात बीत गइल से बीत गइल । आगे का होई ?"

"होखे के का बा ? बड़ा बाबू के रातहीं कह देले रहीं । आवत होइहें । आवे द । हम बानी नू । सब ठीक हो जाई ।"

ढेर देर ना रहे पड़ल । बड़ा बाबू आ गइले ।

"बड़ा बाबू इनकरा के ले जाईं । इनकर सब कागज-पत्तर ठीक कर के ले आईं । इनकर नौकरी रेगुलर कर दीं । इनका तीन दिन में वेतन मिल जाये के चाहीं ।"

बहरी आके बड़ा बाबू कहले, "हई धर ।"

"काहे खातिर ?"

"चार्ज ना लेब ?"

"ना, अबहीं चार्ज ना लेब ।"

फिर साहब के पास बड़ा बाबू के साथ गइनी । ऊ कहले, "ई चार्ज लेवे खातिर तैयार नइखे ।"

"छोड़ दीं । इनकरा जब मन आई चार्ज लिहें । जाईं इनकर वेतन निकाले के काम करीं । ई चपरासी ना आफत हवन ।"

www.bhojpurisahityangan.com

''ना साहब हम आदमी हईं आ आदमी अस रहल चाहिला ; उहो आदमियत के साथ । आफत त ऊ कहाले जे केहू के आगा में बर्बादी के आलम लेके आवेले। कहीं त, हम केकर का बिगड़ले बानी? हमार इहे दोष नू बा कि हम आदमी अस रहल चहनी ?

रउआ सभे के हजार-बारह सौ के नौकरी बा । घर पर बाप-दादा के जगह-जमीन बा । तबो एगो शैतान के सामने झुक गइनी । हमरा पास का रहे ? ना बाप-दादा के जमीन जायदाद; ना वेतन आ घूस के जमा कइल पइसा । ना कवनो व्यापार । बाकिर हमरा भीतर पक्का विश्वास रहे कि अन्याय के दीवार के नींव पोख्ता ना होखे । खोखड़ होके ओकरा ढहत देर ना लागे । शोषण के बल अन्हार जब तक रहेले तबे तक रहेला । रोशनी के एको किरण ओकर छाती चाक कर देले । भ्रम आ मिथ्या जवन फैलवले रहेले खतम हो जाला । फिर त ओकरा छिपहूं के जगह ना मिले ।''

दिन भर उहां रहनी आ सांझ खा पटना चल गइनी । साहब के डेरा पर ठहरनी । अब रोज के इहे हाल हो गइल । दिन भर आरा आ रात के पटना साहब के डेरा पर । ठीक तीसरा दिन हमार वेतन मिले गइल ।

उहे चपरासी के पद पर तीन चार महीना काम कइनी । आरा से पटना कवनो दूर त बा ना । बराबर पटना चल जात रहीं । साहब से कहत रहीं, ''हमार बदली विक्रमगंज करवा दीं,'' साहब कुछ ना कह के, सुनके, मुस्का के रह जात रहीं ।

आरा के उपनिदेशक के बदली हो गइल । दोसर आदमी आइल । अबहीं उहां के उेरा पटने में रहे । एक दिन साहब उहां के बोला के हमरा बारे में कहनी । उहां के वादा कइनी, ''हम आरा जाके पहिला काम इहे करब ।''

उहां के लौट के आरा अइनी । फ़ाइल मंगवा के हमार बदली विक्रमगंज करे के आदेश कर देनी । टाइप करे वाला बदमासी कइलस, विक्रमगंज के बदला सासाराम कर देलस ।

हमार कागज मिलल । पटना ले जाके साहब के देखवनी । साहब देख के कहले, ''हम विक्रमगंज खातिर कहले रहीं । सासाराम कइसे भइल ?''

''जी ! उहां के फाइल पर आदेश कइले रहीं बाकिर अब काटल बा।''

''ठीक विक्रमगंज अइनी तब मालूम भइल कि काराकाट में एगो चपरासी बा। ऊ सासाराम गइल चाहत बा । हम पता कइनी । बात ठीक निकलल । एक आदमी से ऊ कहले रहे । कहलहीं भर ना रहे लिख के देलहूं रहे । ऊ दरखास्त हम, आरा लेके चल गइनी । आरा में कुहराम मचल रहे । उपनिदेशक पटना गइल रहन । साहब से बात मालूम भइल रहे । लौट के आरा चल आइल रहन । फाइल देख लेले रहन । टाइपिस्ट के सस्पेंड करे जात रहन।

बांझ का जाने परसवती के पीड़ा । हम आफिस में गइनी । टाइपिस्ट मुँह ताके लगले । कुछ कहल चाहत रहन बाकिर कह ना पावत रहन । हम डिसचार्ज, सस्पेंशन के पीड़ा भुगत चुकल रहीं । हम ना चाहत रहीं कि ऊ अउर केहू के उठावे पड़े ।

उपनिदेशक के मालूम भइल कि हम आइल बानी तब हमरा के बोलबवलन । हम जाके सलाम कइनी आ काराकाट के चपरासी वाला दरखास्त पेश करत कहनी, ''सरकार ! ओकरा के सासाराम कर दीं । हम काराकाट

www.bhojpurisahityangan.com

चल जाइब । हमरा खातिर कवनो अंतर ना होई । दूनो आफिस त विक्रमगंज में बा ।

उपनिदेशक के बात पसंद आ गइल । हमरा आदेश मिल गइल आ काराकाट चल अइनी । तब से इहें बानी ।

पहिले त हमरो समझ में ना आवत रहे कि उपनिदेशक हमरा से काहे नाराज बाड़न । बाद मे मालूम भइल रहे कि ओही आफिस के मिश्रा जी लगा बझा देले रहन। एगो मुसलमान चपरासी के टरका देवे खातिर बाकिर बाद में उपनिदेशक झूठ-मूठ के प्रेस्टिज इशू बना लेले रहन ।

हम त अइसन दलदल में फंस गइल रहीं कि हमार कवनो अक्किले काम ना करत रहे । गोड़ पिटेला दलदल से निकले खातिर बाकिर जब ऊ देखेला कि ऊ जतने जोर मारत बा ओतने भीतर धसल जात बा तब ऊ हाथ छितरा के पटे पड़ जाला । हमहूं हाथ-गोड़ मार के पटा गइल रहीं । ऊ त कहीं कि ओह दिन ना जाने कवना भाग से साहब भेंटा गइनी । हमरा के अंदर से बाहर कइनी ना त हम त सांचहूं के निराश हो गइल रहीं चारो तरफ होत झूठ, अत्याचार आ मनमानी के देख के । एक से एक बड़ पद पर के लोगन के देखत रहीं रातदिन खुशामद करत, तरवा सहलावत, रूपया-पइसा के के कहो बेटी-बहिन तक के राकसन के सामने परोसत । देश नया नया आजाद भइल रहे । राजा महाराजा आ जर-जमींदार खतम हो गइल रहन । केहू केहू के रोके टोके वाला ना रह गइल रहे । आपन राज रहे । सभे जल्दी से जल्दी लखपति हो गइल चाहत रहे । चारो तरफ एगो अजब आपा-धापी रहे । केकरा से हम का कहे जइतीं आ के हमार सुनीत ?

का सोचे लगनी ? हम प्रयोगशाला सहायक रही, चपरासी कइसे हो गइनी ?

एक दिन मालूम भइल कि प्रयोगशाला सहायक के पद कांके में खाली बा । हमार बदली उहें होखे जा रहल बा । घर से अतना दूर ना जाइब सोच के हम नौकरी छोड़े के सोचत रहीं । बड़ा बाबू से आपन अर्जी लिखे के कहनी । उहां के अपना डेरा पर ले गइनी आ समझवलीं, "तू नौकरी मत छोड़ भले कलकटर के दरखास्त दे द कि हमरा पदोन्नति ना चाहीं । अगर देल चाहीं त हमरा के निम्नवर्गीय लिपिक बना दीं ।"

फिर का पूछे के रहे ? हमरा ई बात पसंद आ गइल आ दोसरे दिन आपन अर्जी ले जाके कलक्टर के आगा में रख देनी ।

कलक्टर पढ़ के चिहा गइली । ऊ औरत रही । पूछली, "काहे ? का बात बा ?"

हम कहनी, "सरकार ! ओहदा पर रहब तब हमार बदली बिहार में कतो दूर हो जाई । हम गरीब आदमी अपना बाल-बच्चा के छोड़ के ना जा सकीं। साथे ले गइला पर खर्चा ना आंटी । जाके योगदान ना करब तब नौकरी छिना जाई ।"

"मांगल गइल रहे तब काहे दरखास्त देले रह ?"

"मालूम भइल रहे कि तरक्की होई चपरासी के महिने कतना मिलेला ? ओह से एह महंगी में काम नइखे चलत । सोचनी, कुछ पइसा बढ़ जाई तब राहत मिली ।"

www.bhojpurisahityangan.com

अउर बड़ा प्रेम से आ ढेर बात पूछलो । सब आफेसर ओइसने हो जइतन तब फिर का पूछे कहे के रहे ? उनकर दाया-माया से भरल बात सुन के हमरा ढेर उम्मीद हो गइल । बुझाइल कि अब त किरानी होइये जाइब । एह में कवनो संका नइखे । आफिसर लोग एक-दोसरा के विभाग के शिकायत करत रहेला । अपना विभाग के प्रशंसा सुन के लोग खुश होला: उहे सोच के हम कहनी, "ओह दिन इंटरभियु में कलक्टरी के केहू ना रहे । खाली कृषिए विभाग के लोग रहन । अपना विभाग के सब लोग के तरक्की दे देले रहे लोग । कलक्टरी के दुइए आदमी के तरक्की मिलल रहे । कहल जात बा कि चार्ज ले ल ।

रउवे कहीं कि हम का चिंहत बानी ? ले लीं । बाद में कुछ घंट-बढ़ जाय तब हमार नौकरी रहीं कि जाई ? चलिए जाई । घटी पुरावे के ऊपर से पड़ी । एह से पहिलही लिख के दे रहल बानी ।"

"ठीक नइख करत । अउर सोच ल । एक माह के समय देत बानी।"

ऊ आडर कर देली ।

"हम चार दिन के बाद फिर उहे लिख के पेश कर देनी ।

X X X X X

हमार नौकरी ? ओहू में कुछ ना करे पड़ल रहे । घर से भागल रहीं । आरा कचहरी पर घुमत रहीं । ए० डी० एम० के चपरासी एगो खान रहन । ऊ हमरा के देख के पूछले, "का घुमत बाड़ ?"

"हमरा नौकरी चाहीं ।"

"करब ?"

"करब काहे ना ?"

"का करब ?"

"जवने काम मिली । हम कुछुवो करब ।"

"कब से ?"

"मिले त आजे से ।"

ऊ अपना साथे डेरा पर ले गइले । पूछले तब सब बता देनी ।

"मैट्रिक में दस नम्बर से फेल हो गइल रहीं । मतारी मयभा रहे । दिक्कत होत रहे एही से भाग गइल रहीं । घर से आसनसोल, उहां से कलकत्ता, फिर पटना से आरा ।"

"खर्चा ?"

"खर्चा ना जे का रहे । एक भेली गुड़ लेले रहीं । घर ही से । खाये के कुछ ना रहे । प्यास लागे तब एक काटा काट के पानी पी लेत रहीं ।"

"आसनसोल में केहू रहे का ?"

"आसनसोल, कलकत्ता भा आरा-पटना में केहू जानल ना रहे । हम एकरा पहिले शहर में ना गइल रहीं । गाड़िए से गइनी आ गाड़िए से चल अइनी । उहो बिना टिकट के । यात्रा ठीक रहे । धरइनी ना कतहू । सोच के गइल रही धराहीं खातिर। सोचले रहीं कि धरा जाइब तब गलत नाँव-पता लिखा के जेल जाइब ।

हमरा गाँवे एगो गफूर मियाँ बाड़न । उनका स्वतंत्रता सेनानी के महिना मिलेला । समाजवादी पार्टी में बाड़न । जेल जात आवत रहेलन ।

www.bhojpurisahityangan.com

उह कहिहें । ऊ लोग जेल मे कवनो काम ना करे । देश में काग्रेसी राज रहे। थोड़ ही दिन पहिले देश आजाद भइल रहे । समाजवादी लोग बराबर काँग्रेस के खिलाफत करत रहन आ जेल जात रहन । गफूर साहब आजादी के पहिलहूं जेल गइल रहन ।

ऊ एक दिन कहत रहन - "अब जेल गइला पर लोग राजनैतिक कैदी मानल जाला । बेटिकट धराइल लइकन के लोग के साथ रख देल जाला । ऊ सब काम करेलनस । हमनी के खाना-नास्ता मनमाना मिलेला । ओहनियों के काम ओही से चल जाला । हम सोचले रहीं कि कुछ दिन उहवें रहब । बाद में देखल जाई ।

ठीके कहत बानी । ओह घरी एकरा से ज्यादा ना सोचले रहीं । सोचे के बुद्धिये कतना होला ।

चार-पाँच रोज हम उहें रहनी । फिर ऊ हमरा के ए० डी० एम० के उेरा पर पहुँचा देलन । हम उहें रहे लगनी । उनका डेरा के सब काम करीं ।

बाद में ए० डी० एम० के बदली होखे लागल तब ऊ हमरा के सासाराम एस० डी० ओ० के हवाले कर देलन । उहों साहव के डेरा पर रहत रहीं । बाद में उहां के हमार बहाली तहसील पिऊन के पद पर कर देनी । रोहतास में जगह खाली रहे। उहें भेज देल गइनी ।

चार महिना रहनी । फिर एक दिन एस० डी० ओ० साहब के डेरा पर गइनी। मेम साहब प्रेम से हाल-सामाचार पूछे लगनी । माया छुटल आ हम रोवे लगनी । इहो कहनी, "हमरा उहां पर दिक्कत बा । इहवे रहब ।"

"रह । इहवे रह । कतो मत जो ।" बाद में ऊ एस० डी० ओ० साहब से कहली । एस० डी० ओ० रोहतास चिट्ठी भेज देले । हम उहवे रहे लगनी।

एस० डी० ओ० के बदली होखे लागल तब ऊ हमार बदली नोखा अंचल में कर देलन । उहां पर ठीक से रहनी । ओकरे बाद काराकाट भइल रहे ।

घर पर खबर हम ना कइले रहीं । दोसरो केहू ना कइले रहे । जब सासाराम रहत रहीं तबे के बात ह । एक दिन गाँव के एक आदमी भेंटा गइल। उहे जाके घरे कह देले रहे । बाद में हमार बाबूजी आइल रहन आ हम घरे गइल रहीं ।

शादी ? ऊ त पहिलहीं हो गइल रहे । औरत ससुरारे में रहे । हमरा घरे ना आइल रहे । बेचारी रातदिन रोवत रहत रहे । ओही घरी रोवत रोवत एक आँख खराब कर लेले रहे ।"

अतना कहत कहत ओकर आँख डबडबा गइलिस । ऊ रोवे रोवे हो गइल। बगली से रूमाल निकाल के आँख पोंछे लागल । वातावरण बोझिल हो गइल । बुझात ना रहे कि का कइल जाय । एगो दोसरा चपरासी के देख के कहनी, "का हो ! चाय ना पियल जाई ? तनी कह दू-तीन कप चाय ले आवो ।"

"तू रह । काम कर । हमहीं कह देत बानी ।" कहत ऊ बहरी चल गइल। हम ओकरा के जात देखत रह गइलीं । रोकनी ना । बाहर हवा में मन बदल जबहिस; सोच के । *- भोजपुरी कथा कहानी*

www.bhojpurisahityangan.com

ठेस

हमार मन बँवड़ेरा में पड़ल सुखल पतई अस ऊपर-नीचे, अगल-बगल उड़िआत बा । झंझावात में पड़ल तिनका के कहवाँ जाके जगह मिली ? बुझात नइखे। लगन के करतूत एको पल खातिर भुलात नइखे । रह रहके उनकरे बारे में मन सोचे लागत बा ।

..... नया घर बनावत खा ढेर मजदूर काम पर रहत रहन स । ओहनी में लगन आ उनकर बड़का लइका राघवो कबो कबो काम पर आवत रहे । लगन हमार लइकाईं के साथी हवन । लड़काईं में कहले रहीं "हम पढ़त बानी। साहेब बनब बाकिर तू साथे रह के बिना पढ़ले मौज मनइह ।" सोरह साल के नौकरी में ऊ कतो साथे ना गइले । हरवाही करत दिन काटत रहन । शादी भइल । मेहरारू आइल आ तीन-चार लईकन के बाप बन गइले, एही बीच आठ साल से घर पर परिवार रह रहल बा बाकि कहलो पर ई हमार नौकर ना बनले । कहीं त हँस देस ।

"सुतल बानी का ?" आधार के बात सुन के पलंग पर उठ के बइठ रहनी।

"आव । अब नइखे सुते के । का बात ?" कहनी त आधार अपना साथे लगन के लेके कमरा में अइलन ।

"ई सवा बीघा धान के खेती कइले बा । धान गाभ पर चढ़ आइल बाकिर आज ले खाद ना पड़ल ।"

"खेत वालू रूपया नइखन देत का ?"

"जेकर हरवाह हवन, ऊ ?"

"ऊ लोग देबे करित तब का कहे के रहे । अउरो केहू नइखे देत । दे दीं । जे कहब; सूदो दे दी ।"

"सूद पर चाहीं तब दोसरा जगह चल जास । हमरा सूद से काम ना रहे। हमार सूद ह-कृतज्ञता । हम तोहार मदद कइनी । समय पर तू हमार कर दिह । हम रूपया देब बाकि धान दे देवे पड़ी ।"

"दे दिहीं । दे दी । हम जात बानी काम बा" कह के आधार जाये लगले तब रोक देनी आ उनकरा सामनहीं लगन के सौ रूपया के नोट दे देनी बाद में लगन धान पहुँचा देले रहन ।

"बानी ?" राघो के आवाज सुन के घर से बहरइनी तब ऊ कहलस "बहिनिया बड़ी बेमार बिया । पीरो ले जात रहीं । कुछ रूपया होई ?"

"कतना ?"

"पचास गो ।"

www.bhojpurisahityangan.com

हम रूपया दे देले रहीं । ऊ ले जाके देखवले रहे । काम कर के रूपया सधा देले रहे ।

"बाजार का जात बानी ?" घर से ढ़ेर दूर ना गइल रहीं कि लगन के आवाज कान में पड़ल । नजर फेंकनी । ऊ खइनी मलत, चौकी पर से उठले हमरा तरफ बढ़ल ।

"हँ; का बात ह ?"

"कहतीं तब हमहूँ चलतीं । नेवता भेजे के रहे । कपड़ा लेवे के बा ।"

"चल । हम काहे ना कहब ?" समझ के नासमझ बनत पूछनी । आज तक कबो साथे बाजार नइखन गइल । आज जरूर रूपया मांगिहन । इहो बुझा गइल रहे बाकि पूछे के मतलब अउर साफ कइल रहे ।

"नेवता भेजल जरूरी बा आ हमरा पास एको पाइयो नइखे ।"

"कतना लागी ?"

"सौ ले ।"

"ठीक बा । चल । आव ।" कहत चल देनी तब ऊ कहले, "चलीं। आवते बानी ।"

बाजार पर मिलले । साथे कपड़ा के दुकान पर गइले । जवन जवन पसंद कइले, दिलवा देनी । कहलो पर हम पसंद ना कइनी । डर रहे कि बाद में कुछ कहे ना पावे । किराना दुकान पर जाये के पहिले बाकी रूपया दे देले रहीं । ऊ साथहीं, हमरे जीप पर, आइल रहे ।

..... दुवार पर चौकी पर बइठल रहीं । सामने आके खाढ़ होत लगन के मातारी कहलस, "बबुआ । इज्जत चल जबहिस ।"

"केकर हो ?"

"लगन के लइका के काल्ह तीलक बा । केहू रूपया नइखे देत । कवनो चीज बाजार से नइखे आइल । तू सौ रूपया दे दहिस ।" ऊ एके सांस में कह गइल । ओकरा बुझाइल कि हम सब बात सुना दीं, जतना जल्दी हो सके । अब समय नइखे रह गइल । हमरा पर ओकरा भरोसो रहे । नाहियो रहित बाकिर सब जगह मांग के हार गइल रहे लोग ।

"लगन के हम रूपया दे सकिला । ऊ लेवे-देवे में खरा हवन बाकिर ऊ कहिहें तब । तोरा कहे से ना । देहूं के उनके नू होई ?"

ओकरा जात देरी भइल बाकिर लगन के आवे में ना । बुझाइल कि ऊ अपना मातारी के भेज के घरे पर रहे । हमरा ओह घड़ी ना बुझाइल रहे कि ऊ पहिलहीं अपनहीं काहे ना आइल रहे । बाद में रतन से मालूम भइल रहे कि लगन उनका पास गइल रहे आ कहले रहे "केहूँ रूपया नइखे देत । दू सौ बिना इज्जत चल जाई ।"

"हाकिम के पास काहे नइख जात ?"

"ऊहाँ के रहे के कहब । हम रहल नइखीं चाहत ।"

www.bhojpurisahityangan.com

गरूवारी आ घरूवारी में कबो फुरसत ना मिले । लगन गरूवारी पर ना रहल चाहत रहन । उनका मन में दूइए सौ के बात ना रहे । ऊ आपन आगहूँ के खर्च देखत रहन । दू-तीन महिना के बाद भईंस बिआये के रहे । सोचत रहन कि भईंसं बेंच के रूपया लौटा देब । रतन के दुवार से आके घरे से मातारी के भेजले रहन, हमरा अइला के सुन के ।

"का हो ? काल्हे तीलक ह ?" हम सामने में लगन के देख के पूछनी ।

"जी ।"

"बाजार जाए के बा ? कतना चाहीं ?"

उनकर चेहरा बचावत पूंछनी ।

"दू सौ से आज काम चल जाई । "तरहथी पर के खइनी मलल छोड़ के ओसवलस आ फांक गइल आ जीभ से ओठ तर बटोरत मन के थीर कइलस । बुझात रहे जइसे अथाह पानी में बचे खातिर हाथ-पैर मारत आदमी कवनो लहर के साथ किनारा पर फेंका गइल होखे, अबहियों ओकरा विश्वास ना होत होखे कि ऊ किनारा पर पहुँच गइल बा आ चिहा चिहा के ताकत होखे ।

अउरी कवनो बात ना पूछ के, दू सौ रूपया ले आके देनी आ ऊ ओकरा के देखत तहिआवत चल देलस । ओकरा चाल में फुरती देखत बनत रहे । बुझात रहे कि पाँख रहित तब उड़ के चल जाइत । ..... के कहल ? कब कहल ? केकरा से कहल ? ई कबो ना कहल जा सके बाकिर हमेसा अस इहो बात चारो तरफ गाँव में किरन फुटते फैल गइल कि लगन के लड़का के तीलक कम चढ़ल बा । ऊ लगनपत्री नइखन देत । तीलकहरू बइठल बाड़नस ।

गली में जात लगन पर नजर पड़ल आ उनका के बोला के पूछनी तब ऊ बइठ के धीरे-धीरे कहलन "लोग धोखा देल । कहल का आ कइल का ।"

"शादी होई कि ना ?"

"उहे लोग नू कहीं ।"

"ऊ लोग का कही । जवन बनल लोग दे देल । करे के मन होखे त कर, ना त साफ जबाब दे द । लोग जाव । बइठवले काहे खातिर बाड़ ? तीलक ले के केकरा राज भइल बा ? जवन लेब नाच-बाजा में लाग जाई । लइका लेके जा; शादी कर आव ।"

"हमार बात नइखे ।"

"तब ?"

"भतिजा मनेजर बाड़न ।"

उनका भतिजा के बोलवनी । समझावे से ऊ समझ गइल आ जाके

www.bhojpurisahityangan.com

नास्ता पानी करा के लगनपत्री दे देलस ।

सुबह जाग के बधार में दूर तक चल गइल रहीं । लौटे में देर हो गइल । घरे अइला पर बंदा आ बिभोर के माटी सान के लोंदा बनावत देखनी । पोस में लकड़ी पर बइठल लगन खइनी मलत रहन । हमरा के देख के खड़ा हो गइलन ।

"बइठ" कह के खाढ़ खटोला के बिछा के ओही पर बइठ रहनी आ पूछनी "काहो शादी के तइयारी होत बा ?"

"रउरे पास चलनी हां ।"

"का ?"

"हमरे के रख लीं ।"

"रहब ?"

"रहब । हमार शादी करवा दीं ।"

"शादी त करवा देब । एहमें सक नइखे । अभय रात में ना रहे । अउर सब ठीक बा । तूँ रहब ?

"हां, रहब ।"

"ठीक बा । तू हीं ना नू रहत रह । हम त कइएक साल से कहत रहीं । का लेब ?"

"पचीस मन कच्चा ।"

उनकर मतलब कच्चा पचीस मन धान से रहे ।

"ना भाई । हमरा खातिर भारी बा ।"

"तब कतना ।"

"तूहीं फिर कह ?"

हमरा खातिर नास्ता आइल तब उनकरो के दिअवा देनी । दूनो आदमी नास्ता करत रहल । बंदा आ विभोरो काम करते रहनस । चारो तरफ गाँव के घेर के पसरल धुआँ अस चुप्पी पसरल रहे । सब केहू सोचत रहे । लगन उठ के कल पर दोसरा किता में चल गइल तब विभोर पूछलस "कतना देब ?"

"पचीस मन ढेर बा ।"

"तब बीस मन ?"

"ठीक बा । पूछ ।"

विभोर उठ के कल पर गइल आ लगन के साथे आइल ।

"तब का कहत बानी ?" लगन पूछलस ।

"हम का कहीं ? तूहीं कह ।"

"जाये दीं । बीस मन दे दीं ।"

"देब । अउर का चाहीं ?"

"दू-चार मन चाउर खाए खातिर दे देब ।"

"मिल जाई । शादी में कतना लागी ?"

www.bhojpurisahityangan.com

"बारह-चोदह सौ ले, अउर का ?''

"आज .....?''

"कपड़ा ले आवे जाये के बा । दू सौ दे देब ।''

"जा । आव । देब ।''

अभय पर नजर पड़ल । दाना लागल हाथ धोके पोछत रहे तब पूछनी, "लगन बात करत बाड़न । रहे के कहत बाड़न । तोहरा घर के लोग का कहल हा ?''

"कुछ ना ।''

"तब इनका के रख लीं नू ?''

"हम का कहीं ?''

"तू कुछ कहब ना । आ सब केहू कतो ना कतो रह जाई । बाद में कहब कि हम ना रहब तब हम केकरा के राखब ? घरे कह दिह, हम इनका के राख लेत बानी ।''

दूबारे लगन आइल तब हम दू सौ रूपया ले आके दे देनी । डायरी पर लिखे जात रहीं कि सुनाइल, "बाजार जात रहीं । अतना से ना होई । दू सौ अउर ना होई ?'' देखीं तब ऊ दूनो नम्बरी लौटावत रहन ।

"बा । रख; देत बानी । दू सौ अउर दिह त ।'' चउका पर खाढ़ अपना औरत से कहनी तब ऊ ले आके दे देली ।

"ले दीं । इहो दू सौ ले लीं । हमरा सोनार के देवे के बा । उनके के दे देब ।'' उनकर हाथ हमरा तरफ तनल रहल । नोटनी के पकड़त हम कहनी, "का भइल बा; द । जा सोनार के लिआ आव ।'' उठ के जाये लागल तब फिर पूछनी, "का का बनी ?''

"पायल, बाली । अउर का ?''

"केकरा से कहले बाड़ ?''

"सीदेनी के ।''

"ठीक बा । बोलाके ले आव ।'' सीदेनी से लेन देन करिला । सोचनी कि बिना रूपयो के काम चल जाई ।

ओह दिन सीदेनी आइल रहन आ आडर के साथ चार सौ रूपया ले के चल गइल रहन बाकिर दोसरा दिन पायल, बाली लेके अइलन तब लगन के मेहरारूओ के बोलवावाल गइल अउर तउल के हिसाब कर के समझावल गइल रहे । लगन से भइल पहिलहूँ के बात हम लगन बो से कह देनी तब ऊ कहलस, "हम का कहीं ? उनकरे नू रहे के बा । छोटका के कहत रहीं । ऊ नइखे गच्छत । रोपनी में दस दिन छोड़ा दी ।''

"हमरा पास तोहरे लोग के कुटल उसना चाउर बा । उहे देब । अरवा ढेर नइखे ।''

"उसना त नइखीं जा खइले बाकिर अब दोसर कवनो उपायो नइखे

www.bhojpurisahityangan.com

लउकत। इहे तनी अरवा चाहे ले ।''

दू सौ, चार सौ, सव, डेढ़ सौ कर के दू हजार रूपया लगन ले गइलन आ सीदेनी के पौने दू सै रूपया देवे के रह गइल तब जाके लगन के लइका के शादी भइल । अभय काम छोड़ देलस आ लगन करे लगलन ।

शादी के बादो लगन कहियों रात में दुवार पर ना रहलन । पूछला पर आज काल्ह करस आ तरह तरह के बहाना बनावस । दिनो में हर घड़ी दुवार से गायब रहे लगलन आ कामों में ढिलाई होखे लागल । दुवार पर बइठकी में लोग कहे, ''लगन अहदी ह, देहचोर ह, धुवा ह ।'' बाकिर हम ई कहके चुप कर दीं, ''ऊ हमार लइकाईं के साथी ह ।'' अब सामने रहे लोग के कहल । पानी गरम करके खोजे लगला पर पानी सेरा जाय तब ऊ कल पर पानी चलावे खातिर मिलस । लाख कहलो के उनका पर असर ना पड़े । सामने में काटल-काटल किरिया खास बाकिर थोड़े देर के बाद ना बुझाय कि ऊ किरिया खइले रहन । कांछ के पड़ रहस । लइका आवे । दाना,चला के चल जाए । हम कटकटाईं बाकिर खीस बांझ ऊसर धरती अस कवनो फसल ना पैदा कर सकल ।

..... बाहर से चार दिन पर अइनी । बीमार रहीं । दुवार पर लगन के ना देख के उनका के खोजे लगनी । चार घंटा तक ना लगन आइल ना ओकर मेहरारू । छोटका लइकवा चार घंटा के बाद मांझा चढ़ा के आइल । हम ओकरा के खेदत कहनी ''जाके मातारी -बाप के भेज ।'' ऊ डर के मारे रोवत घरे भागल गइल ।

फिर का रहे । गाँव भर में कहले, ''हमरा लड़का के मार देलन । गारी देलन। हमार ईज्जत ना रहल । हम काम ना करब ।''

सांझ खा विभोर के देखनी तब सब बात कहनी । ऊ बेचारा गाय-बाछी के सानी पानी करे में लाग गइल । शायद ई सोच के कि एकाध सांझ के बात बा । फिर त लोग करबे करी । दरिद्रता के पैदावार बढ़ावे वाली धन तांत्रिक आ साम्राज्यवादी सभ्यता के विकास के चरम सीमा दूनो आँख खोल के देख रहल बानी ।

हम विश्वास करिला, कवनों बात के खतम करें में । जब हम गाँवघर, बड़-छोट सब केहू से कहवा के देख लेनी कि लगन काम ना करी तब कहनी, ''हमार रूपया दे द ।''

गाँव में इ पहील घटना रहे । हरवाह-चरवाह रखल-छोड़ल जाला जेठ पुरूनमासी के दिन । बाद में ना ।

पाछा में के का कहल ना कह सकीं बाकिर हमरा से सुना के सभे समझावल, ''रात भर के जागल आ साल भर के निबाहल कवनो कठिन काम ना ह। बीच में मत छोड़ । उहाँ के तोहार जवन तास रखले बानी तवन भूला मत । केहू केहू के तास फिर कइसे राखी ? भुला गइल कि दू सौ खातिर गाँव

www.bhojpurisahityangan.com

भर में दउड़ल रह आ केहू ना देले रहे ।''

''केहू गोली मार दी बाकिर हम काम ना करब'' सिउपा के समझवला के बाद लगन कहले । सिउपा से ढेर उमिर के केहू हमरा गाँव में जिन्दा नइखे ।'' राएरा के पास रखवावे खातिर काल्ह सिउपा लगन के बोलववले रहन'' सुन के हम सिउपा के पास गइल रहीं आ पूछले रहीं ''काल्ह तोहरा भिरी राएरा आइल रहन। लगन के बोलवावे खातिर कहले रहन तब मना काहे ना कइले रह ?''

सिउपा पूछले रहन ''सुननी हां कि रूपया मांगत बाड़ ।''

''केहू लइका के कहेला कि पढ़ ना त जान मार देब तब का ऊ जान मारल चाहेला ?'' हम कहनी तब ऊ लगन के बोलवा के समझावत रहन । लगन के बात सुन के पूछले, ''अब का कहत बाड़ ?''

का कहीं त ? उठ के चल आइल रहीं ।

..... हम राएरा के पास गइनी आ कहनी ''हम ई कहे नइखीं आइल कि तू लगन के मत रख । अगर ऊ कहत होखत कि हमरा में कमी बा तब कह; हम दूर कर दीं आ ऊ हमार काम करस ।''

''ना ऊ रउरा में कवनो दोष नइखे कहत । बाकिर जानत बानी नू कि ऊ राउर काम करे के तइयार नइखे होत । अइसना में केहूना केहू त रखबे करी; हम भले मत राखीं ।''

राएरा के हरवाह लोग रो रो के साल लगावेला । दस बजे रात के काम पर से जाके चार बजे भोरो में अइला पर ऊ गारी-मार देलन । अउर साल त उनका कवनो ना कवनो हरवाह मिल जात रहनस बाकिर एह साल केहू ना मिलल रहे । उनका खेती के काम बंद रहे । ऊ गरजू रहन । अनपढ़, गंजेड़ी आ हर घड़ी सप्तम स्वर में बात करें वाला के समझावल आ भूसा पटकल बराबर समझ के चल आइल रहीं ।

लगन राघो के साथे रूपया लेके अइलन फेरे खातिर तबो हम दू आदमी के सामने कहनी, ''तू गाँव के बड़-छोट कवनो जात के दस आदमी के कह। हम ओह लोग के बोलवावत बानी । ऊ लोग जे कहीं, हम मान जाइब । तुहूँ मान जइह ।''

लगन के चुप देख के फिर पूछनी, ''का कहत बाड़ ?''

''हम रूपया लौटाये आइल बानी ।''

''द ।''

''कतना बा ?'' राघो पूछलस ।

''ई नइखन जानत ?'' लगन के तरफ देख के पूछनी ।

''कहीं । लिखने बानी नू ?'' नजर झुकवले केवाड़ी के अलोत से लगन कहले तब कहिया कतना देल रहे सुना देनी ।

''आ सीदेनी के ?''

www.bhojpurisahityangan.com

''इहवें नू बाड़न । पूछ ल ।'' थोड़े देर पहिले सीदेनी के आवत देख के कहले रहीं, ''लगन हमार काम छोड़ देले । हमार रूपया लौटावे के कहत बाड़न । अब, बाकी हम ना देब ।''

आपन रूपया माँगे खातिर लगन का घरे सीदेनी गइल रहन । अपना से मनुष्यता के नाता दे दे ऊ खूब समझवले रहन बाकिर जब लगन ना मानल रहन आ कहले रहन, ''तू उहवें चल । हम रूपया ले के आवत बानी ।'' तब सीदेनी आवे के कहके गइल रहन ।

''हमार एक सौ पचहत्तर रूपया बा । का हाकिम ?''

''आठ सौ पचीस में चार सौ, तीन सौ आ पचास, साढ़े छः सौ मिलल तब एक सौ पचहतरे नू बाँचल ?''

लगन के इशारा कइला पर राघों चेट में से निकाल के रूपया देलस ।

''लगन तू कइल तवन केहू ना कइले रहे । इहाँ के तोहरे ना ढेर आदमी के तास संसारत रहीं । तू आपन रास्ता त बने कर देल ढेर आदमी के नुकसान कइल । केहू केहूँ पर कइसे विश्वास करी ?'' सीदेनी कहले । बुझात रहे कि उनकर बस चलित तब ऊ लगन के मुंह पर थूक दितन ।

लगन राघो के साथ चल गइलन । सीदेनी साव काठ के मूरत बन गइल रहन । उनका बगल में बइठल आदमी सोचत रहे, ताकत रहे । ''हाकिम आफिसर हईं । लड़काईं से पढ़हीं में रहनी । पढ़ाई छोड़ते काम लाग गइल । कबो गाय-गेरू नइखीं बंहले । सेरो भर के गठरी नइखीं उठवले । दूगो गाय, तीन गो बाछी बाड़ी स । घर में कवनो लइको नइखे। कइसे सानी-पानी होई?

हम सोच में पड़ गइनी । अब आगे से का करे के चाहीं । गाँव के लोग कहेलन तवन कि हम सोचिला तवन ? गाँव में केहू विपताइल मदद माँगे आवेला। हम केहूँ से सलाह माँगिला । तब केहूँ मदद करे के राय ना देवेला। हम सोचत रहीं कि आदमी के आदमी के मदद करे के चाही बाकिर अब.... ? बुझात नइखे कि सब तरफ सब कुछ गलते काहे हो रहल बा ।

हम कवनो सन्यासी ना हईं कि हमरा पर सर्दी-गर्मी क असर ना पड़ी। अइसन अरूचिआ विरोध गाँववालन से पहिले कबो हमरा ना भइल रहे ।

औसत आदमी से ज्यादा सुख-सुविधावाला अपना आदमियन से, संबंधियन से अलग हट के सर्वसाधारण के सुख-दुख में सरीक होखे के जनवादी सोच जे हमरा भीतर उभरे लागल रहे, ऊ एह ठेस से टुकड़ा-टुकड़ा होके बिखर गइल ।

–भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका
पटना, अक्टुबर 1998

●

www.bhojpurisahityangan.com

उत्प्रेरक

सड़क धइले जाते सेठ के दुकान के चउकठ पर ओठंघल-बइठल, धोती जाँघ पर समेटले, उघारे देह कांह पर गमछा, दाँत खोदत, दुकार के भीतर देखत, मुस्कात मनी के देखनी । अँगुठा आ अंगुरियन के बीच मइसात-मइसात छोट-मोट गोली अस बनल कागज के उनका पर फेंकत कहनी "सम्हर के बइठ ना त बिलार फान जाई ।"

मनी हामरा तरफ ताकत अचकचात, प्रनाम करते पूछले, "चलते आवत बानी ? रहब ? सांझ के भेंट होई ?

"आइब कि आइब ?"

"हमहीं आ जाइब ।"

दुपहरिया के बाद कुवार के घाम तीतकी अस लागत रहे । भोरम भोर डालटेनगंज से खाली चय पी के चलल रहीं । दू बजे जात रहे । राह में कतहूं कुछ खइले ना रहीं । उनका बात के भनभनाहट से बचे के गरज से मन में आइल कि रूक जाईं आ सुन लीं बाकिर ना रूकनी आ बढत गोड़ बढ़ले रहल । जाके मर-मैदान होके नेहाये-खाये के बा । इनका गइला पर ढेर दिक्कत होई । साथे लेले जाये के बात के झटकत बढ़त चल गइनी ।

सांझ के राह देखत, आहर थाहत रात हो गइल बाकिर चाँद-तारा के अइलो पर मनी ना अइल ।

भोरम भोर उठनी त मन में आइल कि केहू के भेजके उनका के बोलावाईं बाकिर घर-व्यवस्था, सर-सफाई में लागल रह गइनी आ उनकर याद दब गइल ।

दोसरा दिन दिनो भर ना अइलन । हमहू खोज-खबर ना लेनी । लइकाईं के दोस्त हवन । कवनो खास बात रहित तब जरूर अइतन । राह चलत मुँहदेखल बात कर देले होइहें ।

काम में लागल मन काम से उचट के भा डांड़-मुंडी सोझ करे खातिर उनकर याद करीत भा उनका के बोलवाइत बाकिर आरा से एगो मददगार के आ गइला से आरा-पटना के बात में लागल, घेराइल, अझुराइल रह गइल रहीं आ दिन जइसे आइल रहे तसहीं बीत गइल रहे ।

सासाराम गइल जरूरी रहे । ओही खातिर हम आइलो रहीं । बुध के आइल रहीं । दोसरा दिन बियफे, जहिया दखिन के यात्रा ना कइल जाला, रहे आ अपना गाँव से दखिन (सासाराम) के यात्रा ना कइले रहीं ।

भोरे से उठ के हर तरह से तैयार हो गइल रहीं । नेहा खा, कपड़ा पहिर कागजन के देख देख के रखत रहीं कि खोंसत खंखारत मनी आ गइले आ कुर्सी पर हमरा हाथा के इसारा के पाछा करत बइठ रहले ।

"तनी सासाराम जात रहीं । बड़ी जरूरी काम बा । सांच पूछ त एही खातिर आइलो रहीं ।"

हम कागजन के जइसे देखत-सरिआवत रहीं ओसहीं देखत-सरिआवत रहनी आ कान उनकर बात सुने में लागल रहल ।

"रउआ सिवाला वाली बाग में मास्टर के सात डिसमिल जमीन बा ।" ओह बाग में दू-तीन गो मास्टर के जमीन बा बाकिर रकबा से बुझ गइनी कि कवना मास्टर के बात करत बाड़न ।

"बा । तब ?"

"ओकरा अलावहूं ओह तरफ उनकर दू जगह जमीन हइन । ऊ ओने के

www.bhojpurisahityangan.com

सब के सब बेंच-बांच के अपना तरफ आइल चाहत बाड़न । एक दिन रउआ दुआर पर चौकिदारन के देख के बात चलवेला रहीं । आजकल ओहनी के दिनो भर बैंक पर डिउटी रहत बा । ऊ फयलदांव देख के रउवे दुआर पर रउवे चौकी पर रहेलनस।

सांच पूछी त हमरा राउर से बात कइला के बादे दोसरा केहू से बात चलावे के ।

राउर छोट लइका कवनो काम से डाकघर में गइल रहन । ह, इयाद पड़ल। आजकल सिपाही के भर्ती खुलल बा । ऐर लइका दरखास रजिस्ट्री करत रहनस । ऊ कवनो के मदद में गइल रहन । उनकरा से बात कइला पर मालूम भइल रहे कि रउआ दू-तीन दिन में आइब ।''

मनी के आइल बाउर लागल रहे । बातो कइल नीक ना लागत रहे । कबो यात्रा पर जात खा मिललो ना रहन एह से नीक-बाउर असर के थाह ना रहे । लगले खइले रहीं आ बस के कमी नइखे सोच के उनका बात के बोरसी के उटकेर उटकेर के तपनी ।

जाये के पहिले घर होत खंड़ी में गइनी । थुक-खंखर के आवत-जात मेहरारू लइका से मालूम भइल कि एक दिन मनी खोजत रहन ।

''ऊ कहत बाड़न । एक दिन के त हमहूं जानत बानी ।'' अपना मेहरारू के बात सुन के फिर पूंछनी, ''ठीक बा । एके दिन बाकिर जनावल ना चाहत रहे ?''

लइका कहलस, ''पहिलहूं एक दिन ऊ खोजत रहन जब तू ना आइल रहे।''

''झूठ कहत बाड़न । एक दिन के त हमहूं जानत बानी ।'' अपना मेहरारू के बात सुन के फिर पूछनी, ''ठीक बा । एके दिन बाकिर जनावल ना चाहत रहे ?''

''बाते पर नू बात चलले । कवनो बात लेखा बात रहे । बिसर गइल रहे । कहे के कहले रहितन तब कहलो जाइत ।''

हमरा भावुक, अतिसंवेदनसील मन के नीक ना लागल । एक दिन खोजले रहन तब दू-तीन दिन काहे कहलन ?

''देखं, हमरा गइल जरूरी बा । नाहियो रहित तब बेसी बात अबहीं का करे के बा ? हम लेब । हमरा ओह पर ... नइखे बनावे के ना ओह बिना हमरा घर के खरचिए घटल बा । ऊ हमरे आरी बा । ओह पर गाँघर के बर-बरात ठहरले । लोगन के मुंडनो उहें पर होला । गाँव के लोगन के जे ध्यान ना राखे ओकर ध्यान गाँवे के लोगो ना राखस । ओह पर के पेड़ बेचत रहे लोग तबो हम खाली पेंड़ ना कटवावे के सर्त पर, या जमीन साथे खातिर बात करे खातिर आपन आदमी भेंजले रहीं । बाकिर लोग ढेर दाम मंगले रहे आ हमरा साउझ ना भइल रहे । उनका चचेरा भाइयो के बा ।''

''उनका भाई के बिक गइल बा ।''

''खैर, हम नइखीं जानत । तब त देखे के होई कि ऊ लोग के कइसे कइसे हिस्सा बा । जमीन हमरा से पछिम बिया । अगर ओह लोग के बीच में पूर्वे-पछिमें आर होई तब त हम ले लेब । बाकिर आर उत्तरे-दखिने होखे, उनका भाई के भाग पूर्व होखे आ ऊ बेचा गइल तब उड़ के जाये खातिर हम पाँख कहंवा से पाइब ?''

''हमरा अतना मालूम नइखें ।''

''त ठीक बा । पता कर ल । ऊ का माँगत बाड़न ?''

''माँगे के के कम माँगेला ? रउआ भाई के चार कट्ठा कहां दो ओनहीं बिकाइल बा । पचीस हजारे बिकल रहे । ओकरे माला जपत बाड़न । बाकिर रउआ से का छिपावे के बा, दस-बारह से अधिका देवे वाला केहू नइखे । लाला जी कहत रहीं कि पंद्रह में ममिला हो सकेला । आदमी उनका हाथे में बा ।''

''ठीक रहल । तू उनकरा से बात कर । सांझ के हम आ जाइब ।'' कहत झोरा उठा के चलनी तब उहो हमरा पाछा पाछा चल देलन ।

www.bhojpurisahityangan.com

"काल्ह रउआ सानागम गइल रहीं आ ऊ स्कूल चल गइल रहन बाकिर उनका घरे कहवा देले रहीं आ ऊ स्कूल से हमरा पास आके बात कइले रहन।" मनी आके बिना भूमिका के बात करे लगले।

"का भइल ? बइठ।"

"ऊ जल्दिए बेचल चाहत बाड़न। कहत रहन कि दोसरा से त 20-25 हजारे कट्ठा के माँग करत रहीं बाकिर उहां के साढ़े सोरह हजारे दे देब।"

"के कतना देत बा ?"

"रउआ से झूठ बोल के कहाँ जाइब ? चौकिदार रउवे आदमी हवन। ऊ नीचे के बात करत बाड़न। एक जाना, उनकरे बगलगीर 12 हजारे कहत बाड़न। रउआ जानत होखब। एगो के दो, आने के सिपाही में बा, ऊ पंद्रह हजारे कहले बा।"

हम लम्बा सांस खींचनी-छोड़नी आ कहनी, "ठीक बा। तनी राय-बात कर लेवे द।"

"हम इहो कह देनी हाँ कि जतना कहब ओतना से नीचे केहू के देब तब हमरो दुख होई। बेसी, मिले त दे सकेल; तोहार धन ह।"

आपन-दोसरा के, गाँवघर के, नीक बाउर ढेर बात भइल। राय-सलाह देल-लेल गइल।

"कवनो खास-जल्दबाजी ?"

"ना। ओतना बिगड़ेवाली बात नइखे। एह साल एह बहे एक आदमी से थोड़े खेत बय लेले हा। लोग कहत बा कि खंदान में पहिले-पहिले बय खरीदाइल ह। इतराहल बाड़न।"

"एह में इंतराए के का बा ? कम जाला तब आदमी बेचेआ आ बढ़ जाला त खरीदाला। समय सब करावेला। जानत बानी, एहिजे ना सब गाँव में एके बात बा। लोग आपन ना देखे आ दोसरा के देख देख के जरत रहेला। देख के आग बढ़े के होड़ लगाइत तब त ठीक रहे बाकिर इहाँ त टांग खींचे से फुर्सत केकरा बा।"

"युग-जमाना देख के ओने से बेच के एने चल आवल चाहत बाड़न बाकिर इहो जानत बानी कि ममिला में देर लइल ठीक ना होखे। दिवालो के कान होला।"

होस-हवास दुरूस्त भइला के पहिले से मनिए के ना गाँवघर के सब लोग के देखत-समुझत आ रहल बानी। सभे सबकेहू के भलाइये ना बुराइयो करेला बाकिर कवनो अनजान केंद्राभिसारी बल बा जे एक दोसरा के सटवले रहेला।

"मनी के दुआर पर बइठा के बीड़ी दिहिला त मन करेला कि बोरसी के आग उनकरा माथ पर उझिल दीं।"

मेहरारू के बात में वजन रहे बाकिर ओहू दिन कहले रहीं, गाँव छोड़ के बात करे खातिर जवार में जाये पड़ी। दूरबीन से देखला पर खाये के चीजन आ सुँघे के फूले पर ना पीये के पानियो में अनगीनित पिलुआ लउकी।"

"आने दूनकर इहे कामे ह। फालतू एने से ओने करत रहेलन। कवनो फयदो नखहीन आ एकरे चलते दुस्मनो बढ़ावत जा रहल बाड़न। हमरा त नइखे बुझात कि केहू अतना देत होई। झूठो के हांक रहल बाड़न।"

हमार भतिजा हमरा पुछला आ मनी से भइल तब बात के सुनला के बाद कहते रहन कि सामने गली में मास्टर साहब के भाई, जे आपन हिस्सा बेच चुकल बाड़न लउकलन। हम इसारा कइनी तब आके हमरा तरफ सवालिया नजर से देखत चौकी पर बइठ रहलन।

"सिवाला में के आपन जमीन रउआ बेच देले बानी। हम ई ना जानत रहीं। काल्ह जननी ह। मास्टरो साहब आपन हिस्सा हटावल चाहत बाड़न। रउआ सभे के कड़से बंटवारा ह ?"

www.bhojpurisahityangan.com

"जानी त रउआ आरिए ह बाकिर रउआ धेयान ना देले होखब । हमनी के कोट से बटंवारा ह । हमार उत्तर आ उनकर दखिन बाकिर चंकबंदी वाला उलट देले बाड़नस । हम जानतो ना रहीं । खरीदे वाला जाके पीरो देखले आ हमरा से कले रहे कि रउआ दखिने लिख दीं । हमरा बेचे के चिंता रहे । अगर-मगर करे में कवनो फायदा ना देखके हम जाके दखिने लिख देले रहीं ।"

"हम ना जानत रहीं । कतना दिन भइल ? कतना में लिखले रहीं ?"

"रउरा अरिए रहे । चहितीं त सिलिंग ऐकट से राउर हो जाइत ।" ई बहुत मुकदमाबाज हवन । बराबर एक ना एक मुकदमा में अझुराइल रहेलन । चाहे जे सोचे के ऊ आपन नेक सलाह देले होखस बाकिर हम चाहियो के ना कह सकनी कि पुस्तैनी भा नाना के हक खातिर ना लड़ेवाला हम सात डिसमील जमीन खातिर अपना पुरान परजा से लड़के जवनो सील-लेहाज बा ओकरा के खतम कइल चाहब ।

"भाई ! मुकदमाबाजी कुछ ना देले । उल्टे घर के सांतियो समाप्त कर देले। कवनो बात नइखे । बाप-दादा लोग के जगह-जमीन देके बसावत रहे । अब पाँख जामत हइन स के त नोच के लहूलुहान कइल कवनो बिचारवान आदमी बेवकुफिए कहीं ।"

बैंक से निकल के गली में जात आदमी के बोला-बइठा के बात सुरू कइले तब बात बैंक से निकल के गाँव के गली-गली, घर-घर में, एने-वोने देर देर तक रूकत, दउड़त, कुदत-फानत, थथमत, मांकत चलत रहल आ ओह आदमी के गइला के इंतजारियो ना कर के हम फिर उनका से पूछनी, "तब कहनी ना ।"

ऊ तनी रूकले । सोचत कहे लगले, "जान जाइब कि एहीं मास्टर के चलते हमरा आपन बेचे के पड़ल रहे ।

हम दयाराम के थोड़ी सा खेत खरीदत रहीं । कागज आ गइल रहे । सब रूपया गते गते दे चुकल रहीं । बस दस हजार रह गइल रहे । ई भेंआ गइले । हम इनका से कह देनी कि दयाराम के दस हजार देवे के रह गइल बा आ हमरा पास नइखे । ओकर जोगाड़ो नइखे लउकत ।

जान जाइब कि ई ओकरा से कह देले । भइया के पास रूपया इनखे । लिख देबे त जल्दी देबो ना करिहें ।

रात-दिन लाला जी क दुआरे पर रहे-सुते वाला आदमी लाला जी के पास बोलवलो पर ना आवे ।

जगदीसपुर जाये के दिन नगीचाइल तब लाला जी के पास गइनी । मालूम भइल कि कागज लिखाइल नइखे आ बोलववलो पर दयाराम नइखन आवत ।

हम ओकरा घरे गइनी । घरहीं रहे । बहरी दुआरे पर ओकरा छोटका भइयवा से भेंअ भइल तब पूछला पर ऊ बतलवलस, "घरहीं बाड़न । जाईं बात कर लीं ।" हमरा के बगलिया के बढ़ल चहलस ।

ओकर मुस्की हमरा आँख में चभ दे गड़ गइल, मन छनकल आ लपक के ओकरा के धइनी । "का बात बा हो ? कुछ जानत बाड़ का ?"

"रउआ नइखी जानत ?"

"ना ।"

"रउआ मास्टर साहब से भेंट हो गइल हइन । रउआ उनका से कहनी कि रउआ पास हमनी के देवे खातिर दस हजार रूपया नइखे आ जल्दी जोगाड़ी कइल कठिन बा । उहाँ के इनका से कहनी । लिख देब त रूपया ना मिली । देर होखी।"

"कहला के कहले ना अर्थ के अनर्थो हो गइल रहे । हमार मन हमरे के दोसत रहे । कइसना कइसना अफतरा में हम मदद कइले बानी कि का कहीं बाकिर उघटा-पुरान, तोर-मोर कइला में कवनो फायदा ना देख के पूछनी, तब अब रूपया लेइए के लिखे जइहें ?"

www.bhojpurisahityangan.com

"हाथ कंगन के आरसी का ? आइए गइले । पूछ लीं ।"

दया राम के आके हाथ जोड़ के हमरा आगा खाढ़ होत देख के ऊ बगलिया के चल गइल ।

"तोहरा रूपया लेइए के लिखे के रहे तब हमरा से नू कहल चाहत रहे । घर में बइठल बाड़ । हम का अगरम जानिला ?"

'6कवनो बात भइला पर रउआ घरे गइल नइखीं ? कवनो नया बात रहे ? अब ज रउओ सब जालिए गइनी तब हमरा का कहे के बा । जे कहब, रउआ कहे के बा । राउर बात नानू उठी । कबो कवनो बात उठवले बानी ?"

उनका के लाला जी के पास ले गइनी । लालाजी सब जान-सुन के कहनी, "जे देले बानी ऊ खोल देत बानी आ बाकी दस हजार इजलासे में दे देब ।" फिर दयाराम से पूछनी, "का हो इहे बात नू ?"

"जी । अतना जल्दी दयाराम कहले कि हमरा बुझाइल जइसे ऊ पहिले लाला जी से बात कर के पक्का कर लेल होखस बाकिर अइसन बात ना रहे ना त अब तक छिपल ना रहित ।

रास्ता केहू खातिर रूके ना । केहू के साथे कवनो तरह के घटना भा दुर्घटना हो जाय दू दूने चार होला । पूर्व पूर्बे रहेला आ पछिम पछिमें । गदहा गदहे रहेला घोड़ा ना बन जाय । दूइए दिन के बाद दयाराम के पेट में दर्द उठल । उहो अइसन ओइसन ना जानलेवा । उनका के लोग जानत रहे कि अपेडिक्स बढ़ल हइन । पटना ले जाये के तैयारी कइल लोग । दयाराम के छोटका भइयवा आइल । दू हजार रूपया मँगलस। हम त उनकर बनल-बिगड़ल समय-बेसमय बराबर संहारत रहीं । उनकर कवनो तास, आज तक, ना रखले होखीं से बात ना रहे बाकिर.....।"

"बाकिर ऊ खूदे आपन राह बन कर देले रहन ।"

"ह । इहे बात ह । ऊ खूदे आपन राह काट देले रहन । हम देवे खातिर तैयार ना भइनी । कहनी, अब रूपया कोटे में देब ।"

ऊ रोवे लागल । सिसकत रोवां भारी कर के कहलस "हमरे बिसवास पर दे दीं । जब आदमी बेदिदा के हो जाला त भोगबो त करेला । केहू के कहला में पड़ गइल रहन । अपन दिमाग रहित तब न ! गाँव के आदमी एक जगह बसल बा । थोड़े देर खातिर, कसहूँ ई भुला गइल कि हमरा केहू के जरूरत ना पड़ी, गलत ह इहाँ ध नी-गरीब, बड़-छोट केहू के दोसरा बिना काम ना चल सके । बिना बिचारे जे करे से पाछे पछताय झूठ ना ह । बाकिर जाये दीं । अबकी बेर माँफ कर दीं । क्षमा बड़न को चाहिए छोटन के अपराध ।"

हमरो हाथ पर रूपया ना रहे बाकिर एने-ओने से जुटा-पटा के दे देले रहीं। जान जाइब कि दोसर कवनो उपाय ना भइल तब जमीन बेचे के बात कहानी। पछिम भ के यमुना हमार सलहिया हवन । ऊ अपना साथे अपना बगलगीर के ले अइले आ उन्हीं से जमीन बेचे के बात करे के कहले । दोसर समय रहित तब उनकर बात हम ना मनतीं । खरीददार के भाई हमरा दुस्मन के मददगार हवे बाकिर दस हजार के भार तरे दबल मन के अउर दबा के कहनी, एह घोड़ा प के चढ़े जे एकर दाम दे ।

यमुना के कहला पर उनका साथे आइल आदमी इस हजार हमरा के देलस। हम स्पया लेके, गिन के भारिए मन से सही बाकिर कागज मंगवावे के कह देनी । एक बोझ उतरल तब एक बोझ चढ़ गइल । घर में मुर्दा तोप के बेओ के बरात के स्वागत में लागल रहे वाला आदमी अस जाके लिख देले रहीं ।

बैंक से दारोगा के निकलते चारो सिपाही लोग एक दोसरा के धकियावत निकलस । रास्ता के बीचे सुतल, ताकेत कुत्ती के बंदुक के कुन्दा देखावत, छरपत, नगलियावत चल देले । कुत्तिया काँय-काँय करत, पाछा ताकत उठके फुर्र दे भागल । मन में आइल कि हमरा दुआर पड़े जात बा लोग । बोला के चाय-पानी करा

www.bhojpurisahityangan.com

दी बाकिर "पुलिस के मीताई से जुदाई अच्छा, पीन्टू के मिठाई से खटाई अच्छा" सोच के चुप्पे रहनी ।

मास्टर साहब के भाई जात, पाछा ताकत कहले, "गंहकी चढ़ावत होइहें बेचे के नखहीन ।"

"सुनत बानी कि ओने से हटल चाहत बाड़न ?"

"एने ठीक कइले बाड़न का ?"

"हम का जानी कि का करिहें ?"

ऊ बैंक में चल गइले । भजिता कहले- "बड़की चाची के जरावत खा मनी बात करत रहन । लोग कहल कि जमीन राह पर नइखे । केहू घर बनावे खातिर ना ली । खेती करे वाला ओतना रुपया ना दी । मनी, दोसरा के का अपनी जरला के चिंता ना करस, हांकत चलले ।"

केहू केहू कहे, "ना देब आ ऊ मर जाई तब सब देल बुड़ जाई ।"

"ना जी । अइसन कानून नइखे । ओकरा बंस में जे रहीं; उहे दी ।"

"अब त लिखा गइल रहे । कवनो जबानियो ना रह गइल रहे ।" हम कहनी तब मास्टर के भाई हंस देले ।

फाटल दूध ना जामे बाकी आदमी के मन दगाबाजो के मदद खातिर कुछ पड़ेला आगा में अच्छाई के भरोसा कर के । जब तक सांस तब तक आस ।

अबही हमरा कुछ करे-कहे के ना रहे बाकिर जतना ज्यादा हो सके जाने-सुने के रहे । अपना राह के खाल ऊँच से परिचित होखे के रहे । मार्गदर्शन खातिर भइया से बात चलवनी तब ऊ कहले, "एक दिन मनी इहवें चौकिदारन से बात करत रहल तब कहले रहीं केहू से बात करे से पहिले तोहरा से बात करे खातिर । काल्ह आइल रहन । का कहत रहन ?"

सब बात सुन के फिर कहले, "देस त ले लेवे के काम बा । मँगला से का भइल ओतना मिलबहिन ना ।"

पढे-लिखे से, घर के काम-काज से निकल के अउर दिन अस गली में जात चौकी पर ओठंघल छोटका लाला जी के देख के उनका तरफ चलनी । हमरा के देख के ऊ उठ के बइठ रहले । हमहूं, प्रनामा-पाती के बाद जाके ओही चौकी पर बइठ रहनी ।

गली में जात एगो लइका आके हमरा आ छोटका लाला जी के प्रणाम कर के लालाजी के पूर्व में काला चसमा लगवले बइठल लइका से पूछलस तब ऊ अपना आँख में कीड़ा पड़ला आ दबा-दारू के बिस्तार से कहे लागल । हमरो चुपचाप सुने पड़ल ।

ओकनी के जात देख के छोटका लालाजी से मनी से भइल बात सुना देनी । गाँव में कवनो ममिला इहां सभे के बेजनले ना होखे । हमरा विश्वास रहे कि ई जरूर जानत होइहें ।

"रउआ लेब ?"

"जइसन सलाह दीं ।"

"ठीक बा । ठहरीं ।" फिर मुड़ी घुमा के गली में खेलत लइका से कहले, "जाके मासटर के, अपना चाचा के बोला ले आव त ।"

लाला जी आके अपना दुआरी पर बेंच पर बइठ रहले । हम उहां गइनी । सब बात सुना के पूछनी, "के कतना देत बा ?"

"हमरा सामने बात ना ह । हम झूठ-साँच कहला-सुनला में ना रहीं । खबर गइल बा नू । आ जाये दीं । ई बात ठीक ह कि ऊ ओने से हटल चाहत बाड़न ।"

"कादो रउहा कहत रहीं की पंद्रह हजारे के आदमी रउआ हाथ में बा ?"

www.bhojpurisahityangan.com

"ना जी । झूठ बात ह' मुँह के फेर के बगल में थूकत, "रउआ से का माँगत बाड़न ?"

"हमरा उनका बात ना ह । मनी कहल रहन कि तोहरा के साढ़े सोरह हजारे दिहें ।"

लाला उठ के कुची फार के जीभ साफ कर के फेंकत कहले, "ई कुछ बात भइल । आवे दीं । सामना-सामनी बात कर लीं । एने-वोने के लिखला में कुछ नइखे । जे बाँचल बा उहे न लिखाई ।

पिछली गली में भोर ही से लइका गोली खेलत रहनस । जब खंडी में जाईं तब गुल-गाल सुनाई पड़े । पिछला दरवाजा तक जाये के जगह ना रहे । बहुत बढ़ल ओल एने-ओने परसल रहे । ओहनी के अगल-बगल में दबा के झुका के राह बनवले रहीं । पिछला दरवाजा खोलला पर सब लइका उठ उठ के भाग गइल रहनस।

"प्रनाम चाचा ।" कहत हमरा बगल से खंडी में ताकत "प्रनाम चाची ।" कहे वाला लइका के भीतर बुला के किवाड़ बंद करत भीतर आइल रहीं । छोट लइका के साथे ऊ खाटी पर बइठ गइल रहे । चौकी पर बइठत चाय ले आवे के कह के हम बात चलवले रहीं ।

"बात ठीक ह । चौकीदार दस आ उनकर बगलगीर बाहर कहले बा । सिपाही अइहन तब ओह लोग से ज्यादा कहिहें । उनका पास खबर गइल बा । ऊ एक दू दिन में अइहें । सिपाही एक महिना से गाँवे नइखन, ई बात दस-बारह दिन से चल रहल बिया, हम जानत बानी । उनका लइका के ना कह सकी बाकिर सिपाही केहू से कुछ नइखन कहले ।"

"हमरा बाद, उनकरे ह ? पछेमारा करह तक ?"

"ना । उनकरा बाद हमार ह । चाचा ! हमरा नइखे लेवे के । ओजिा हमार ढेर जमीन बा । तू त जानते बाड़ सादी ठीक नू हो गइल बा । ओकरे जोगाड़ में लाग गइल बानी जा ।"

मास्टर साहब के भाई बोलवले तब जाके उनका सामने खाटी पर बइठ रहल रहीं । एने-ओने के बात होत रहे कि मनी आके लउर के ओठपंन बना के खाढ़ हो गइले । उठ के चले खातिर मटकी मारे लगले । जान के अनजान बनल रह गइनी । छोटका लाला से पूछला पर कि का कहले हा ? ऊ कहले रहन कि आवे के कहके ना अइले ? का कहीं ? क दिन रहब ?"

"भोरे जाइब ।"

"काल्ह नू ?"

"ठीक बा । हम सांझ के खबर देब ।"

अबहीं त दसो ना बजत रहे । सांझ में ढेर देर रहे । ई भइंस लेके जात बाड़न। कुआर के घाम दसे बजे देह में छेद करत बा । मास्टर के भाई हमरो भाई हवन । उनका के टार के हटल ठीक ना होई । का जाने काहे खातिर बोलवले हा ।"

"बाप के नाँव राम त बेटा के नांव रावन काहे ?" मनी के कउंचा के हटावे खातिर कहनी ।

"घर के लोग बेटा के जामते बड़ी भारी मुकदमा जीतला के खुसखबरी न सुनले रहे ।" मास्टर के भाइयो दही पर चीनी चला देले ।

मनी आपन बचाव पोख्ता करे खातिर दनादन सवालन के गोला दाग देलन बाकिर लोग हंस देल, भइंस-पाड़ी एने आने बहके लगलीस तब ऊ झपटल बढ़ गइले। ओह समय सोचले रहीं कि छोटका लालाजी से समझ-बुझ के त मनी घरे जाइब बाकिर साँझ कवनो खबर ना मिलल ।

दस बजे के बदला चुकावे खातिर मनी घरे गइनी तब मालूम भइल कि केहू आइल रहे । उहो ओकरे साथे हीतई में चल गइल बाड़न ।

www.bhojpurisahityangan.com

नौकरी पर चल गइल रहीं । दसहरा के चलते जाल्दिए गाँव पर चल आइल रहीं । सांझ खा आपु से पूछनी, "मास्टर के जमीन के का भइल ?"

"कवन माहटर ?"

"सिवाला वाली । सिपाही आइल रहन ?"

"का जाने जी । का भइल । सिपाही आइल रहितन तब जरूर कतो ना कतो ऊ लउकीतन । ऊ घरघुसना ना ह । जमीन के त ना कह सकीं ।" फिर ना जाने का सोच के बोले लगलन, "लोग त कहत बा कि सिपाही के पास रुपया नइखे । जब से सिवाला में जमीन लेलन बराबर बर-बिमार लागले रहत बा ।"

"मनी बाड़न ?"

"उनकर त ना आवते देर लागे ना जाते बाकिर एह घड़ी बाड़न । काल्ह लउकल रहन । एगो केहू हीतो रहे ।"

मनी बाड़न जान के खुसी भइल । मनपांखी बात करे खातिर फड़फड़ाये लागल-। "गाँवहूँ रहला पर थीर होके घरे रहे वाला ऊ ना हवन । जाईं, बोला दीं का ?"

"ना हो । तू का जइब । गरज होई त ऊ खुदे अइहें ।"

दोसरा दिने गली में जात उनका लइका से पूछनी बाकिर हमरा दहिने बइठल भइया जबाब देले-"अबगे घरे गइले हा ।"

"तनी भेज दीह ।" गली में दूर जात उनका लइका के सुनाए भर आवाज में कहनी ।

ओह दिन मनी ना आइल आ काल्ह आरा चल गइल रहीं ।

आरा-सासाराम सड़क उफरा पड़ल कुकुर के पीठ हो गइल बिया । चेहरा पर के बड़की माता के दाग अस गड़हे-गड़हा हो गइल बा । लाख बचवलो पर पहिला रह रहके गड़हा में गिर-गिर जाला । ठीक से पिटला अस गतर-गतर दखात रहे।

"देह में तेल लगवावे के मन करत बा । जात बानी कवनो के बोला के ले आवे ।"

"जात बानी त जाईं बाकिर के मिली ? सबके सब होत भोर मिल में चल जाले स ।" मेहरारू के ओहरवला के वादो गमछा उठाके कांधा पर धरत चल देनी। तरकारी के टोकरी देखत बढ़नी । चलल जात रहीं आ सोचत जात रहीं कि सब कुछ त घरहीं बा खाली आलू ले लिआई ।

मनी के दुआरी पर आवाज देनी आ भीतर घुस गइनी ।

मनी के फुफेरा भाई जे कतो मास्टर बाड़न सामने के खाटी पर से प्रनाम करत हमरा तरफ बढ़ले । बगल में से मनी के प्रनाम के आवाज चहकत आइल बाकिर खाटी पर बइठल आदमी चिहाइल ताकत रहल । तस्तरी में से मिसरी उठा के पहिले त ना बाकिर थोड़े देर बात मुँह में डाल के पानी पिये लागल ।

चौकी पर बइठ रहनी तब मास्टरों आके साथ ही बइठ रहले । सर-समाचार भइल । ऊ अदमियो आके सामने बिछवना लगावल खाटी पर बइठ रहल । ऊ मनी के लइका के ससुर हवन; बाद में याद पड़ गइल रहे ।

"समधी के दाँत टूटल कि बाँचल ?"

"अब का बाछा बाड़े कि दाँत बिना हरज होई ।" मनी आके समधी साथे बइठत कहले ।

'एक आदमी समधियाना गइल रहे । छ दिन खुब मान भइल । सातवां दिन समधीन सातु-नून पीढ़ा पर बइठल समधी के सामने में परोस चलली तब समधी बोलले, समधी के सातु । समधीन झम से घुमली आ दूनो हाथ के अंगुरियन के झमकावत-देखावत पूछली, समधी आ सात दिन । हन कवनो नया बानी; तवनो पर महिना भीतरे जुमले रहिला । हम ठीक याद कइले रहीं ऊ मनी के समधिए रहन ।

एने-ओने के ढेर बात भइल ।

www.bhojpurisahityangan.com

मनी मुस्कात पूछले, "रउआ त चल गइनी । हं ना कुछ ना कहनी । लोग कहत बा कि हम रोज पाँच हजार बढ़ा रहल बानी ।

हम त हीत-नाता के सामने बात चलावत ना चाहत रहीं आ बेचलवे बात के रोके में अपना के लाचार बुझ के कहनी, "उल्टे चोर कोतवाल के डांटे । के का कहत बा हम ना जानी बाकिर ऊ लोग पेंड़ बेचत रहे तब हम जमीन सहित लेवे खातिर तैयार रहीं आ ऊ लोग कीस हजार मंगले तब हम ना लेबे सकल रहीं । फिर उहे बात बुझात बा ।"

"बाधार जात रहीं तब एक दिन मास्टर के भाई चौकीदार के घर के पास मिल गइल रहन । पूछनी, रोज पाँच हजार, दस हिदन भइल तब पचास हजार, तीस-पैतीस हजार माँगते रहन, बेचवा काहे नइखीं देत ? अब का लाख लिहें ? रउआ भाइयो से भेंट भइल रहे ।"

"ऊ का कहल रहन ?"

"इहे कि बाबा के निसानी ह । दियवा द ?" दिआव त देब बाकिर ली के? राह पर नइखे आ सिवाला के पास बा । घर बनावे वाला ली ना आ खेत खातिर केहू पंद्रह हजारे ना दी, ई जानत बाड़ कि ना ? उनका कागजो के कमी हम जान गइल बानी । अउरो लोग जानत बा । दोसर केहू के छोड़ीं हम तैयार बानी; बात कर । लोभ छोड़स आ बात करस । दस, बाहर के बात ठीक ह बाकिर पंद्रह के गँहकी बा, ई केहू नइखे कहत ।"

"कह के केहू कहे कि नइखीं कहले तब का कहीं ? ऊ अकेला में ना कहले रहन । हम रहीं, मास्टर रहन आ उनकर लइको रहन । उनका छोड़ीं । सिपाही त ना बाकिर उनका बेआ माथे आइल आदमी कहले रहे, दस हजार त आजे ले लीं आ बाकी दसहरा बाद ।"

"लिखवा द । ललो जी आपन खेत लिखले रहन । दमाद के बिदाई कवनो दोसर काज-परोजन लागल बाकिर तास रहल दोसर इंतजाम कर के । ऊ रुपया समय पर ना मिलल । ढेर दिन दउड़ल रहन से सूद में ।"

मनी के फुफेरा भाई के लइकी सादी करे लायक हो गइल बिया । तीनो जाना लइका खातिर जइहें । लाजे-लिहाजे लोग उठत ना रहे । हम बुझ गइनी आ अगुवाई के गुरु-मंत्र बतावल चल आइल रहीं । गाँव में ना गइनी ।

मास्टर साहब धरती अस पसरल ऊपर ताकत बाड़न । मुंह बनवले पड़ल बाड़न कि कवनो मधुर फल आके गिरे आ मुँह बन कर के निगल जास । हम आसमान अस चप्पा-चप्पा पर नजर रखले बानी । सब के तोपियो के उघार बानी । बेरंग बानी । केहू से छुआ-छूत नइखीं रखले ।

हो सकेला कि मनी मास्टर साहब के बात कइले होखस । अपना के आसमान से धरती तक झुकावे आ धरती के आसमान तक उठावे में कमजोर पाके हमरा पास ना आइल होखस ।

हमारा गाँव अगर पेड़ ह त मनी ओकर मोट-झोंट छायेदार एगो डाढ़ि जवन जाने-अनजाने में आदमी, पसु पछिए ना छोट-बड़ अनेकानेक जीव-जंतुवन के बहत कुछ देत रहले बाकिर ओकरा से लेले ना के बराबर । ई डाढ़ि जहिया ना रही तहिया जवन बिरानी, सून्यता पैदा होई ओकरा के भरे वाला दूर-दूर तक देखलो पर नइजर नइखे आवत । हवा-पानी, सर्दी-गर्मी से खोढ़रा बनी आ बढ़त जाई ।

केहू खुस रहे चाहे नाराज मनी पर ओकर असर ना पड़े । केहू आइल तब बइठले । केहू बोलावल तब गइले । केहू बोलल तब बोलले । एक धार पर रहे वाला ना हवन । जेने ढरका द ढरक जइहे । एकदम नेपानी के । ना मनावे जाले ना बदला लेले । कहला पर कहे लगिहें, 'जब जइसन, तब तइसन, ना करे ऊ मर्द कइसन?'

www.bhojpurisahityangan.com

कहत ना रहीं

जाड़ा के घाम फूल अस लागत रहे । हम खेत के आरी पर बइठल पाकल खेंसारी कटवात रहीं ।

मोहन के हाथ में रस्सी आ हंसुवा लेले अपना तरफ आवत देखनी । उनका दुवार पर जाइला । सुबह-सांझ कइएक बार बातचीत ह । हमरा दुवार पर चाहे खेत पर हमरा पास आवे के उनकर पहिला दिन रहे । सोचनी कि हमरा से कुछ काम होई तबे ऊ आ रहल बाड़न ।

मोहन आके हमरा सटले आर पर बइठल रहले । कटनिहारन में से एगो से माँग के खइनी बनावे लगले । एने-ओने के बात होखे लागल बाकिर उनका नजर से नजर टकराय तब बुझाय कि ऊ कवनो दोसर बात कहल चाहत बाड़न आ कटनिहारन के चलते कह नइखन पावत तब हम उनका से अउर सट के पूछनी, "केने चलल हा ? कवनो काम बा का ?"

"हूँ हाकिम ! काम त बा । काल्ह पाही पर से अइनी हां । आज रउरा पास जइतीं-दू मुट्ठी हरियरी घरवा धर के कि रउरा पर नजर पड़ गइल हा ।"

"तब ?"

"लइकी के शादी ठीक कइले बानी । हमरा चार हजार रुपया चाहीं, घटत बा । खेत, सूद, मनी जइसे मिले लेब ।" जल्दी में खइनी पीट-ओसा के दूनो कटनिहारन के देके, फांक के, हाथ झारत आके बइठत हमरे सुनाये भर आवाज में कहले ।

हमरा से सुनावे के मतलब रहे, हमरा से रूपया के माँग कइल, ई हम बुझ गइनी । अपना लेन-देन, बैंक-बैलेंस, जमा-खर्च के सड़क पर ध्यान के घोड़ा दउड़ावत कहनी, 'हमरा पास रुपया नइखे बाकिर बेटी के बिआह ह तब हम कसहूं दू हजार के जोगाड़ कर देब । कब तक चाहीं ?"

"तुरते । तीलक के पहिलहीं देवे के बा । देवे के त दस हजार बा बाकिर छः हजार के इंतजाम हो गइल बा ।" ओठ तर खइनी सरिआवत फिर कहले, "अउर कुछ ना हो सके ? हम लौटावे में देर ना करब । पाही प के खेत जेठ में मनी लगा के, पइसा ले आके दे देब ।"

"रहित तब कुछ कहे पड़ित । हमरा पास रहल चाहे तोहरा पास । तू त जानत बाड़ कि हम भीखवार के भीख ना दीं, मंदिर बनावे के चंदा ना दीं । बाकिर अइसन काम में पाछा ना रहीं ।"

"आइब ? मिल जाई ?"

"ना ! आज ना मिली । होली में चार दिन के देर बा । बिहानो के ना । ओकरा बाद जब कहब, चल के बैंक से निकाल के दे देब । जानत बाड़ नू कि हम घर में रूपया ना राखीं ।"

"का लेब?"

"जानत नइख ? हम केहू से सूद-बाटा लिहिला कि तोहरा से लेब ?

www.bhojpurisahityangan.com

तोहार नेह कवो कवनो काम आ जाई तब सूद से ढ़ेर मेल जाई ।''

''होली के पहिले कुछुवो ना हो सके ?''

''काहे खातिर ?''

''होली के बाजार नइखीं कइले । हमनी के त शादी के नाँव पर पुराने से काम चला लेब जा बाकिर लइकन खातिर कुछ त करहीं के पड़ी ।''

''एह में कतना लागी ? अइह; सौ रुपया देब । अउर त एह घड़ी ना हो सकी।''

''ठीक बा, आइब । आज कतो जाहूँ के बा ?'' कहत चल देले ।

''आज घर ही रहब । छुट्टी में कतहूँ जाके का होई । सभे घरे चल गइल होई ।''

हम काटल खेंसारी लिअवा के घरे आइल रहीं आ नेहा-खाके उठले रहीं कि मोहन के आवाज दुवार पर से चलके डेउड़ी फानत हमरा तक आइल रहे आ हम सौ रुपया के नोट ले जाके उनका के धरा देले रहीं । ऊ नोट के चपोत के जेब में राखत पूछले, ''हाकिम दू हजार से ज्यादा ना हो सके ? रउरा जे कहीं हम तइयार बानी। इज्जत के सवाल बा ।''

उनकर बात हमरा मन के शांत जल पर क्रोध के हिलोर उठवलस । ''कातर के चीत रहे न चेतु, बार-बार कहे आपन हेतु ।'' खीस हमरा आ हिलोर के बीच खाद हो गइल आ समझावे के गरज से कहनी, ''इज्जत के बात देख के ।। हम दू हजार के जोगाड़ बइठा रहल बानी । ना त आपन बात हम जोहरा से का कहीं । एह घड़ी बड़ी सकेत में बानी ।''

''बादो में अउर कुछ कर सकत बानीं ?''

हम मने मन सोचनी, शायद हो जाय आ सुना के कहनी, ''एक-दू महीना बाद, शादी के समय हो सकेला ।''

''ओहम घड़ी दू हजार हो सकेला ? देखीं, हम देर ना करब लौटावे में ।''

''हो सकेला ।''

'त ई दू हजार के जोगाड़ होली बाद हो जाई नू ?

''जरूर हो जाई । अतना खातिर तू निफिकिर रह ।''

''ऊ चल गइले तब लौट के आके अपना औरत से कहनी ''रूपया मोहन के देनी हां । होली में लइकन खातिर कपड़ा-लत्ता करे के हइन । लइकी के शादी ठीक कइले बाड़न ।''

''अउरी रूपया कहले बानी का ? देखीं । आपन कतना जरूरी काम पइसा बिना रह जा रहल बा । होली के समय । महिनो मिलला बीस दिन हो गइल । मिलबो करी त होली बितला पर ।''

''लइकी के शादी ह । दू हजार कह देले बानी । ऊ कहत रहन कि जल्दिए लौटा देब ।''

''लेत खा के ना जल्दी लौटावे के कहे ? रउरा त अपने अस सब केहू के समझिला । पता कर लेब कि ऊ कइसन हवन ।''

पता के भूत उछल के ठीक बंदर अस माथ पर बइठ रहल आ हमरा

www.bhojpurisahityangan.com

के सुना सुना के कहे लागल, ''मोहन के राएउ से घराहौ हो गइल रहे । औहो समय के बात ह। । ई उनकरा से रूपया ले के ना देले रहन आ पंचायती कइला पर कहले रहन कि दे देले बानीं । दूनो आदमी के बीच के रस्सी टूट गइल रहे । मोहन त झटका के जानत रहन । उहे रस्सी के कटले रहन बाकिर राएउ क्रेंद्रापसारी बल के कारण दूर फेंका गइल रहन । हाथ के सहारा ले के बइठत ऊ मोहन के मुँह ताकत रह गइल रहन ।

मोहन उठवलहूँ ना रहन आ उहाँ से चल गइल रहन तब राएउ के उहाँ रहके का करे के रहे कि रहिते ? गते उठल रहन आ धूल झारत अपना घर के राह धइले रहन ।''

फिर समझावत कहले रहे ''केहू से पूछ के का करब ? केहू देवे के ना कही । अब गाँव में केहू केहू पर विश्वास ना करे । तोहरा जे ठीक बुझाय कर ।''

दू दिन के बाद होली रहे । मुंशी जी से भेंट भइल रहे । हम कहले रहीं, लीक लीक कायर चले, लीके लीक कपूत । लीक छाड़ तीनो चले, शायर, सिंह, सपूत । हम उनकर मदद करब बाकिर उनका कागज बना देवे के पड़ी ।''

''का लिखवाइब ?''

''रउवा जे कहब । आज त होली मनावल जात बा । काल्ह उनका से भेंट करब । कहिहें तब उनका के लिआ के आइब ।''

मुंशी जी लिआ के ना आइल रहन । बाद में मुंशी जी से भेंट भइल रहे बाकिर हम कुछ पूछले ना रहीं ।

मोहन के चचेरा भाई-भतीजा लोग से भेंट भइला पर एह बात के चर्चा कइले रहीं बाकिर मोहन करीब एक माह तक हमरा पास ना आइल रहन ।

जब अइले तब उनका साथ मुंशी जी के दुवार पर गइनी । उहां बुढ़वा मुंशी जी रहीं । कागज मंगवा के देखके उहां के उचित सलाह देले रहीं । उहाँ के कहले रहीं, ''अपने बिक्री करिह आ भाई लोग से गवाही करा दिह ।'' ना जाने का सोच के उनका से पूछनी ''कतना लेत बाड़ ?''

''दू-ढाई हजार ।''

''बादो में नू ?'' हम पाछहूं वाला सुनावल चहनी ।

''ना । अतने से काम हो जाई । अउर इंतजाम हो गइल बा ।''

''तब जा । पाही पर से अपना भाई के लिआ आव । हम दू-चार दिन में तब काम करवा देब ।''

बुढ़वा मुंशी जी के बात सुन-समझ के चल आइल रहीं । मोहन के गाँव पर देखत रहीं । ऊ पाही पर ना गइल रहन । इंतजाम हो गइल होई, सोच के केहू से कुछ कहले-सुनले ना रहीं ।

ओह बात के भुलाइयो गइल रहीं । चढ़ते जेठ रहे बाकिर लुक के मारल लोग मरे लागल रहे । हम दालानी में ओठँघल रहीं । गर्मी आ मांछी से बचे खातिर केवाड़ सटा देते रही । बाहर केहू के अइला के आहट भइल ।

www.bhojpurisahityangan.com

हम अबही आहट के थाहते रहीं कि मुंशी जी घर तरफ आपन सवाल उछाल देलन ।

जाके किवाड़ खोल के, "आईं । आव हो" कहके आके फिर ओठंघ रहनी । बाहर बड़ी गर्मी बुझात रहे ।

मुंशी जी बइठत पूछले, "मोहन से रउरा बात भइल रहे नू ?"

"रउरा से ना भइल रहे ?"

"ओह घड़ी त रउवा कहलहीं रहीं । हं । उहे बात ह । तइयार बानी नू ?"

"केहू कहत रहे कि तीलक हो गइल ?"

"तीलक के बादो कुछ होला कि ना ?"

"होला काहे ना । बहुत कुछ होला । सब अपना कइला पर बा ।"

"कहिया चलल जाई ? कतना लिखवाइब ? इनका सात हजार चाही ।"

"सात हजार ? अतना त हमरा से ना होई । कसहूँ ना होई ।"

"रउवा कहले रहीं नू ?"

हम सब बात आखिर से अंत तक सुना के पूछनी, "का हो ! हमरा तोहरा सात हजार के कहिया बात भइल रहे ?"

"ना, भइल त ना रहे बाकिर जहाँ से 2-3 हजार के जोगाड़ होखे के रहे, ना भइल ।"

"हम त भाई दू-ढाई हजार से ज्यादा के इंतजाम ना कर सकीं ।"

मुंशी जी दूनो आदमी के बीच में बइठल बिड़ी पियत रहन । दूनो आदमी के कइक बार देखले । "तब रउवा से ना नू होई ?" हमरा से पूछले आ हमरा लाचारी के भांप के "चल हो । दोसरा से पूछल जाय" कहत मुंशी जी उठ के चल देले रहन ।

दू-चार दिन गाँव से बाहर रहके गाँव अइनी आ सांझ खा घुमे गइनी। बदरिआह दिन रहे । बाहर तरफ चल गइनी । कटला के बाद खाली पड़ल खेत से होके सरपट दउड़त हवा देह में सिहरन पैदा करके गुनगुनाए के कहत रहे। कुछ देर के बाद रतन से भेंट भइल तब हम पूछनी, "का हाल-चाल बा ? ठीक बानी नू ?"

"कतही गइल का रहीं ?"

"एगो काम आ गइल रहे । तीन चारे दिन त भइल ।"

"उहे कहीं कि सुबहो-सांझ लउकत नइखीं । काल्ह इनर कहत रहन, "हाकिम त बड़ी गलत काम कइनी हां । मोहन के बेटी के शादी ठीक भइल बा । ओकरा के दू-तीन महिना से कहले रहीं । अब कहत बानी कि हम रूपया ना देब । बेचारा खेतो देत रहे ।"

हमरा के दगाबाज बतावल गइल रहे । सुन के हमरा भीतर खलबली मच गइल । अपना भीतर के भाव से लड़त उनका से सब बात कहनी जे आज तक भइल रहे ।

www.bhojpurisahityangan.com

ऊ आगे कहले "हां महाराज । हमरा त विश्वासे ना भइल रहे । हम दू हजार वाली बात त जानते रही । रउवा त हमरा से कुछ छिपइबे ना करीं । इनर से कहललूँ रहीं ।"

ओह दिन आपन दुःख-सुख कहत सुनत घरे चल आइल रहीं बाकिर दोसरा दिन हम इनर से भेंट करके पूछनी "अतना दिन से साथ संगत बा । तुहूँ हमरा के नइख जानत ?"

"काहे ? का भइल हां" पूछले तब हम रतन से सुनल बात सुना देनी। ऊ कहे लगले, "हम ना जानत रहीं । जवन मोहन कहले रहन तवने हम कहले रहीं ।"

"रतन ना जानत रहितन तब ऊहो हमरा के दगाबाज समझ लेतन कि ना ?"

ऊ हत्यार अस मुंडी झुका लेलन । हम सोचे लगनी, "जे गाँव खातिर कुछ सोच सकत रहे, कुछ कर सकत रहे, जेकरा रहे से इहां के वातावरण बदल सकत रहे, ऊ लोग नौकरी-व्यापार के मोहमाया में पड़के गाँव छोड़-छोड़ के चल गइल। अब गाँव में रह गइल बा, अनपढ़, जाहिल, बूढ़, बिमार, चोर-डाकू, घरपइस, अर्द्धशिक्षित, राजनीति के छोटभईया, नीम हकीम, ओझा-पुरोहित, शिक्षित बेरोजगार, गरीबी के पांकी में बजबजात कीड़ा अस लाचार लोग आ ऊहे लोग गाँव के अपना अपना ढंग से चला रहल बा । हमरा अस लोग से अलग अलग सब लोग मिलके गाँव के सुधारे के बात करेला, दोसरा के शिकायत करके वाह-वाही लेल चाहेला बाकिर जरूरत पड़ला पर एकजूट होखे हमरा सांस-सांस के भारी कर देला । ऊ लोग सरेराह गंदा कर दी तबो केहू ना जाने बाकिर हमरा छींकलो पर तुफान उठ जाला ।

पुरान आ पाक खून के नाता के पुरान कपड़ा अस गठरी में बांह के कवनो कोना में फेंक के लोग एक दोसरा के ऑख में आशंका आ घृणा के देख रहल बा । बहुत दिन से चलल आ रहल पारस्परिक विश्वास के बल पर बनल समाज के छिन्न-भिन्न कर रहल बा ।

हमरा बुझात बा,..... ऊ लोग ना चाहे कि गाँव में केहू कवनो अच्छा काम करो । अच्छा काम करे के राय मंगला पर लोग मना करी, करे लगला पर ओकरा जड़ में माठा देत रही आ बिगड़ गइला पर कहीं कि हम कहत ना रहीं.....।

भोजपुरी कथा कहानी, पटना

www.bhojpurisahityangan.com

चुगली

पीछला तीन-चार दिन से लिखे में लागल रहीं । मन त कइएक बार कइले रहे कि आफिस जाके डाक देख आईं बाकिर पाँच तारीख पर टालत रह गइल रहीं । पाँच के जिला भर के पदाधिकारियन के बैठक होले । ओह दिन उपरो के पदाधिकारी लोग जुट जाला । एक साथ सब केहू से मुलाकात हो जाले । पटना में बैठक सात के रहे, पाँच के डाक देखब, छः के तइयारी करके सात के पटना जाइब, इहे तय कइले रहीं ।

आफिस हमार ना ह । हमरा विभागो के ना ह । एह से रोज रोज आफिस ना जाके कबो कबो जाके अपना नाँव के डाक, जे एगो टेबुल के दराज में रखल रहेले; ले आइला ।

पाँच बरिस भइल इहाँ काम करत । एह बीच साहबो लोग बदल चुकल बा। पहिला साहब हमरा से भरल मिटिंग में कहले रहन, "तू आरा-सासाराम दू जिलन के काम देखिह । तोहार चिट्ठी कहाँ भेजल जाई लिखवा द ।" हम स्थानीय कृषि पदाधिकारी के पता लिखवा देले रहीं । दोसरो साहब के समय कवनो दिक्कत ना पनपल; ना फरल, ना फुलाइल । बाकिर अब ! उहे सुनावे जा रहल बानी ।

चार तारीख के सांझ में हमार सार दरवाजा तक ठीक ठाक अइले आ भीतर गोड़ डालते रोवाइन मुँह बना लेले । मन कारण जाने खातिर बेचैन हो गइल बाकिर मन के बात मने में बंद घर में मंडरात फरगुदी अस उड़त रहल आ हम ताबड़तोड़ उनका अइला के खबर भीतरे घर में बइठल अपना औरत तक पहुँचे भर आवाज में फेंक के, लइकिन के, नौकर के नास्ता-पानी ले आवे के कहके, उनका के कुर्सी पर बइठे के के इशारा करत आपन चश्मा उतार के सामने धर देनी ।

ऊ कुर्सी पर ना बइठ के बगल के पलंग पर बइठत बिना कुछ पूछले अपनही कहे लगले, "सुधा मैट्रिक के परीक्षा देले बिया । इहंवो ओकर कापी आइल बाड़िस । कहत रहे कि उहाँ फुफा केके नइखे जानत ? तू खाली जाके जना द ।"

सुधा उनकर बड़ बेटी ह । उहाँ गइला पर कबो ओकरा के पढ़त-लिखत नइखीं देखले । ऊ का लिखले होई ? हम खूब जानत बानी बाकिर का कहीं? हम तय ना कर पावत रहीं ।

"काल्हे से कापी देखल जाई । इहाँ त चलबे करब, काल्हे तनी पट्नो चल चलतीं तब उहों के काम हो जाइत । उहां कापी बाड़िस । एक आध लोग से कहले बानी बाकिर ओह लोग में दम नइखे ।"

ई जानत बाड़न कि हमरा लिखे-छपे के चलते, बहुत लोग हमरा के जानत-पहचानत बा । इहो जानत रहन कि लोग हमरा मुट्ठी में नइखे । दोसरो लोग से जुगाड़ बइठावत आइल रहन । हम इहो सोचत रहीं कि कापी देखे वाला लोग धनतांत्रिक व्यवस्था में समझी कि हम कुछ ले के काम करावे आइल बानी । ऊ लोग हमरा रिश्तो के विश्वास ना करी । काहे से कि अइसन ढ़ेर लोग बा जे झूठ बोल के काम करवा रहल बा । "ना", कहला पर ई बुरो मान जइहें । कइक दिन से तय कइल बात इयाद रहे बाकिर सोचनी "पाँच

www.bhojpurisahityangan.com

के पटना जाके लौटब ना, छः के दोसर कवनो काम करब आ सात के बैठक में भाग लेब । कवनो रिपोर्ट होई तब पटने में छः या सात के बना के दे देब चाहे बाद में भेज देल जाई । मिटिंग में जा रहल बानी, देश के सिवान पर लड़े नइखीं नू जात कि उहां चलत गोली के जवाब बाद में कइसे दिआई ।''

नास्ता-पानी आ गइल रहे । ''नास्ता कर । हम काल्ह चलब ।''

दोसरा दिन आफिस गइला पर जगार कहले, ''पन्द्रह के रात में राउर साहब आइल रहन । भोरे ऊ कुदरा चल गइल रहन । हमरा साहब साथे रात के खाना खइले रहन ।''

''खोजतो रहन ?''

''ना ।''

डाक में आइल दुगो पत्र मिलल । एगो में निरीक्षण-पंजी के साथ बैठक में आवे के आदेश रहे । दोसरको में पूछल रहे कि 15 के कहंवा रह? साफ कर ना त महिना ना मिली । हम पढ़ के दंग रह गइलीं । हम बराबर मुख्यालय में रहीं । कतहूं ना गइल रहीं । साप्ताहिक रिर्पोट समय पर भेज चुकल रहीं । ओहू में साफ लिखल रहे । मन में आइल डेरा लौट के निरीक्षण-पंजी ले आवे के बाकिर कापी देखे वाला लोग के केन्द्र के भीतर घुस गइला पर, दिन भर भेंट ना होई, सोच के केन्द्र के राह धइनी ।

बिहार भर में शिक्षक लोग हड़ताल पर रहन आ कापी ना देखत रहे । एक-दू लोग मिलल ऊ लोग कहल, ''हमनी के कापी देखे नइखीं जा आइल । इहवे रहब जा तॉकि संघ के खबर मिलत रहे, जिला शिक्षा पदाधिकारी से कामो बा ।''

जिला शिक्षा पदाधिकारी के कार्यालय उहवे गेटे पर रहे । एगो परिचित शिक्षक मिलले तब उनका के अपना सरबेटी के नंबर लिखवा के, ''ठीक बा, देखब, रउरा निफिकिर जाईं । हम काम करवा देब'' सुन के चल देनी ।

किरिन फुटते से लू चले लागल रहे । एगारह बजत होई । आग बरिसत रहे। देह भीतर तक झुलसत रहे । छहिरो में घाम लागत रहे आ कंठ सुख-सुख जात रहे। पानी पीअत-पीअत हाल-बेहाल भइल रहे । अगल-बगल के दुकानदार पानी देल ना चाहत रहनस । उठ के घाम में चलहूं के मन ना करत रहे । ऊ जाके ककड़ी ले अइले ।

''अब इहां रहे के कवनो मतलब नइखे । चल, पटना चलल जाव ।'' कहत एगो रिक्साा पर बइठ रहनी तब उहो केन्द्र के गेट तरफ ताकत आके बइठ रहले।

रिक्सा पर बइठल रहीं डेरा होत बस स्टेंड पर जाये खातिर । रिक्सा थोड़े दूर गइल रहे कि लुक के झोंका आइल आ पोर-पोर के झुलसा देलस । बुझाइल, उघारे होखीं । देखला पर फूलपैंट आ फलाइंग सर्ट अपना जगह पर रहे ।

सामने, सड़क के मोड़ पर बक्सर-पटना बस के खाढ़ देख के, सीट खाली देख-सुन के डेरा जाये के विचार छोड़ देनी । रिक्सा छोड़ के बस में बइठ रहनी जा।

बस में ठंढक रहे-के बात ना कह सकीं । जब कि धरती से आकाश तक बइशाखे में जेठ झूठ भइल रहे, धूर भरल आंही के साथ हजार फन

www.bhojpurisahityangan.com

कढ़ले गंहुअन अस लुक फुफुकारत धावत रहे, टिन-शोशा के बनल बस में ठंढ़क खोजलो मूरखता रहे ।

गर्मी के मारे जाये के मन ना करत रहे । दू दिन बाद मिटिंग बिया । गर्मी कवनो ट्यूब में भरल हवा ना ह कि सूई चुभाव आ निकल जाय "फु र र" करत। दू दिन के बादो इहे हाल रही । मिटिंग में गइल जरूरी बा, भले गर्मी ना आग बरिसे । भाई-बंधु, हीत-नाता लोग के गलत काम में साथ ना दे के हम ढेर भुगत चुकल बानी । अपना आत्म-सम्मान के रक्षा करे के चलते अपना ऊपर आइल आक्षेपन के सुनत-सहत अब शक्तिहीन हो गइल बानी ।

अपना सार के देखनी । ऊ सिट पर माथा टिका के ऑख मुंदले रहन । उनका चेहरा पर परम संतोष ना रहे बाकिर कवनो हड़बड़ाहट, परेशानी या चिंतो के चिंह ना रहे । "ना जाइब । बड़ी गर्मी बिया ।" हम ना कह सकनी । अपना तरफ हाथ बढ़वले कंडक्टर के तरफ बीस रूपया के नोट बढ़ावत, दूगो अंगुरी देखावत, "पटना" भी केहुंग कह सकनी ।

नया साहब के अइला दू महिना हो चलल रहे । बात-बात पर हंसे, हंसावे वाला साहब के देख, सुन के सब साथी लोग मस्त हो गइल रहे । पहिला साहब ना खाइब ना खाये देब किस्म के बेहद शाकाहारी रहन, एह से हमरा मांसाहारी साथियन के उनका से नफरत हो गइल रहे । पहिले मिटिंग में साहब सब लोग के दुःख-तकलीफ पूछले आ दूर करे के वादा कइले रहन । हम कुछ ना कहले रहीं । सब केहू के दूर हो जाई तब हमार होत कतना देर लगी। दोसरको मिटिंग में साहब दू-चार लोग के लजवा, धमका के वेतन देले रहन। हर बात में इहे कहत रहन, "इहां बहुत गड़वड़ी बा । हमरा के ठीक करे खातिर भेजल गइल बा ।" हमरा साथियने के ना एजेंसियों के सम्मान के फूंक-फूंक के राख अस उड़ावत रहन । हमरा बहुत तकलीफ होत रहे सुन सुन के बाकिर दोसरा साथिन लोग के चेहरा पर सुनसान सपाट उदासी रहे ।

आफिस में गइनी । चारो तरफ खामोशी रहे । लोग बइठल, चलत, चुपचाप आपन काम करत रहन । खामोशी श्मशान के चुप्पी अस लागल । तुफान के पहिले वाली शांति अस बुझाइल । मुख्यालय में पदस्थापित अपना साथी के सामने जाके दुवा-सलाम के बाद बइठ रहनी ।

ऊ वेतन-पंजी के जॉच कइल छोड़ के पूछले, "15 के कहंवा रह ? गइला पर भेंट ना भइल रहे ।"

"कतहूं ना गइल रहीं ।"

"चिट्ठी गइल रहे । आदमियो भेजाइल रहे -खबर करे खातिर । ओकरो से भेंट नानू भइल रहे ?"

"के गइल रहे ? कब आ कहंवा ? हम त डेरे पर रहीं । उहां आफिसों में केहू के अइला के केहूना कहत रहे । साहब काहे खातिर खोजत रहन ।"

"असहीं । कवनो खास काम ना रहे । गइला गुने ।"

एही बीच हम वेतनपंजी देख लेले रहीं । हमार वेतन रोक देल रहे । हमरा चौवीस वर्ष के नौकरी में ई पहिला जलजला रहे । भीतर तक हिल गइनी । हम आजाद भारत के नागरिक हईं । इहां कवनो कचहरी केहू के बिना सुनले ओकरा विरोध फैसला ना दे सके । हमार आत्मसम्मान जागल ।

www.bhojpurisahityangan.com

मन में आइल कि जाके साहब से पूछीं कि काहे अइसन कइल हा ? बाकेर बिना गुनाह के डंटाइल भारतीय नारी अस चुप लगा गइनी ।

बरामदा में आके कुर्सी पर बइठ रहनी । समझ में ना आवत रहे कि काहे ई सब भइल ? सफाई देवे के मन ना करत रहे । साथी लोग एक एक करके साहब के कमरा में गइल आ चेक लेके निकल गइल तब चपरासी आके कहलस,

"साहब ।"

ओकरा के अपना तरफ आवत देखके ओकरे पर हमार नजर टिकल रहे । जब ऊ बोल के साहब के कमरा के तरफ इसारा कहलस तब गते से उठनी आ साहब के कमरा में चल गइनी ।

दुआ-सलाम के बाद साहब के इशारा पाके उनका सामने के कुर्सी पर बइठ रहनी ।

"का जी ? 15-16 के कहाँ रह ?" कहत साहब अपना बाँया केहुनी तरफ देखले । हमार साप्ताहिक प्रतिवेदन उहां दबल रहनस ।

"आरही रहीं ।"

"तब भेंट काहे ना भइल ?"

"हम रोज वोह आफिस में ना जाईं । हम लेखक हईं । हम साहित्य के हर विधा में लिखिला । कबो-कबो लिखे लागिला तब अपना घर के बहरी सड़को पर दू-दू, तीन-तीन दिन तक ना जाईं ।" अपना साहित्यिक रूप के बखान विशेष असर पैदा करे खातिर कर गइनी ।

"जान के खुशी भइल बाकिर रोज काहे ना जाईं ? हम रोज आइला कि ना?"

"ई राउर आफिस ह आ ऊ हमार आफिस ना ह । उहां व्यवस्था कर दीं । हमहूँ बइठब ।" कहे के कह गइनी, उनका के फुलावे खातिर बाकिर उनका बेवकूफी पर हंसी छूटत रह । ... उहां रोज बइठ के का करब ?

"चिटठी मिलल रहे ?"

"ना ।"

"एगो आदमियो भेजाइल रहे । ओकरो से भेंट ना भइल रहे । साह गइल रहे। जाके पूछ ल । हमरा तोहरा से कवनो व्यक्तिगत गरज नइखे । पूछले बानी । लिखके दे दिह ।"

बात बढ़ावे से जवन फायदा होले तवन हम चौबिस बरस के नौकरी में जान-सुन चुकल बानी । हमरा देश में 1950 में, दोसरा जगह भले संविधान लागू हो गइल होखे बाकिर सरकारी आफिसन में कवनो संविधान ना चले । ई हम बढ़िया से जानते रहीं । एही से 'जी' कहके कुर्सी से उठे जात रहीं कि एगो दूसरा आफिस के साहब अइले आ हमरा बगल में बइठ रहले । शिष्टता बस उनका के प्रनाम करके मुँह मोड़े जात रहीं कि साहब कहले, "ई चौधरी जी हवे । घर के बगल में पदस्थापन करा के मौज मार रहल बाड़न ।"

साहब के बेवकूफी के एहसास फिर जागल । हम कवनो बले या पैरवी करा के नइखीं । पहिला साहब सब लोग के मन मोताबिक पदस्थापना कर देल रहन । उनका काम से मतलब रहे, अउर कुछ से ना । खास करके हम त घर पर पदस्थापना ना चाहत रहीं ,लइकन के पढ़ाई के ख्याल से बाकिर ऊ ना

www.bhojpurisahityangan.com

नानल रहन आ हमरो पदस्थापन गृह जिला मे कर देले रहन । अगर गलत ना तब नया साहब के बस के बात बिया । ऊ चाहस तब एक क्षण में बदल देस । फिर दोसरा से सुनवला के का माने ? शायद ऊ बदलल ना, कुछ दोसर चीज चाहत बड़न । बाकिर का ? केकरा से पूछीं ? मन तय ना कर पावत रहे ।

आके साह से पूछनी तब मालूम भइल कि ऊ छः बजे भोरे में गइल रहन । ओह समय केहू आफिस ना आइल रहे । तीन ताला पर एगो बुढी के पत्र दे देले रहन। उप कृषि निदेशक से मिलल रहन बाकिर हमरा के खबर करे के ना कहले रहन ।

हम आपन सफाई लिख के डाक में डाल देनी । हालांकि साहब बिना सफाई पढले हमार वेतन रोक देले रहन, जवन हमरा मन के रूचत ना रहे ।

मिटिंग शुरू भइल तब सब साथिन के जेब में सौ सौ के नोट डिसको डांस करते रहीस आ ओहनी के ताल पर साथी लोग के मन-मोर थिरकत रहे । सब के क्षणिक खुशी मदहोश बना देले रहे ।

साहब बात पिछे कहे लगले "तू आरा ना रह" हम उठ के फिर सब बात साफ कइनी । ऊ हाथ जोड़ के कहले, "भाई !माफ कर । गलती हो गइल ।" गेहुअन फन पीछे ले गइल मतलब कि बार करी । शेर छपकल मतलब कि झपटी। हमरा साहब के देख-सुन के विचित्र लागल । डर हो गइल । हम जानत रहीं कि विपरीत समय में चुप रहे कि चाही बाकिर अपना भावना पर अंकुश ना लगा सकल रहीं । अब त खूबे अफसोस होत रहे ।

सांझ में सचिवालय गइनी । हमरे ना हमरा साहबो के स्थापना के फाइल डिल करे वाला आफिसर हमार संबंधी हवन । दू-तीन घंटा साथ रह गइनी । बात करे के मौका ना मिलत रहे । मिलल तब ऊ खूदे कहे लगले, " राउर साहब आइल रहन । कहत रहन कि हम बाद में जननी कि ऊ राउर संबंधी हवन । बहुत नाराज बुझात रहन । बहस ना करे के चाहीं । "

हम आदि से अंत तक सब बात कह सुनवनी आ पूछनी, "हम कब का कहलीं ? कइलीं ? ऊ खूदे ना जाने काहे ई सब कर रहल बाड़न । "

"ठीक बा । हम कह देब" । उनकरा से सुन के मन में अच्छाई के आश बोके चल अइनी ।

उ आस बालू के भीत अस भहरा गइल जब साहब के दोसरका पत्र मिलल । लिखल रहे कि सफाई संतोषप्रद नइखे । छुट्टी माँगीं तब विचार कइल जाई ।

ठोकर पर ठोकर । हमरा मन के नाग ठनके लागल । आदमी तीन तरह के होला । एक ईमानदार आ साहसी, जे बड़ से बड़ खतरा उठा के अपना मन के बात, जे ठीक बुझेला, डंका के चोट पर कहे में ना हिचकिचाय । दू, ईमानदार आ कायर, जे कवनो तरह के खतरा ना उठा के मन के बात मने में रख के खामोस हो जाला । तीसरा, बेईमान आ कायर, जे कबो कवनो तरह के खतरा ना उठा के, मन के बात मने में दबाके, वोइसनो बात कहे में ना सकुचास, जवना के मन में सुझेला कि उ सरासर बेइमानी आ, अवसरबादिता के बात ह । हम पहिला तरह के आदमी रहीं । बाकिर ईमानदारी आ साहस के फल अतना चखे के मिलल रहे कि दोसरका, तीसरका तरह के बनत अब देर

www.bhojpurisahityangan.com

ना लगे । फुटपाथ के भिखारी, कुली तक के सम्मान के साथ जीयत देखके मन जार-जार होके ना जाने कि कतना बार रोवल बा, ना कह सकीं । "अधम चाकरी" शत प्रतिशत सही बुझाला ।

कवनो राह ना सुझत रहे । बहुत जल्द रिटायर होखे वाला मिसिर जी के सामने आपन समस्या रख के उनका तरफ हम बेचारा बन के ताके लगनी तब ऊ कहले, "छुट्टी ले लेलीं । एक-दू रोज में का लागत बा ? राउर सब छुट्टी त बाकिए होई ?"

"बाकिर ई त अन्याय के सह देल.....?"

"केकरा से कहब ? के न्याय दी ?"

जबरन दरखास ले के हमरा मन के भावना के दबावल जात बा, कुचलल जात बा, हमरा के कौड़ी के गुलाम बनावल जात बा, हमरा बुझात रहे बाकिर घर-परिवार के हँसी-खुशी में आग लगा के सहीद बने खातिर मन तइयार ना आ मिसिर जी के सुझाव स्वीकार कर लेनी ।

हमरा दरखास पर साहब "संचिका में उपस्थित कइल जाय । "लिख देले ।

अगिला महीना । बरसात के मौसम । पानी कइएक जगह चढ़ के सड़क के छाती पर बइठ गइल रहे । बस रास्ता बदल के चलत रहीस । पटना खातिर एक दिन पहिलही हम चल देनी, डर रहे कि समय पर ना पहुँचला पर साहब बेवजह जलील करी ।

पटना में मालूम भइल के साहब जीप दुर्घटना में बेहोश होके दिल्ली गइल बाड़न । दू-तीन दिन पटना में रहलो पर हम आफिस में ना जा सकल रहीं । सर्दी, खाँसी, देहदर्द आ बुखार हमरा के पटक देले रहे । लोग देहात से पटना आवेला दवा करावे खातिर आ हम पटना में रहके कवनो डाक्टर के पास ना जा सकनी । इहां महिना मिलल ना, राह खर्च जे लेके आइल रहीं ओह में से डाक्टर के फीस होइयो जाइत तब दवा कहां से खरीदतीं ? साहब के लास आ रहल बिया, दू-तीन दिन तक सुनात रहल बाकिर हवाई जहाज में जगह ना मिलला के चलते लास आवे में देर होत रहे ।

मन तनी ठीक बुझाइल तब आरा लौट अइनी ।

एक महीना अउर बीत गइल ।

"केहू नया साहब आइल कि ना ? कब मिटिंग होई ?" पता करे खातिर आफिस गइला पर अपना दरखास के बारे में पता कइनी । किरानी संचिका में लिखल आपन टिप्पणी आ प्रारुप देखावत कहलस । "हम त दोसरे दिन उपस्थित कइले रहीं। साहब पढ़ के दस्तखत करे जात रहन कि उहां बइठल एगो आदमी उठ के उनका कान में कुछ कहलस आ ऊ ना कइले। कहले "कर देब । कहब तब ले अइह, धर ।" तब हम का करितीं? धर देले बानी ।"

ऊ आदमी के रहे ? ओकरा हमरा से कवन बैर बा ? .....ना, ऊ कवनो बैरी ना रहे, हमार दोस्त रहे, बाकिर सरकारी नौकर, जेकर नजर हमेशा अपना स्वार्थ पर रहेले, रहे । ओकरा अंदर के आदमी मर गइल बा । ऊ दोसरा के तकलीफ के महसूस ना कर सके । ओकरा चापलुसी करके, चुगली के आदत जे पड़ गइल बा ।

भोजपुरी कथा-कहानी, पटना

www.bhojpurisahityangan.com

मुरवौटावाला

हम अपना दिल के आवाज के साथ कंधा से कंधा मिला के खड़ा हो गइनी। ओकरा "हाँ" में "हाँ" मिला देनी। आपन अधिकार मिले में विलम्ब होत देख के हमरा देह में आग लाग गइल। हमरा भीतरे केहू बोलल, "उठ। इहवाँ से हट जा।" हमरा भीतर अजीब घबराहट के दबाव पल-पल पर बढ़े लागल। हम कवनो बलाडर होखीं आ हमरा भीतर भरत हवा दबाव बढ़ावत होखे। ब्रस्ट कर जाये के संभावना देख कर के उठ के चल देनी। असाधारण आदमी साधारण बन के ढेर दिन तक ना रह सके। चाहे कतनो नाटक करे। जे भइल रहे से बिलकुल अप्रयासित होखे से ना कहल जा सके बाकिर हमरा भीतर तनिको सा जे विश्वास के भगजोगनी भुक-भाक करत रहे ओकरा के केहू अपना मुट्ठी में बंद कर लेले रहे आ हमरा भीतर के आवाज बहराइल रहे- "ठीक बा। जतना देर करे के बा करीं ताकि कवनो अफसोस ना रह जाय।" प्रखंड कार्यालय से निकल के अंचल कार्यालय में चल गइनी।

चाय पीयत सीवो से आपन संका सुनवनी। ऊ कहले, "अइसन उमीद ना रहे। हम आइल रहीं तब ओही दिन प्रभार मिल गइल रहे। अफिसर अस काम नइखन करत।"

आवास तरफ बढ़ के लौट गइल रहीं। जाके बीडियो से कहले रहीं, "हम आवास पर जात बानी। आज हो जाई न ?"

अँगुरी से धिरावत ऊ बोलले, "जहाँ मन करे जाईं बाकिर बात ठीक से करीं ना त ठीक ना होई।"

"काहे ठीक ना होई। कवनो हम अपना मने आइल बानी कि रउवा कहे से हम चल जाइब। सरकारी आदेश पर आयुक्तो के आदेश मिल चुकल बा। रउवा त कहत रहीं कि लोग मौखिको आदेश दे दी तब हम आधा घंटा के अंदर प्रभार दे देब। रउवा बोलवला पर आइल बानी। चार दिन से नाटक का करत रहीं पहिलहीं साफ साफ कह देवे के चाहत रहे।"

"ठीक बा; ना देब। रउवा जहाँ जाये के होखे जाईं।"

"जाइब कहाँ ? हम डीसी से बात करत बानी।" कहत बइठ गइनी आ फोन उठा के डाइरेक्टरी के तरफ हाथ बढ़वनी।

"करीं। कर लीं फोन। .....आ.....नम्बर ह।"

हम डाइरेक्टरी तरफ बढल हाथ डायल पर ले गइलीं।

"फ़ोन का करत बानी ? चलीं। हमहूँ चलत बानी।"

"ठीक बा, चलीं।" फोन रख देनी।

हम कुछ देर रूकल रहीं आ उनका के जात ना देख के कक्ष से बाहर चल गइल रहीं।

नाजिर, सुपरवाइजर, अन्य उपस्थित मुखिया से पूछले रहीं, "का करीं ?"

लोग कहल, "आवास पर चलीं। पूछ के खबर कइल जाई।"

आवास पर कुछ लोग के साथ आइल रहीं। बात बदले खातिर जान

www.bhojpurisahityangan.com

बूझ के ओह लोग के साथ साहित्यिक चर्चा करे लागल रहीं ।

बाद में डाक्टर आके बतवले रहन, "चार दिन प्रभार ना होई । "

"आदमी कतना गिर गइल ? पहिले कहत रहे, रघुकुल रीत सदा चली आई, प्राण जाय पर बचन न जाई । "

"तबे नू कहा रहल बा, मुख में राम बगल में छूरी, अवसर पाईं त काटीं मूड़ी ।"

"ई त बिस रस भरल कनकघट निकसले ।"

"आज काल लोग मुखौटा न लगा लेत बा । मुखौटा बदलत कवनो देर ना लागे ।"

जतना मुँह ओतने बात ।

मन में आइल कि डीसी से मिलें के चाहीं । जात रहीं तब हमरा भीतरे केहू फुसफुसाइल, "पहिले एसडीवो से मिलल ठीक होई । डीसी से मिलला पर ऊ एसडीवो से मिले के कह दिहें । सीधे कुछ ना करिहें तब एसडीवो फील कर सकत बाड़न कि पहिले काहे ना कहले रह ? " भीतर फुसफुसात आदमी हमरा से पूछलस, "तोहरा के नजरअंदाज कर के केहू बड़ पदाधिकारी से बात करेला तब तोहरा नीक लागेला ?" ऊ फिर कहलस, "अपने अस दोसरो के बुझे के चाही । "

सीवो के आवास पर चल गइनी ताकि उनकर जीप ले सकीं । सीवो से कहनी, "रउवो भोजपुरिया हईं । हमहू हईं । जानते बानी कि सामने के अनेत ना सहाय । ऊ अँगुरी देखा के ना धिरइते तब हम कुछ ना कहतीं ।" ऊ राय देलन– "रउवा आवास पर जाके दू दिन चुपचाप रहीं । हम सांझ के बात करब ।"

हम उनका साथे उनका कार्यालय में जात रहीं तब सामने से आवत नाजिर मिलले, सीवो के उनका साथ छोड़ के बढ़ गइनी ।

अपना कक्ष में बइठला के बाद सीवो कहले, "नाजिर से बात कइनी हाँ । आज प्रभार ना होई । रउवा आवास पर जाईं । काल्ह जरूर हो जाई ।"

आवास पर अइला पर लोग आवत–जात रहल । केहू कहल, " इहो आइल रहन तब महिना दिन के बाद प्रभार मिलल रहे । "

"हमरा से ऊ बदला लिहें का ? "

"रउवा से काहे लिहें ? हम त एगो बात कहलीं हा ।"

"कहाउत झूठ ना ह कि सास भुला जाले कि ऊ कबों बहू रहे ।"

सब लोग हुंकारी भरल आ ओह लोग के मुंह से हंसी के गवरइया निकल निकल के चहके लगलिस ।

सब लोग चल गइल तब पत्रिका पढ़े लगनी । पढ़ते–पढ़त कहानी लिखे के ताव जागल । हम कागज–कलम लेके बइठ गइनी । मन में सुनाइल, "अबहीं मत लिखीं । केहू आ जाई ।" फिर ओकर जबाबो गुंजल, "आ जाई त का होई ? लिखल बंद कर देल जाई । बाद में लिखाई ।"

लोग आवत–जात रहल आ कहानी एक पंक्ति से आगे ना बढ़ल ।

लोग के कहनाम रहे, "राउर दोष नइखे । रउवा त चार दिन से चुपचाप बानी । ऊ जान बूझ के देर कर रहल बाड़न ।"

"जब से बदली भइल बा सब केहू से कहत रहन, हमरा प्रभार देवे में देर ना लागी । सब कुछ तैयार बा ।"

www.bhojpurisahityangan.com

"इहे कहल जाला, कथनो मीठी खाढ़ सी, करनो विष की लोय ।"
हम कहत रहीं, "हमरा बदली के आदेश पहिले अस ना निकसल रहे । हर एक दू आदमी के अलग-अलग रहे । सरकार आदेश के हमरी पास ना भेज के जिलाधिशन के पास भेजे देले रहे आ अनुपालनो के भार ओही लोगन पर डलले रहे ।

हमार कलक्टर अपना आवास पर बोला के सब बदलल अफिसरन के अपना आदेश के साथे साथ सरकारी आदेश थम्हा देले रहन ।

आदेशानुसार सात तारीख के नया जगह पर चल जाये के रहे बाकिर 6 तक बकरीद डियटी करे के रहे । एक आदमी बोलल, "दू दिन समय देल जाय ।"

'काहे खातिर ?"

"तैयारी खातिर ।"

"कवनो युद्ध पर जाये के बा । ई सब ना ।"

"नया अफिसरन के अइला पर लोग जाइत ।" उविआ कहले । उन्हको बदली भइल बिया ।

"ना उचित ना होई । सरकारी आदेश हम ना मानब आ हमार आदेश रउवा सभे ना मानब, ई अनुशासनहीनता होई ।" जिलाधीश कहले । फिर का कहे-सुने के रह गइल रहे । सब आदमी उठ-उठ के चल आइल ।

बकरीद डिउटी के चलते हम आपन स्थान ना छोड़ सकत रहीं । नया स्थान के बीडियो से बात करे खातिर कृषि पदाधिकारी के भेजले रहीं । उ रात में ॰ीगत अइले आ कहले, "भेंट भइल रहे । उहां के प्रभार देवे खातिर तैयार बानी । गइला पर उहां के आधा घंटा के अंदरे प्रभार दे देब । उहां के डी. सी. आदेश नइखन कइले। इहां वाला रख लेनी हाँ ।"

बहुत सामान पैक कर देनी । सात के सीवो से पूछनी, "प्रभार लेब । कैश बुक तैयार नइखे । जानते बानी कि नाजिर फरार बा ।" "अधूरा कैश बुक के रहते के प्रभार ली ?" उनकर सवाल रहे ।

दोसर दिन नजदीकी रास्ता बंद रहलो पर दूर के रास्ता से नया स्थान पर गइनी। मिलला पर कहले, "हम जिलाधीश या उबिआ के आदेश के बादे प्रभार देब, भले ऊ मौखिके होखे ।"

एस. डी. वो. ना रहन । उविआ कहले, 'एगारह के बाद मिली ।"

दोसरा दिन जिलाधीश के कहनाम रहे, 'हम कुछ सोच रहल बानी । रउवा कुछ दिन बाद भेंट करब ।"

"बारह के हमनी के जिला पर बैठक रहे । हम सब बात लिखित दे देनी आ मौखिको जिलाधीस के कहनी । ऊ ठीक बा" कह के बात के बरत चिराग बुझा देले ।

अनुमंडल में मुखियन के कार्य के समीक्षा होखला । सांझ खा हम जिलाधीश से पूछनी, 'का करीं ? मन डंवाडोल भइल रहत बा ।'

"जब तक केहू नइखे आवत, ठाट से रहीं ।"

जिलाधीस के जवाब सुन के फूल अस मुस्कात, गवरइयां अस चहकत आ केवड़ा के गंध अस पसरत - उड़त अपना आवास पर आइल रहीं ।

"प्रभार देवे खातिर फिर कवनो चिट्ठी आइल बा का ?"

नव बजे रात खा पंद्रह अगस्त के एगो लइका पूछलस ।

www.bhojpurisahityangan.com

''ना हमरा मालूम नइखे । केहू कुछ कहत रहे का ?'' हम पूछनी ।

''दुपहरिया में पंचायत भवन के उद्घाटन के समय बगल के ब्लॉक के बीडियो आइल रहन आ एम. पी. से पूछत रहन, अब हमार का होई ? कवनो कागज देखावत रहन । एम. पी. कहत रहन, ''हम का कहीं? हम त अपने बांह के घाव से फेरा में पड़ गइल बानी । एकरे मारे दिल्ली ना गइनी हाँ ।''

होत भोर, सोलह के, जिला के बेतार संवाद मिलल । आदेश रहे ओही दिन प्रभार दे देवे के । ओही में सीवो के आदेश रहे सतरह के प्रभार एजुम कर लेवे के ।

आधा घंटा के अंदर तैयार होके हम एहिजा खातिर चल देले रहीं । बाजार में एक आदमी जीप रोकवा के इनकर पत्र देले रहे । ई लिखले रहन बीस के आइब । उन्नीस के इहाँ के आदमी भेज के खबर कइनी कि बीस ना बाइस के आईं । हम लिख के खबर कइले रहीं कि बीस के आइब आ आइल रहीं तब इंहा के कहले रहीं, ''बाइस के भोर में प्रभार दे देब । ''

बाइसो आइल । एक्कीस के अपना नया जगह के प्रभार ले लेले तबो बाइस के ना दिहले गप्प आ बैठकबाजी में बिता देले । कहत रहन कि तेइस के बाइसे के तिथि में दे देब । हम कतनों अनुनय-विनय कइनी बाकिर एह उकठल काठ पर हमरा आँसू के असर ना भइल ।

आज कार्यालय में एगारह बजे जाके बूढ़, थाकल, भुखाइल, रोगी, जंगली गिरगिट अस गते-गते सरके लगले ।

भोरे उहां के सीवो आइल रहन । हमरा आपन ड्राइवरो आइल रहन । ओह लोग के सब बात बतला के एक दू दिन बाद जाये के वादा कर के लौटा देले, रहीं ।

रात डेगा डेगी देवे लागल रहे । हम अपना आवास में रहीं । एक द आदमी आउरो रहे । प्रखंड के ड्राइवर आइल तब मालूम भइल कि एस०डी०ओ० साहब बुलावत बानी ।

तुरंत तैयार होके, सीवो के साथे लेके एस० डी० वो० निवास पर गइनी । बीडियो उहवे रहन । फालतू लोग के हटला पर एस०डी०वो० साहब कहले, ''प्रभार ना मिलत रहे तब रउवा हमरा पास न आवे के चाहत रहे । ''

हम बोले के चहनी बाकिर ऊ सुने खातिर खाली ना रहन अपने सुनावे में लागल रहन तब हम चुप रह गइनी । बाद में सुना देनी कि आठ जुलाई के आइल रहीं तब रउवा मुख्यालय में ना रहीं आ आज आवत रहीं तब सीवो साहब रोक देले रहन, काल्ह इनका साथे रउवा से मिलतीं ।

''देखीं । हम झूठ ना बोलब । पहिले रउवा के इहंवा राखे के राय ना रहे बाकिर बाद में इनके के इहां से हटावे के तय कइल गइल; राउर जीत कहल जाई ।

हमा सुमां के बात छोड़ीं । कवनों बात के गाँठ बांह के राखल ना चाहीं जा बाकिर भा०प्र० से० के ना जानत होखीं तब जान लीं । ऊ कवनों बात के गांठ बान्ह लेलनस । अइसन छोट-छोट बात डीसी तक पहुंची तब बुरा मान जइहें ।

हम कुछ कहल चहनी तब ऊ पूछले, ''कहीं, कब प्रभार लेल चाहत बानी?''

''हम का कहीं? हमरा कुछ नइखे कहे के । उनके से पूछीं, कब

www.bhojpurisahityangan.com

दिहें ? रउवा जे कहब हम उहे करब ।''

''ठीक त कहत बानी । रउवा कहीं ।'' बीडियो से पूछले ।

''हम त लिख के दे देले बानी कि हम मंगर के प्रभार देब ।''

''एस०डी०वो० के सामने टेबल पर धइल एगो कागज के देखते आ ओकरा तरफ हाथ से इसारा करत बीडियो कहले ।

''लिखल छोड़ीं । हम एह सब में नइखीं पडल चाहत । हम खाली अतने जानल चाहत बानी कि पहिले प्रभार ना दे सकीं ?''

''तैयार त एक दू दिन में हो जाई बाकिर एतवार हो जात बा । सोमवार के दे सकत बानी ।''

एस०डी०वो० जिलाधीस से फोन पर बात कइले आ उनकर स्वीकृति लेके कहले, '' ठीक बा जी । रवा सोम के साँझ या मंगर के सुबह में प्रभार ले लेब । राउर कवनो दिक्कत ? ''

''ना कुछ ना । रउवा जे कहब हम उहे करब । ''

हमरा बदली पर मंडरात प्रेत छाया के एक पाँख त ओही दिन झर गइल रहे जेह दिन जिलाधीस के आदेश भइल रहे आ आज ओकर दोसरको पाँख लहू लुहान हो गइल एस०डी०वो० के आदेश से बाकिर हमरा बुझात बा कि प्रेत पंजा से पकड़ले चोंच से हमरा बदली के आदेश के नोंचत होखे ।

अहरिया के कोख से जनमे वाला भोर के इंतजार रातो करेले । हमरो विश्वास बा कि ई कुहरा छँटी । एकरा के चिरेवाली प्रकाश किरण आ उड़ा ले जाये वाली हवा आई । हो सकेला कि हमरा कुछ संघर्ष करे पड़े । पड़ी त पड़ी । हमरा भागे के नइखे । हमहूं कमर कस के तैयार बानी । दोसर कवनो राहो नइखे ।

केहू कहले रहे, ''एह विकाइल जजन से सांच के पक्ष में फैसला के आशा रउवी बेकार करत बानी ।''

तब हम कहले रहीं, ''अंग्रेज केहू के मीत ना होखे, कहाउत ह । ओसही रउरा जान जाईं कि भा० प्र० से० केहू के दोस्त ना होखे । ऊ पाटी ना बने ।'' खाँसी आ गइल रहे आ रूक के फिर कहले रहीं- ऊ लोग कुर्सी पर बा । ऊ लोग नाहियों बोली तब कुर्सी बोली । हमरा देश में कानून के सासन बा । ऊ लोग कानूनदा ठहरल । ऊ लोग गलत करी; हम ना मानब । ''

''रउवा सोम के सांझ के या मंगल के भोर में प्रभार जरूर दे देब बाकिर अब रामपुर के गाड़ी मंगवा लिहीं आ इहाँ के इहवाँ के गाड़ी दे दीं । आदमी के दोसरो के दिक्कत बुझे के चाहीं ।''

बीडियो से कहत एस०डी०वो० हमनी के विदा करे चललन तब हम खुसी-खुसी हाथ मिलवनी आ प्रनाम कर के चल देनी ।

हमर भलमनसाहत, भीरूता, भावुकता, संवेदनसीलता, कानून से डरेवाली दृष्टि सामने वाला के भीतर के सच्चाई के परखे, ओकरा बात के असलियत के समझे-बुझे में बराबर धोखा खा जाले ।

कबो-कबो महसूस होत बा कि हमरा के टरकावल जा रहल बा । हमार बदली रद्द करावे वाला के समय देल जा रहल बा । ई सांच नाहियों हो सके । अनुमान पर केहू कहवाँ-कहवाँ धाई ? भुवा के समुद्र में तैरे से, हवा में हाथ मारे से थकावट के छोड़ आउर का मिली ?

● —*भोजपुरी कथा कहानी, पटना*

www.bhojpurisahityangan.com

पावती पुस्तकन के

- भोजपुरी व्याकरण के रूपरेखा - विन्ध्याचल प्रसाद श्रीवास्तव, लोक भारती प्रकाशन, सुगोली (पूर्वी चम्पारण), बिहार, पहिला सस्करण 1999, छात्रोपयोगी नीमन किताब, मूल्य - 75 रुपया ।
- गाँव के भीतर गाँव (कहानी संग्रह) - डॉ० अशोक द्विवेदी, भोजपुरी संस्थान, पटना। समकालीन भोजपुरी कहानियन के एगो मानक प्रकाशन । मूल्य 50 रुपया ।
- वसन्त फेरू बहुरल - 21 भोजपुरी कहानियन के संग्रह, सम्पादक - भगवान सिंह 'भास्कर', पृष्ठ संख्या - 94, प्रकाशक - भास्कर साहित्य भारती, लखराँव, सिवान (बिहार), मूल्य - 40 रुपया ।
- सोनहुला सफर (यात्रा - वृत्तान्त) - भगवान सिंह भास्कर, भोजपुरी संस्थान, पटना, मूल्य 45 - रुपया ।
- सोच - विचार (निबन्ध संग्रह) - नागेन्द्र प्रसाद सिंह, लोग प्रकाशन, नया टोला, पटना - 4, मूल्य - 75 रुपया ।
- समकालीन भोजपुरी कहानियाँ - संपादक - कृष्णानन्द कृष्ण, भोजपुरी के चुनल 13 कहानियन के हिन्दी रुपान्तरण । अपना ढग के पहिल प्रयास। प्रकाशक - पुनः प्रकाशन, कंकड़बाग, पटना - 20, पृष्ठ संख्या - 88, मूल्य 50 रुपया ।
- नइया बीच भँवर में - करुणा निधान केशव के निबन्ध संग्रह, भोजपुरी संस्थान इन्द्रपुरी, पटना - 24, मूल्य - 20 रुपया ।
- भोजपुरी ईश उपनिषद - हीरालाल अमृतपुत्र, प्रकाशक - शुभा प्रकाशन, अमृतायन, चरिहारा, पो० मशरक जिला - सारण, मूल्य - 15 रुपया ।
- विश्वामित्र (प्रबन्धकाव्य) - अमर सिंह, भोज प्रकाशन, पूर्वी रमना रोड, आरा। मूल्य - 55 रुपया ।
- लोक संस्कृति एगो झांकी - डॉ० राजेश्वरी शांडिल्य, भोजपुरी संस्थान, इन्द्रपुरी, पटना - 24, पृष्ठ संख्या 208 मूल्य - 150 रुपया ।
- श्री नागेन्द्र प्रसाद सिंह के सोच - विचार पर बात विचार (समीक्षा) सम्पादक: जगन्नाथ, लोग प्रकाशन, जय दुर्गा प्रेस परिसर, नया टोला, पटना - 4, पृष्ठ संख्या 96, मूल्य 60 रुपया ।
- बीनल बीछल (गीता संग्रह) - शिवपूजन लाल विद्यार्थी, नीलम प्रकाशन, शीतल टोला, आरा, पृष्ठ 94, मूल्य 25 रु० ।
- हरि अर्जुन के बात (गीत भोजपुरी काव्य में) - हीरा लाल अमृतपुत्र, शुभ प्रकाशन, चरिहारा, पो० मशरक, जिला - सारण (बिहार), पृष्ठ संख्या - 244, मूल्य 70 रुपया

अपना ढंग के अनूठा प्रकाशन

1. गाँव बहुते गरम बा (कहानी संग्रह) - कृष्णानन्द कृष्ण
2. प्रश्नचिन्ह (कहानी संग्रह) - सूर्यदेव पाठक पराग
3. कथाकार कृष्णानन्द कृष्ण - सं० प्रो० ब्रजकिशोर
4. पराग के रचना संसार - सं० प्रो० ब्रजकिशोर, जीतेन्द्र वर्मा
5. कारगिल आ ओकर सबक - महिला लोगन के लिखल सामयिक निबन्धन के पहिला संकलन - संपादक: रूपश्री

भोजपुरी साहित्य संस्थान

श्रीभवन, महम्मदपुर लेन, महेन्द्रू

पटना - 800006

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी साहित्य संस्थान के प्रकाशन

● कविता संग्रह

1. जोत कुहासा के/प्रो० ब्रजकिशोर
2. लहर लहर में सावन/डॉ० बसन्त कुमार
3. जनता के पोखरा/डॉ० विवेकी राय
4. बूँद भर सावन/प्रो० ब्रजकिशोर
5. मन/चिन्तन प्रधान कविता संग्रह/दीप्ति

● कहानी संग्रह

6. धुआँ/प्रो० ब्रजकिशोर
7. जिनगी के परछाहीं/रूपश्री
8. खोंता से बिछुड़ल पंछी/महिला कथाकरन के कहानी संग्रह/सं० रूपश्री
9. सेसर कहानी भोजपुरी के (51 कहानियन के संग्रह)/सं० प्रो० ब्रजकिशोर
10. लहर के बोल (हास्य-व्यंग्य के कहानियन के संग्रह)/सं० प्रो० ब्रजकिशोर
11. कथा सरोवर (दू भाग में कहानियन के संग्रह)/प्रो० ब्रजकिशोर
12. गाँव बहुते गरम बा/कृष्णानन्द कृष्ण
13. प्रश्नचिन्ह/सूर्यदेव पाठक 'पराग'
14. बेगुनाह/चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह
15. टुकी टुकी जिनगी (लघुकथा संग्रह)/सं० प्रो० ब्रजकिशोर भगवती प्रसाद द्विवेदी
16. कथुली गाँव/डॉ० विवेकी राय

● उपन्यास

17. सुन्नर काका/प्राध्यापक अचल
18. भोर मुसकाइल/विक्रमा प्रसाद
19. फुलमतिया/योगेन्द्र प्रसाद सिंह
20. दरद के डहर/भगवती प्रसाद द्विवेदी
21. का लिखीं/डॉ० ऊषाकर
22. मुट्ठी भर सुख (उपन्यासिका)/विक्रमा प्रसाद

● निबन्ध संग्रह

23. बात क बात/आचार्य कुलदीप नारायण 'झड़प'
24. मन के दरपन बोले (समीक्षा)/सं० राजवल्लभ सिंह
25. बचपन मोरारजी देसाई के (जीवनी)/राजवल्लभ सिंह
26. कथाकार कृष्णानन्द कृष्ण (समीक्षा)/सं० प्रो० ब्रजकिशोर
27. पराग के रचना संसार (समीक्षा)/सं० प्रो० ब्रजकिशोर, जीतेन्द्र वर्मा
28. कारगिल आ ओकर सबक (निबन्ध संग्रह)/सं० रूपश्री
29. एकइसवीं सदी में भोजपुरी/सं० नागेन्द्र प्र० सिंह, प्रो० ब्रजकिशोर, कृष्णानन्द कृष्ण
30. जन्म सिद्ध सन्त दुनिया राम बाबा (जीवनी)/प्रो० ब्रजकिशोर
31. गृहस्थ कवि राम सेवक (समीक्षा)/प्रो० ब्रजकिशोर

● शीघ्र प्रकाश्य

32. श्री विष्णुपुराण/प्रो० ब्रजकिशोर
33. डॉ० विवेकी राय: व्यक्तित्व आ कृतित्व/सं० डॉ० आंजनेय, प्रो० ब्रजकिशोर
34. मूरत माटी के (संस्मरणात्मक कहानी संग्रह)/प्रो० ब्रजकिशोर
35. पुरान कथा/प्रो० ब्रजकिशोर
36. बिखड़ल खोंता (कहानी संग्रह)/प्रो० ब्रजकिशोर
37. कहानी संग्रह/रूपश्री

भोजपुरी कथा कहानी (कहानी पत्रिका)/संपादक: प्रो० ब्रजकिशोर

प्रकाशक :

भोजपुरी साहित्य संस्थान

श्रीभवन, महम्मदपपुर लेन, महेन्द्रू, पटना - 800 006